राजन-इक़बाल
No. 5
पिछले जन्म में
शुभानन्द

कौन हो तुम? पहले मिले हैं हम कभी

लगता है जैसे, वाकिफ हूँ तुमसे

दिल के राज न छुपे हैं तुमसे

मेरा ही अक्स दिखता है

आइना सामने हो जैसे

फिर भी नहीं पहचानता

क्या हम मिले हैं कभी?

दिल की गहराइयों से

मेरी परछाइयों से

जान रहा हूँ तुम्हें

मिले है ज़रूर हम कभी

तुम ही बतलाओ इस जन्म में

या पिछले जन्म में, पिछले जन्म में

इसी जन्म में

हॉस्पिटल के ICU में गहन सन्नाटा था।

मरीज़ आँखें मूंदे पलंग पर लेटा हुआ था। ड्रिप के ज़रिये सेलाइन उसके रक्त में पहुंच रहा था। मोनिटर पर द्रष्टि डाले खड़ी महिला डॉक्टर के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं।

"आप कुछ बोलती क्यों नहीं, डॉक्टर शर्मा?" पास खड़ी शोभा ने पूछा। उसके चेहरे पर चिंता के भाव थे। लग रहा था जैसे अभी रो पड़ेगी।

"मुझे डर है- पेशेंट कोमा में जा चुका है।" ईईजी की स्क्रीन पर नज़र डालते हुए उसने जवाब दिया।

"क...क्या?" शोभा के मुख से चीख निकल गई- "न...नहीं...राजी! लेकिन क्यों? अभी तो आपने कहा था- ये होश में आ जायेगा।"

"मुझे भी आश्चर्य हो रहा है। MRI में दिमाग पर कोई नुकसान तो नहीं दिखा था।" शर्मा राजन को ध्यान से देखते हुए बोली- "पर लगता है- एक्सीडेंट का दिमाग पर असर ज़रूर पड़ा है। मुझे कुछ और टेस्ट..."

अचानक पीछे से आई आवाज़ ने उसे चौका दिया।

उसने मुडकर देखा- शोभा बेहोश होकर गिर चुकी थी।

"नर्स!" वह गला फाड़कर चिल्लाई।

नर्स कुछ ही पल बाद प्रकट हुई। साथ ही बगल के ICU से सलमा वहां पहुंची। उसकी आँखे इस तरह सूजी हुई थीं, जैसे घंटो तक रोई हो। उसने हैरानी से मूर्छित शोभा की तरफ देखा।

"क्या हुआ?" उसने डॉक्टर से पूछा।

"बुरी खबर है। इक़बाल के बाद अब राजन भी कोमा में चला गया।"

"व्हाट!" सलमा बुरी तरह से बौखला गई। फिर उसे शोभा की बेहोशी की वजह समझ में आई।

नर्स और डॉक्टर ने मिलकर शोभा को साइड में लगे एक बैड पर लेटा दिया था।

सलमा हैरानी से राजन की तरफ देख रही थी।

Acknowledgements

I'd like to thank all my readers, supporters, parents, friends

and

mostly my lovely wife

for always supporting my passion for writing with their ideas, praises and constructive criticism

1

"स्वतंत्रता दिवस मुबारक हो...भारत आजाद हो गया। भारत आजाद हो गया।" नन्हा राजीव भारत का झंडा लिए लखनऊ की गलियों में दौड़ रहा था। उसके शरीर पर सिर्फ एक बनियान और हाफ पैंट थी। बाल बिखरे हुए थे, शरीर पर धूल लगी थी। मात्र सात साल का था वो। पर चेहरे पर जुनून किसी क्रान्तिकारी की भांति था।

सभी हैरानी से उसे देख रहे थे। हालाँकि आजादी की खुशी तो आज सभी भारतवासी मना रहे थे। आख़िरकार अंग्रेजों के चंगुल से वे लोग आजाद हो चुके थे।

राजीव दौड़ते हुए एक चौराहे पर पहुंचा। वहां पहले से कई लोग जश्न मना रहे थे। सभी के शरीर पर सफ़ेद कुर्ते-पायजामे थे। सिर पर टोपी थी। उनके हाथों में बड़े-बड़े झंडे थे।

"हम आजाद है!" राजीव चिल्लाया।

सबने आश्चर्य से उस जुनूनी बच्चे को देखा, फिर उनमे से एक ने खुशी के साथ उसे अपने कन्धों पर बैठा लिया और वे लोग नाचने लगे।

कुछ देर बाद उनका जश्न खत्म हुआ और राजीव वापस अपने घर की तरफ चल दिया। उसके चेहरे पर अभी-भी खुशी की चमक थी।

अभी वो अपने घर के दरवाजे के अंदर पाँव रखने ही वाला था, कि बाहर से एक सीटी की आवाज़ आई। उसने चौंककर पीछे देखा।

"राजू!" अंदर से राजीव की माँ शारदा की आवाज़ आई- "कहाँ घूम रहा है तू?"

"कुछ नहीं माँ! मैं अभी आया..."

"अरे! सुन... अब कहाँ जा रहा है? खाना तो खा ले..."

पर राजीव तेजी से बाहर निकल गया।

उसने देखा गली के दूसरी ओर एक बच्चा बिजली के खम्बे से सटकर खड़ा था।

उसने पैंट शर्ट पहन रखी थी। हाथों में कंचे की गोलियाँ थीं, जिन्हें वो रगड़-रगड़कर अजीब-सी आवाज़ निकाल रहा था। उसके चेहरे पर शरारती मुस्कान थी।

"राजीव भाई! झंडा लेकर कहाँ घूम रहे हो?" उसने पूछा।

"क्यों रे अहसान?" राजीव गली पार करके उसके निकट पहुंचा- "तुझे पता नहीं है- आज भारत आजाद हो गया है? हमारा पहला स्वतंत्रता दिवस है आज?"

"कल रात को ही सुन लिया था रेडियो पर। उसके बाद अब्बू भी तेरी तरह नाच रहे थे। आजाद तो होना ही था। अब क्या सारा दिन नाचोगे? चलो एक खेल हो जाए?"

"तू पागल है क्या? अपने देश के आज़ाद होने की तुझे जरा भी खुशी नहीं हो रही?"

"हो रही है। पर अब और क्या करें? कंचे खेलते हैं और खुशी को बढ़ाते हैं।"

"मुझे नहीं खेलना।" राजीव गुस्से-से बोला।

"हारने से डर रहे हो भाईजान?"

"गुल्ली-डंडा खेल फिर बताता हूँ।"

"माना- आप गुल्ली-डंडा में चैम्पियन हो। पर असली खेल तो कंचे का है। इसको खेलने के लिए तेज़ दिमाग और पैनी निगाहें दोनों चाहिए।"

"तू मुझे चुनौती दे रहा है?" राजीव कमर पर हाथ रखकर बोला।

"मैं तो लेन-देन में विश्वास ही नहीं रखता, भाई।"

"चल फिर, हो जाए दो-दो हाथ।" राजीव ने कहा और उसकी बांह खींचते हुए एक तरफ बढ़ गया।

"भाई! कुश्ती लड़ने तो नहीं जा रहे न हम?" अहसान डरते हुए बोला।

"डर मत।" राजीव शरारत के साथ मुस्कराया।

"देखो-" अहसान ने चेतावनी दी- "अगर आपने मुझे पीटा तो मैं आपको अपनी शायरी सुना-सुनाकर बहरा कर दूँगा।"

"शायरी का नाम भी लिया तो जिंदा ज़मीन में गाड़ दूँगा।"

इस तरह दोनों बालक- राजीव और अहसान, कंचों के खेल में मशगूल हो गए।

दोनों पक्के दोस्त थे। एक हिंदू और दूसरा मुसलमान। पर बच्चे कहाँ धर्म और जाति की परवाह करते हैं। लखनऊ की गलियों में दोनों साथ-साथ खेलकर बड़े हो रहे थे।

राजीव के पिता कॉलेज में टीचर थे और अहसान के अब्बू हकीम थे। दोनों परिवार मध्यम वर्ग में आते थे और उनमे अच्छा मेल-मिलाप था।

आज भारत आज़ाद हुआ था। किन्तु आज़ादी बहुत बड़ी कीमत के साथ मिली थी। देश का विभाजन कर दिया गया। साथ मैं फ़ैल गई सांप्रदायिक हिंसा। हिंदू पाकिस्तान से जान बचाकर भागे और मुस्लमान हिन्दुस्तान से। अपने पुरखों का घर, ज़मीन-जायदात, नौकरी और व्यापार को जैसे-तैसे छोडकर भाग निकले थे लोग।

पर काफी लोग अपनी जगह पर डटे रहे। उन्हें अपने घर, शहर और दोस्तों को छोडकर जाना बेवकूफी लग रहा था।

अहसान का परिवार भी उन्ही में से एक था।

"मास्टर जी!" अहसान के अब्बू फारूख अख्तर ने राजीव के पिता बेनीलाल से कहा- "आपको क्या लगता है- हमने जो फैसला किया है वो ठीक है?"

"बिलकुल हकीम साहेब! ये क्या मूर्खता हुई, कि देश का विभाजन धर्म के हिसाब से हो? भारत जितना हिंदू और सिखों का है, उतना ही मुसलमानों का। आप क्यों किसी और देश जाओगे?"

फारूख मुस्करा दिए।

देश भर में हिंसा और धार्मिक दंगों का बोल-बाला था, पर उनका मोहल्ला किस्मत से इन चीजों से बचा रहा।

इधर देश विभाजन की पीड़ा से गुजर रहा था और दूसरी तरफ आज़ादी के दो महीने के अंदर ही कश्मीर के मुद्दे पर दोनों देशों में युद्ध शुरू हो गया।

राजीव कच्ची उम्र का एक बालक था, पर देश में हो रही हर घटना को उत्सुकता के साथ अखबारों में पढता था, रेडियो पर सुनता और अपने पिता के साथ चर्चा भी करता। स्कूल में उसके साथ के विद्यार्थी उससे कम ही बातें करते थे। उनका मानना था कि वो समय से पहले ही बड़ा हो गया है, और हर समय सिर्फ यही सब बेकार की बातें करता है।

अहसान का भी ख्याल कुछ ऐसा ही था, पर वो राजीव को ऐसा नहीं बोल सकता था। उसका सबसे प्रिय मित्र जो ठहरा। हालाँकि वो बातों बातों में उसका मजाक उड़ाता रहता था।

"देख लिया राजीव भाई?" लंच ब्रेक में खाना खाते हुए उसने कहा।

"क्या देखा?"

"जिस आजादी के लिए आप बंदर की तरह कूद-कूदकर नाच रहे थे, क्या अंजाम मिल रहा है उसका? दंगे, खून-खराबा और अब युद्ध।"

"हमारे देश के लोग बहुत भोले हैं- अहसान। इन्हें कोई भी आसानी से गुमराह कर देता है और अपने हिसाब से इस्तेमाल करता है।"

"अब जो होना है, वो तो होगा ही। उसे आप और मेरे जैसे लौंडे तो रोक नहीं सकते। आप मस्त पढाई करो और ऐश करो।"

"पढाई तो मैं करता ही हूँ। पर हमें अपने देश के बारे में भी सोचना चाहिए। हम लोग ही इसका भविष्य हैं। अगर हम-तुम अभी से ऐसी सोच रखेंगे तो आगे चलकर क्या होगा? हम लोगों में रही-सही एकता भी समाप्त हो जायेगी।"

"भाईजान?"

"हूँ?"

"आप ने कभी खुद को बोलते हुए सुना है?"

"म...मतलब?"

"मतलब ये कि कम से कम पच्चीस साल के मालूम पड़ते हो। अमा यार! हम बच्चे हैं।"

"मगर..."

"अब ये बकवास छोड़ो और मेरी एक फडकती हुई शायरी सुनो।" डिब्बा बंद करते हुए अहसान मूड में बोला- "सारा खाना हजम हो जायेगा। साथ में दिमाग से ऐसे बुरे-बुरे ख्याल भी जाते रहेंगे।"

"नहीं!" राजीव चीखा। पर अहसान कहाँ रुकने वाला था। वो शुरू हो गया-

"चाँद को गुरूर है, कि उसके पास नूर है

गौर फरमाइएगा-

चाँद को गुरूर है, कि उसके पास नूर है

इतना भी क्यों मगरूर है, हमें भी तो गुरूर है

नूर नहीं तो क्या हुआ, हमारा दोस्त लंगूर है।"

कहते हुए अहसान उठा और एक तरफ भाग लिया।

"रुक साले!" राजीव ने खींचकर डिब्बा उस पर दे मारा, पर वो साफ़ बच गया और जीभ दिखाते हुए बोला-

"कितने खट्टे हैं लंगूर...मेरा मतलब अंगूर।"

इस तरह दोनों दोस्त साथ-साथ बड़े होते चले गए। दोनों के मिजाज और शौक अलग-अलग थे, फिर भी दोनों एक दूसरे पर जान छिड़कते थे। किसी को ये बात समझ नहीं आती थी कि दोनों लड़के एकदम विपरीत व्यक्तित्व के होते हुए भी हमेशा साथ कैसे रहते हैं।

अहसान चंचल प्रवत्ति का था और राजीव गंभीर। अहसान आज में जीता था और हँसता-हँसाता रहता था बल्कि राजीव भविष्य के बारे में सोचता था, उसे देश के लिए कुछ करना था। वो अहसान को भी प्रेरित करने की कोशिश

करता था, पर वो उसकी बात हंसी में उड़ा देता था।

उस वक्त राजीव-अहसान मैट्रिक में थे, जब एक ऐसी घटना हुई जिसने दोनों दोस्तों को अलग कर दिया।

2

दोनों स्कूल से वापस लौट रहे थे। राजीव के पास साइकिल हुआ करती थी। वह चला रहा था और अहसान पीछे कैरियर पर बैठा था।

"भाई आज मौसम बड़ा सुहावना है।" अहसान बादलों की तरफ देखते हुए बोला।

"तो?"

"ऐसे मौसम में जवां दिलों में उमंगें उठने लगती हैं। दिमाग में नशा-सा चढ़ने लगता है।"

"मुझे तो ऐसा कुछ नहीं लग रहा।"

"ज़ाहिर है- मैं जवां लोगों की बात कर रहा था।"

"मतलब?" राजीव गुस्से-से घूमा।

"कुछ नहीं! कुछ नहीं! मेरी तो रबड़ की जुबान है, फिसल जाया करती है। आप सामने गौर फरमाइए- साइकिल के टायर भी रबड़ के हैं, कहीं फिसल न जांए।"

राजीव चुपचाप साइकिल चलाता रहा।

कुछ आगे जाकर उसने ब्रेक लगा दी।

"क्या हुआ? अभी तो दिल्ली दूर है जनाब।"

जब राजीव ने कोई जवाब नहीं दिया तो अहसान नीचे उतरा और उसके चेहरे को देखने लगा।

राजीव की द्रष्टि रोड के किनारे खेतों में स्थिर थी।

"कहाँ खो गए?"

"श...!" राजीव ने उसे चुप रहने का इशारा किया। अहसान बेवकूफों की तरह पलके झपकाकर खेतों में देखने लगा।

वहां झाडियों के बीच दो आदमी बातें करते नज़र आये।

"कौन हैं ये?" अहसान फुसफुसाया।

राजीव कुछ बोला नहीं, बल्कि अचानक ज़मीन पर लेट गया और फिर रेंगते हुए खेत की तरफ बढ़ गया।

अहसान उसकी ये हरकत देखकर बौखला गया। उसे कुछ और नहीं सूझा तो वो भी उसका अनुसरण करते हुए रेंगने लगा।

दोनों रोड के उस पार खेत में पहुंच गए। वहां उन्हें उन दो आदमियों का वार्तालाप सुनाई दिया-

"गिन लीजिए, दरोगा जी!"

"कैसी बात कर रहे हैं, सेठजी! आप लाये हैं, तो उसमे गलती कहाँ हो सकती है।"

"मेरा काम हो जायेगा न?"

"आप चिंता न करें। सबकुछ मेरे ऊपर छोड़ दें।"

"ठीक है! चलते हैं।"

उसके बाद दोनों के चलने की आवाज़ आई। राजीव ने सतर्कता से देखा- दोनों लोग विपरीत दिशा में खेत के अंदर ही चलते चले गए।

"ये क्या हरकत थी?" अहसान अपने मिट्टी लगे कपड़ों को झाड़ते हुए खड़ा हुआ। "सारे कपड़े गंदे हो गए। अम्मी दोनों कान उखाड़ देंगी।"

"सुना नहीं- वो लोग कौन थे?" राजीव रहस्यमय स्वर में बोला।

"खेत में मिलने वाले इंसान!" अहसान ने मूर्खों की भांति पलकें झपकाईं।

"बेवकूफ!" राजीव ने उसके सिर पर चपत लगाकर कहा- "वो अपने इलाके का दरोगा- रतन सिन्ह और सेठ धनीराम थे।"

"हुज़ूर! मुझे अपने इलाके की खूबसूरत नाज़नीनों के नाम तो पता है। दरोगा और सेठों का हिसाब तो शायद आपके पास ही हो।"

"तुम्हें दोनों की बातें संदिग्ध नहीं लगीं?"

"नहीं!"

"सेठ ने दरोगा को पैसे दिए हैं।"

"उधार रहा होगा।"

"उधार वापस करने कोई खेत में आता है? वो चोरी-छिपे यहां मिले हैं। इसी से पता चल रहा है कि सेठ ने दरोगा को कोई गलत काम करवाने के लिए पैसे दिए हैं।"

"हूँ!" अहसान गहरी सांस लेकर बोला- "मामला तो गंभीर है। अब घर चलें?" कहते हुए अहसान खेत से निकलकर साइकिल की तरफ बढ़ गया।

राजीव पीछे आते हुए बोला- "हमें कुछ करना चाहिए।"

"क्या करें? पुलिस को बता देते हैं...अर्र... दरोगा खुद ही पुलिस है। फिर किसे बताये?"

"हमें रतन सिन्ह पर नज़र रखनी होगी।" राजीव आँखों में अनोखी चमक के साथ बोला।

"क...क्या?" अहसान बौखला गया- "आपके ऊपरी माले में लगता है कुछ भारी गडबड हो गई है। पुलिस पर नज़र रखेंगे? उसे देखा भी है आपने? सांड है पूरा। उसे पता चल गया तो हमें ऐसी लात मारेगा की लखनऊ से सीधे लाहौर में जाकर गिरेंगे।"

"हमें भ्रष्ट लोगों से डरने की बिलकुल भी ज़रूरत नहीं है।" कहते हुए राजीव ने साइकिल संभाली। अहसान ने पीछे बैठते हुए कहा-

"पर हमें दूसरों के मामले में टांग क्यों अड़ानी है? और हम बच्चे पुलिस से मुकाबला नहीं कर पाएंगे।"

"हमारे महान देश में कोई कुकर्म करे तो हमें टांग अड़ाने का पूरा हक है। पुलिस से डरने की ज़रूरत नहीं है। वो जनता के नौकर हैं। वैसे भी, एक दरोगा भ्रष्ट हो सकता है, सारी पुलिस नहीं।"

अहसान ने अब कुछ और बोलना मुनासिब नहीं समझा।

3

राजीव ने साइकिल गली के एक कोने में रोक दी। शाम हो गई थी। काफी चहल-पहल थी।

"यहां कहाँ रोक दिया?" अहसान ने पूछा।

"पीछे आओ।" राजीव एक तरफ बढ़ गया।

फिर कुछ आगे जाकर वो गली के दूसरी तरफ एक घर की ओर देखने लगा।

घर में रौशनी थी। खिड़की खुली हुई थी। अंदर उन्हें दरोगा रतन सिन्ह नज़र आया। वो खाना खा रहा था।

"ये तो दरोगा का घर है।" अहसान बोला।

राजीव ने सिर हिलाया। नज़रें दरोगा पर गड़ी थीं।

"करना क्या चाहते हो?" अहसान ने बेचैनी से पूछा।

"उसके बाहर निकलने का इंतज़ार करते हैं।"

"और वो बाहर नहीं निकला तो?"

"तो हम घर चले जायेंगे।"

अहसान चुप हो गया।

कुछ देर में रतन सिन्ह खाना चुका था। उसकी बीवी उसे पानी देती हुई नज़र आई। फिर वह तैयार होकर बाहर निकला और एक बीड़ी सुलगा ली।

"ये तो बाहर आ गया।" अहसान निराश स्वर में बोला।

"अब हम इसका पीछा करेंगे।" राजीव ने कहा तो अहसान उछल पड़ा।

"मजाक बहुत हो गया भाई। घर चलो वरना आपकी और मेरी दोनों की अम्मी टांगे तोड़ देंगी।"

"उनकी चिंता छोड़ो।" राजीव ने दरोगा को देखते हुए कहा, वो एक तरफ पैदल निकल लिया था।

राजीव अहसान को खींचते हुए चल दिया।

गली-गली होते हुए लगभग दस मिनट बाद दरोगा एक घर के दरवाजे पर पहुंचा और खटखटाने लगा।

राजीव और अहसान पहले ही रुक गए और दूर से उसे देखने लगे।

फिर उन्हें दरवाजा खुलता दिखाई दिया और दरोगा अंदर प्रविष्ट हो गया।

राजीव अहसान के साथ दौडकर उस घर के पास पहुंचा और खिड़की के पास कान लगाकर खड़ा हो गया।

अंदर से एक बूढ़े आदमी की आवाज़ आ रही थी-

"कहिये दरोगा साहब, कैसे आना हुआ?"

"गिरधारीलाल जी! आप सेठ धनीराम को जानते हैं?"

"हा...हां!" गिरधारीलाल की कुछ घबराई हुई आवाज़ आई।

"उनका कहना है- आपने उनका उधार अभी तक चुकता नहीं किया।"

"क...क्या करूं? मैं अब रिटायर हो गया हूँ। पेंशन बहुत कम है। दवा पर खर्चा भी होता है। ज्यादा पैसा बच नहीं पाता।"

"अच्छा! समझ सकता हूँ। पर आपके घर के कागज सेठजी के पास पड़े हैं। उसी पर तो उधार लिया था आपने?"

"हां!"

"तो आप क्यों नहीं घर सेठजी को बेच देते और बचे पैसे लेकर उधार से मुक्त हो जाएं?"

"सेठजी ने मुझे बोला था। पर वो तो घर पांच सौ रुपये में खरीद रहे हैं। उधार भी पांच सौ का बचा है। फिर मेरे पास क्या बचेगा? और दरोगाजी, इस वक्त इस घर की कीमत दो हज़ार से हरगिज़ भी कम नहीं है...वैसे..."

"तो फिर सेठ के पांच सौ उसके मुंह पर मारकर अपने कागज क्यों नहीं छुडा लेते?"

"अगर मेरे पास पैसे होते तो..."

"नहीं है, तो फिर आपकी कौन सुनेगा?" दरोगा कुछ डांटते हुए बोला- "आपको घर खाली करना पड़ेगा...या पैसे देने होंगे। उसके अलावा कोई चारा नहीं है।"

"प...पर घर खाली करके मै...मै कहाँ जाऊँगा? और...और... "

"देखिये- सेठ के पास आपका दस्तखत किया अनुबंध है, उसके तहत वो घर पर कब्ज़ा कर सकता है, आप नहीं रोक सकते। प्यार से घर खाली कर दीजिए, नहीं तो मुझे आपको धक्के देकर निकालना पड़ेगा।" दरोगा ने कहा और भनभनाता हुआ बाहर निकल गया।

बाहर राजीव और अहसान जल्दी से झाडियों में छिप गए।

दरोगा के जाने के बाद उन्हें अंदर से गिरधारीलाल के रोने की आवाज़ आई।

"मेरा शक ठीक निकला।" राजीव बोला- "देखा तुमने ये दरोगा क्या कर रहा है? आम आदमी की मदद करने की बजाये उन्हें डरा-धमका रहा है।"

अहसान गुस्से से तमतमा रहा था। "वो भी एक बूढ़े-लाचार आदमी को...उसकी तो मैं मूछें नोच लूंगा।"

राजीव उसे जोश में देखकर मुस्कराया। "बस यहीं जोश देखना चाहता था, मैं तुझमे। हम लोग इन बाबा को दरोगा और सेठ के अत्याचार से बचायेंगे।"

"पर कैसे?"

"एक आइडिया तो है।" राजीव चुटकी बजाकर बोला।

4

दूसरे दिन राजीव और अहसान तबीयत खराब होने का बहाना बनाकर स्कूल से जल्दी ही निकल आये।

लौटते वक्त राजीव ने साइकिल खेत के पास रोक दी।

फिर वे लोग झाडियों में पहुंच गए। राजीव ने अपना बैग खोला। उसमे काफी सामान था- काजल, पाउडर, तेल, लिपस्टिक, आदि। उसे देखकर अहसान चौंका।

"ये सब क्या...आप शारदा चाची का ही सारा सामान उठा लाए?"

"हां! इसके ज़रिये हम आसानी से अपनी शक्ल बदल सकते हैं।"

"भाई, ये तो साज-संवर का सामान है, इससे शक्ल थोड़ी न बदलेगी।"

"तू बस चुपचाप देखता जा।" उसके बाद राजीव सामान लेकर अहसान की सूरत बदलने लगा।

काजल और लिपस्टिक मिलाकर अजीब सा काला रंग उसके पूरे चेहरे पर पोत दिया। तेल लगाकर उसके बाल बिखेर दिए। अंत में आँखों पर काला चश्मा लगा दिया। उसके बाद उसने उसे शीशा दिखाया।

"या खुदा!" अहसान के मुंह से चीख निकल गई। "ये कौन जमूरा है?"

"देखा? कोई पहचान सकता है तुझे इस भेष में?"

"मेरे अम्मी-अब्बा तक नहीं पहचान पाएंगे। पर ये चश्मा किसलिए?"

"आँखें छिपने से किसी की शक्ल पहचानना और भी मुश्किल हो जाता है। हम दोनों अंधे भिखारी बनकर चलेंगे। अब तू अपनी तरह मेरी भी शक्ल बदल दे।"

इस बार अहसान ने राजीव का मेकअप कर दिया। फिर राजीव ने एक और काला चश्मा निकाला और स्टाइल से आँखों पर बैठा लिया।

"आप तो असली भिखमंगे लग रहे हो। अल्लाह के नाम पे दे दे बाबा...अल्लाह के नाम पे..." कहकर अहसान भीख मांगने का अभिनय करने लगा।

राजीव हंसा और बोला- "बिलकुल ठीक! इसी तरह का अभिनय हमें करना होगा और..." उसके बाद राजीव उसे आगे का प्लान समझाता चला गया।

5

दोपहर का वक्त था। सेठ धनीराम की दुकान पर इस वक्त उनका सहायक मौजूद था। सेठ रोज की तरह खाना खाने घर गया हुआ था।

उनका सहायक दीनदयाल खाना खाकर बैठा था। उसके हाथ में हाथ से हिलाने वाला पंखा था। वह उसे हिलाकर हवा खा रहा था और बीच-बीच में झपकी लेता हुआ गिर रहा था।

तभी दो फटे-पुराने कपडे पहने काले रंग के बालक दुकान के सामने पहुंचे। उनके हाथों में कटोरे थे, आँखों पर काले चश्मे। छड़ी की मदद से रास्ता ढूढते हुए वे दुकान के दरवाजे पर आ गए।

"भूखे को कुछ देदे, बाबा। भगवान भला करेगा।"

उनकी आवाज़ सुनकर दीनदयाल चौंकता हुआ नींद से जगा।

"आगे जाओ, भाई।" वह रूखे स्वर में बोला।

"आगे भी अँधेरा है, पीछे भी अँधेरा है। कहाँ जांए माई-बाप?" भिखारी दार्शनिक भाव से बोलते हुए दुकान के अंदर आ गया। दूसरा भी उसके पीछे थे।

"अरे-अरे! कहाँ घुसे आ रहे हो?" दीनदयाल उठ गया।

"कुछ तो दे बाबा। अल्लाह तेरा भला करेगा।"

दीनदयाल को लगा इन्हें पैसे दिए बगैर पीछा नहीं छूटेगा, इसलिए जेब से एक पैसे का सिक्का निकाला और उनकी तरफ बढ़ाया।

"ये लो, भाई।"

भिखारी ने हाथ आगे बढ़ाया। पर अचानक ही दरवाजे की दहलीज़ से पैर फंसने से वह लडखडाया और दीनदयाल के ऊपर जा गिरा।

"क्या मुसीबत है!" वह चीखा।

"माफ करना- माफ करना।" अंधे ने खुद को संभाला। उसके ऊपर से उठा। इससे पहले कि दीनदयाल उठता वह एक बार फिर उसके ऊपर गिर गया।

"कमबख्तों!" वह झुंझलाया- "आँख के साथ अक्ल से भी अंधे हो क्या? निकलो यहाँ से।"

उसने दोनों को धक्के देकर बाहर निकाल दिया।

काश वो ये देख पाता कि उनमे से एक ने गिरने के बहाने वहां पड़ी तिजोरी और दुकान की चाभियों का अक्स साबुन पर उतार लिया था।

6

दूसरे दिन सुबह-सुबह राजीव और अहसान गिरधारीलाल के घर पहुंचे।

गिरधारीलाल पूजा कर रहा था। दरवाजे पर उन बच्चों को देखकर वो चौंका।

"कौन है? अंदर आ जाओ।"

राजीव और अहसान अंदर आ गए।

"हमें आपसे बेहद ज़रूरी बात करनी है, बाबा।" राजीव बोला।

"तुम दोनों हो कौन? पहले तो नहीं देखा।"

"उसे छोडिये। दरअसल- हमारे पास आपके घर के कागजात हैं।"

"क्या?" गिरधारीलाल उछल पड़ा। "वो...वो तुम्हारे पास कैसे आये?"

"हमें पता है- सेठ धनीराम आपके घर पर कब्ज़ा करना चाहता है। अब कागज आपके पास हैं। आप घर किसी और को सही भाव में बेचकर उसका उधार चुका दीजिए।"

गिरधारीलाल के चेहरे पर हवाईयां उड़ने लगी। उसे समझ नहीं आ रहा थे कि इन नादान से बच्चों को ये सारी बात कैसे पता चली।

"मुझे तो कुछ समझ नहीं आ रहा। तु...तुम...बच्चे... तुम लोगों को ये सब..."

"आश्चर्य मत करिये।" अहसान बोला- "हमने आपकी और दरोगा की बातें सुनी थी। वो लोग आप के साथ जोर-जबरदस्ती कर रहे हैं। हमसे सहन नहीं हुआ। इसलिए हमने सेठ से आपके कागजात हासिल कर लिए।"

गिरधारीलाल के चेहरे पर अचरज और प्यार दोनों ही भाव उमड़ आये।

"मुझे समझ नहीं आ रहा है, तुम दोनों ने ये काम कैसे किया। पर ये गलत है, मेरे बच्चों। मैंने घर के कागजों के ऊपर ही उधार लिया था। जब तक मैं उधार नहीं चुका देता इन्हें वापस नहीं ले सकता।"

"आप अपने घर के लिए कोई ग्राहक ढूढ़ लीजिए। आपको फ़िक्र है, तो हम सेठ के पास इन कागजों की हुबहू कॉपी रख देंगे। फिर जब आप उसका उधार चुका देंगे वो आपको नकली कागज वापस कर देगा।"

राजीव की बातों से गिरधारीलाल की आँखे आश्चर्य से फ़ैल गई।

"तुम वो कैसे करोगे? नहीं-नहीं... मुझे समझ नहीं आ रहा- तुम लोगों ने ये कागज़ कैसे हासिल किये, पर ये गलत है। मेरी वजह से तुम जैसे प्यारे बच्चे किसी मुसीबत में फंस गए..."

"आप हमारी बिलकुल भी चिंता मत करिये।"

इस तरह गिरधारीलाल कुछ देर तक उन्हें ये सारे गलत काम न करने के लिए समझाता रहा। पर राजीव और अहसान मानने वाले नहीं थे, इसलिए अंत में उसे उनके सामने हार माननी पड़ी।

7

आज अमावस्या की रात थी। चारों तरफ धुप्प अँधेरा था। रह-रहकर उल्लू और चमगादड़ों की आवाज़ आ रही थी, जिससे वातावरण और भी भयावह लग रहा था।

राजीव और अहसान आधी रात के इस वक्त सेठ धनीराम की दुकान की तरफ बढ़ रहे थे।

"भाई!" अहसान सहमे हुए स्वर में बोला- "मुझे डर लग रहा है।"

"क्यों?"

"अरे, माहौल तो देखो। तुम किस मिट्टी के बने हो? मुझे तो कुछ ठीक नहीं लग रहा। कहीं हम लोग किसी मुसीबत में न पड़ जाए।""

"कुछ नहीं होगा। तुम खाम्खाह डर रहे हो।"

"किसी और दिन करेंगे ये काम।"

"नहीं! अब इस काम को बीच में नहीं छोड़ सकते। गलती हमारी है। हमें पहले से ऐसी प्लानिंग करके चलना चाहिए था। विनोद की प्रेस से नकली कागज़ बनवा लेते और कल ही कागज़ चुराते वक्त उन्हें सेठ की तिजोरी में रख देते।"

"हाँ! फिर आज दुबारा आने की नौबत नहीं आती।"

"कोई बात नहीं...आगे से ध्यान रखेंगे। इस बार हमारी प्लानिंग थोड़ी कच्ची थी।"

"बोल तो ऐसे रहे हो- जैसे जिंदगी भर हमें यहीं काम करना है।"

राजीव कुछ बोला नहीं। वे लोग सेठ की दुकान के सामने पहुँच गए थे। उन्होंने चारों तरफ देखकर जगह का मुआयना किया। उन्हें दूर-दूर तक कोई इंसान नज़र नहीं आया।

तसल्ली करने के बाद दोनों दुकान के दरवाजे पर पहुंचे। राजीव ने जेब से प्लास्टिक की चाभी निकाली और बिना किसी परेशानी के दरवाजा खोल लिया।

अचानक राजीव फुसफुसाया- "अहसान! तुम बाहर ही रुको।"

"क...क्यों?"

"रात को अक्सर गश्ती पुलिस निकलती है। ये दुकान सड़क पर है। अगर उनकी नज़र ताले पर पड़ गई..."

"वो कहाँ इतना ध्यान से देखेंगे।"

"फिर भी, हमें कोई चांस नहीं लेना। तुम बाहर से ताला डाल दो और दीवार के पीछे छिप जाओ। अंदर का काम इतना कठिन नहीं है कि मैं अकेला न कर पाऊं। जब काम हो जायेगा तो मैं अंदर से दरवाजा खटखटा दूँगा।"

"...और अगर उसी वक्त पुलिस यहाँ से निकली?"

राजीव ने चौंककर अहसान को देखा, फिर मुस्कराया- "अक्लमंद हो हो गए हो। ठीक कहा! मैं अंदर से बिल्ली की आवाज़ निकालूँगा। ठीक?"

"एकदम बढ़िया।"

उसके बाद राजीव अंदर चला गया और अहसान ने बाहर से ताला डाल दिया। फिर वह एक दीवार के पीछे छिप गया।

8

दरवाजा बंद होते ही राजीव अँधेरी दुकान में सेफ़ की तरफ बढ़ गया। क्योंकि वे दोनों कल रात ही यहाँ आये थे, उसे इस काले अँधेरे में भी सेफ़ तक पहुंचने में कोई दिक्कत नहीं हुई।

फिर उसने जेब से दूसरी चाभी निकाली और सेफ़ खोल दी। नकली कागज उसने अपनी शर्ट के अंदर से निकाल लिए। अभी उसने कागज़ात सेफ़ में रखे ही थे कि-

पूरी दुकान बल्ब की पीली रौशनी में नहा गई।

राजीव को काटो तो खून नहीं। मानो उसकी हृदय गति ठहर गई।

उसकी गर्दन स्वतः ही उस तरफ घूम गई, जहाँ स्विच बोर्ड था। उसने देखा वहां सेठ धनीराम खड़ा था। उसके बगल में दरोगा रतन सिन्ह भी था।

"ये रहा आपका चोर।" रतन सिन्ह कमर पर हाथ रखकर बोला।

"राजीव!" सेठ के चेहरे पर क्रोध और आश्चर्य के मिश्रित भाव थे। "ये तो मास्टरजी का लड़का है।"

राजीव उसी पोज़ में रुका हुआ था। उसके हाथ अभी भी तिजोरी के अंदर कागज रख रहे थे। उससे कुछ करते या बोलते न बना।

रतन सिन्ह धीरे-धीरे टहलते हुए उसके पास पहुंचा।

"क्यों लड़के? तेरे पिताजी ने यहीं सीख दी है?"

सेठ दौडकर राजीव के पास पहुंचा और फिर उसके हाथ से वो कागज़ छीन लिए। उन्हें देखकर वो चौंका।

"ये तो गिरधारीलाल के घर के कागज़ हैं। तु...तुम इन्हें..."

"अच्छा!" रतन सिन्ह का पुलिसिया दिमाग तुरंत दौड़ा- "यानि गिरधारीलाल ने इसे ये कागज़ चुराने के लिए भेजा है।"

"नहीं!" आखिरकार राजीव अपनी लकवे वाली अवस्था से बाहर आया। "किसी ने नहीं भेजा मुझे।"

"फिर क्यों आया तू यहाँ? वो तो सेठ जी को चाभियों पर साबुन के निशान देखकर शक हो गया, वरना तो हमें कुछ पता ही नहीं चलता।"

राजीव से कुछ कहते नहीं बना।

इतनी देर में धनीराम जो कि उन कागजों को देख रहा था, बोल पड़ा- "अरे! ये कागज़ तो जाली हैं।"

"मतलब?" रतन सिन्ह उसकी तरफ घूमा।

"ये वो कागज़ नहीं हैं, जो गिरधारीलाल ने गिरवी रखवाए थे।"

"यानि नकली कागज़...जालसाजी। ये काम तो अकेले इस लड़के का नहीं हो सकता। बोल लड़के- कौन-कौन मिला है तेरे साथ?"

"क...कोई नहीं मिला है।"

"ये इस तरह नहीं मुंह खोलेगा। इसे हवालात..." रतन सिन्ह धनीराम की तरफ देखते हुए बोल रहा था और राजीव ने मौके का फायदा उठाया। उसने दरवाजे की तरफ छलांग लगा दी।

इससे पहले कि वो दोनों कुछ समझ पाते, राजीव दुकान के बाहर आ गया और उसने झट से दरवाजा बाहर से बंद कर दिया।

"तुम ठीक वक्त पर आ गए, अहसान।" वह अहसान से बोला। उसी ने दरवाजा बाहर से खोला था, जिसे देखकर राजीव ने ये कदम उठाया था।

"अंदर लाईट जलते हुए देखकर मुझे लगा ज़रूर कुछ गडबड है।"

अंदर से सेठ और दरोगा दरवाजा भडभडा रहे थे।

राजीव और अहसान ने एक तरफ दौड़ लगा दी।

कुछ दूर जाने के बाद अहसान बोला- "भाईजान! हम लोग तो बुरे फंसे। अब क्या करें?"

राजीव के कुछ समझ नहीं आ रहा था।

तभी पीछे से उन्हें दौड़ने की आवाज़ आई।

"लगता है वो लोग बाहर आ गए।" राजीव बोला- "भागो..."

उसके बाद वो भागते चले गए। कुछ देर में वो मौहल्ले से बाहर आ गए।

"अहसान!" राजीव कुछ सोचते हुए बोला- "उन लोगों ने तुझे नहीं देखा है। तू चुपचाप घर चला जा, तेरा नाम कहीं भी नहीं आएगा।"

"पागल हो गए हो? मैं तुम्हें छोडकर कहीं नहीं जाने वाला।"

"समझता क्यों नहीं..."

"क्या समझूँ? मैं कायर नहीं हूँ। जो कुछ हुआ है उसमे मैं तुम्हारे साथ था, और इस मुसीबत में मैं तुम्हें अकेला छोड़ दूं, ऐसा कमीना नहीं हूँ मैं।"

"अरे! अगर हम दोनों ही पकड़े गए तो हमारी मदद कौन करेगा? मैं अकेला पकड़ा गया तो कम से कम तू मेरी मदद तो कर सकेगा।"

अहसान सोचने लगा, फिर बोला- "नहीं! फिलहाल मैं कहीं नहीं जा रहा। हममें से कोई नहीं पकड़ा जायेगा।"

एक बार फिर उन्हें भागते कदमों की आवाज़ आई।

"कम से कम, अभी तो अलग छुप जा। अगर हम में से किसी को उन्होंने पकड़ा तो दूसरा मदद कर पायेगा।" राजीव ने समझाते हुए कहा।

ये बात अहसान को ठीक लगी। सड़क के किनारे खेत थे। राजीव बांये और अहसान दांयी तरफ छिप गया।

कुछ ही देर में धनीराम और रतन सिन्ह वहां पहुंच गए। दोनों लगातार भागने से हांफ रहे थे।

"कहाँ गया वो कुत्ते का पिल्ला।" धनीराम अपनी साँसों को काबू में करते हुए बोला।

"दूर-दूर तक अब कोई भागता नहीं दिख रहा है। न ही कोई आवाज़ आ रही है।" चारों तरफ देखते उए रतन सिन्ह ने कहा- "यानि- वो यहीं कहीं छिपा है।"

फिर रतन सिन्ह ने रिवाल्वर निकाल लिया। खेतों में छिपे राजीव और अहसान ये देखकर सहम उठे।

"ये...ये क्या?" रिवाल्वर देखकर धनीराम भी चौंका- "वो बच्चा ही तो है।"

"ऐसे बच्चे ही आगे चलकर बड़े-बड़े अपराधी बनते हैं। देखा नहीं- अभी से कितने हुनर हैं उसमे। नकली चाभी। जाली कागजात। आगे न जाने क्या करे? बचने के लिए वो कुछ भी कर गुजरेगा, इसलिए हमें सावधान रहना होगा।"

उसकी बातें सुनकर राजीव ये तो समझ ही गया था कि वह उसे पकड़ने के लिए कुछ भी कर गुजरेगा। इसलिए वह भी खुद को बचाने के लिए मानसिक तौर से तैयार हो गया था।

फिर रतन सिन्ह बाँई तरफ के खेत में उतर आया।

अहसान का मन रोष से भर गया। उसे लगा था कि वे लोग कुछ आगे जाकर ढूढेंगे, पर वे तो एकदम उसी जगह सड़क पर रुके जहाँ वे दोनों रुके थे और अब वे लोग राजीव की तरफ बढ़ रहे थे। वो ये साफ़ देख सकता था। राजीव खतरे में था। अहसान को पता था- राजीव हार मानने वालों में से नहीं है। वो इतनी आसानी से खुद को उनके हवाले नहीं करेगा। पर दरोगा तो रिवाल्वर लिए था। उसके सामने राजीव की क्या बिसात। उसे कुछ करना होगा। राजीव अब उसकी मदद के बिना नहीं बच सकेगा।

इधर राजीव सांस रोककर खेत की झाडियों में छिपा था। उसे कुछ समझ नहीं आया तो उसने खेत की मिट्टी ही हाथों में ले ली। शायद यहीं हथियार उसके काम आ सके। रतन सिन्ह उसी की तरफ बढ़ रहा था और वो अपनी जगह से हिल भी नहीं सकता था, वरना झाडियों के शोर से ही वह पकड़ा जाता।

रतन सिन्ह उसकी तरफ बढ़ते हुए एन मौके पर रुका और बडबडाते हुए सेठ की तरफ वापस पलट गया- "इधर तो नहीं है।"

राजीव को लगा मौका सही है और वो खेत में और अंदर की तरफ जाने के लिए आगे रेंगने लगा।

झाडियों में ज़रा-सी आवाज़ हुई और रतन सिन्ह के तेज़ कानों के लिए इतना बहुत था।

एकदम गिद्ध की भांति वह राजीव पर झपटा। उसकी गर्दन उसके हाथों में थी।

इधर अहसान से रहा नहीं गया।

राजीव को खतरे में देखकर वह दौड़ता हुआ उधर पहुंचा और खींचकर एक पत्थर उस तरफ फेंका। पत्थर ठीक रतन सिन्ह की कनपटी पर लगा।

रतन सिन्ह दर्द से बिलबिला उठा। राजीव ने मौके का फायदा उठाया और रतन सिन्ह के रिवाल्वर वाले हाथ पर लात मार दी।

रिवाल्वर उसके हाथ से छिटक गया, जिसे फ़ौरन राजीव ने उठा लिया।

अहसान ने पूरा नज़ारा देखा और फिर से छिप गया।

धनीराम को कुछ समझ नहीं आया कि क्या हो रहा है। हां, वह इतना ज़रूर समझ गया था कि वहां राजीव का कोई और साथी भी है, पर रात के अँधेरे में वो उसे पहचान नहीं सका था। अचानक ही राजीव की आवाज़ ने उसका ध्यान खींचा।

"दरोगा जी! पीछे हट जाओ।" राजीव ने रिवाल्वर रतन सिन्ह पर तान दिया था।

सेठ ये नज़ारा देखकर भौचक्का रह गया।

रतन सिन्ह के चेहरे पर क्रूर मुस्कान थी। "ये बच्चों के खेलने की चीज़ नहीं है। वापस कर इसे।"

"राजीव!" सेठ चीखा- "क्या कर रहे हो ये? ये पागलपन छोड़ो और हमारे साथ चलो। हमें सब सच-सच बता देना, मैं तुम्हारे खिलाफ कोई शिकायत नहीं करूगा।"

"सच सुनना है?" गुस्से से राजीव के मुंह से फुंकार निकली- "सच ये है- कि आप एक गरीब लाचार वृद्ध का फायदा उठाना चाहते हैं। आपने पुलिस को उन्हें परेशान करने के लिए घूस दी है। आप क्या शिकायत करोगे, शिकायत तो मैं

करूंगा आप दोनों की..."

"इसे...इसे ये सब कैसे पता चला?" सेठ के चेहरे पर पसीना उभर आया।

"मुझे क्या पता?" रतन सिन्ह बोला- "देख लड़के- एक पुलिस वाले पर हमला करने का अंजाम जानता है? रिवाल्वर वापस कर मेरा, वरना हवालात में बंद करके ऐसी ठुकाई करूंगा सारा देखा-सुना भूल जायेगा।"

"पीछे रहो।" राजीव ने उसे आगे बढते देख चेतावनी दी- "आगे बढे तो ठीक नहीं होगा।"

"क्यों? क्या करेगा?" रतन सिन्ह गुस्से से उफन पड़ा- "मुझे मारेगा? एक पुलिस वाले का खून करेगा? चला गोली... साले हाथ टूट जायेगा तेरा।"

राजीव को लगा दरोगा रुकने वाला नहीं। और एक बार रिवाल्वर उसके हाथ चला गया, उसके बाद वो कुछ नहीं कर सकेगा। शर्तिया दरोगा उसे हवालात में ठूस कर मारेगा-पीटेगा और फिर चोरी के लिए उसे जेल जाना होगा। उसके माँ-बाप कहाँ ये सब सह पायेंगे।

"ख़बरदार!" राजीव चीखा। पर रतन सिन्ह उस पर झपट चुका था।

राजीव ने उसकी टांग की तरफ निशाना लेकर ट्रिगर दबा दिया।

गोली चलने का जबरदस्त धमाका हुआ।

राजीव, जिसने जिंदगी में पहली बार गोली चलाई थी, रिवाल्वर के रीकोइल को संभाल नहीं सका और पीछे जा गिरा।

रतन सिन्ह धम्म से खेत की गीली मिट्टी में गिर गया।

धनीराम का मुंह खुला हुआ था। उसे विश्वास नहीं हो रहा था, कि राजीव ने गोली चला दी। खुद राजीव को इस बात का यकीन नहीं आ रहा था। अपने बचाव के लिए उसने एक पुलिस वाले पर फायर कर दिया था। वह जल्दी से उठा।

अचानक ही सेठ के मुंह से चीख निकल गई।

"ये...ये तुमने क्या किया?"

"वहीं जो करना चाहिए था।"

"पर...पर..." धनीराम के चेहरे पर आतंक छाया हुआ था। राजीव को उसके हाव-भाव समझ नहीं आये। उसने रतन सिन्ह की तरफ देखा।

और फिर उसके चेहरे पर भी हवाइयां उड़ने लगीं। उसे यकीन नहीं हो रहा था, जो आँखें उसे दिखा रही थीं।

रतन सिन्ह निश्चल-सा पड़ा था। गोली उसकी टांग में नहीं लगी थी, बल्कि उसका भेजा उड़ा चुकी थी। उसका सिर और चेहरा खून से नहा चुका था।

"ये...ये..." राजीव बुरी तरह से हडबड़ा गया। अब उसे समझ आया कि रिवाल्वर चलने के झटके से उसकी नाल ऊपर उठ गई थी, और गोली रतन सिन्ह की टांग में नहीं बल्कि सिर में घुसकर उसका काम-तमाम कर चुकी थी।

"तुमने इसे मार डाला, राजीव। हे भगवान!" सेठ पागल-सा हो रहा था।

अचानक ही सेठ लहरा कर ज़मीन पर गिर गया। राजीव चौंका। फिर उसे अहसान खड़ा दिखाई दिया। उसके हाथ में बड़ा-सा पत्थर था, जिसे उसने सेठ के सिर पर मारा था।

"ये क्या किया अहसान?" राजीव बोला।

अहसान ने बिना कुछ कहे रतन सिन्ह की तरफ देखा और चिल्लाया- "तु...तुमने ये क्या किया, भाई? मार दिया इसे?"

"म...मैं तो इसकी टांग पर गोली मारना...पर... पता नहीं कैसे...सिर पर..." राजीव पागल-सा हो रहा था। अहसान ने उसे संभाला।

काफी देर तक दोनों बिना कुछ कहे बैठे रहे।

फिर अहसान रतन सिन्ह की लाश को घूरते हुए बोला- "ये क्या हो गया, भाई? बाबा की मदद करते-करते हम अपराधी बन गए, हत्यारे बन गए।"

"हम नहीं, अहसान। मैं हत्यारा हूँ। तुम्हारा इससे कोई लेना-देना नहीं।"

"कैसी बात कर रहे हो?" अहसान की आँखों में आंसू आ गए। "जो कुछ भी हुआ है, उसका जिम्मेदार मैं भी हूँ।"

"वो बस हम दोनों जानते हैं। रतन सिन्ह मर चुका है और सेठ ने तुम्हें देखा नहीं है। बाकी बचे बाबा, मुझे यकीन है वो तुम्हारा नाम नहीं लेंगे। वैसे भी बड़ा अपराध मैंने किया है, ये बात सेठ जानता है।"

"चुप रहो। अब मेरी बात सुनो।" अहसान ने उसे झिंझोड़ा।

"क्या?"

"रिवाल्वर में और भी गोलियाँ हैं।" अहसान का स्वर खूंखार हो उठा था- "सेठ को भी खत्म कर देते हैं, किसी को कुछ पता नहीं चलेगा।"

"तू पागल हो गया है?" राजीव गुस्से से बोला।

"अब यहीं रास्ता है।"

"होश में आ अहसान। क्या पागलपन की बातें कर रहा है। हम लोग खूनी नहीं हैं। हम तो बाबा की मदद करने निकले थे। खुद अपराधी बनने के लिए नहीं। जो कुछ हुआ वो एक दुर्घटना थी। इसे छिपाने के लिए हम इतना बड़ा जुर्म नहीं कर सकते।"

"तो क्या करें, भाई? इस कमीने दरोगा के खून में फांसी चढ जांए?"

"नहीं!" कहकर राजीव चुप हो गया। कुछ देर सोचने के बाद वह बोला-

"मैंने सोच लिया है- क्या करना है।"

अहसान ने उसके चेहरे को देखा, उस पर दृढ-संकल्प के भाव थे।

9

दोनों ने रिवाल्वर के हत्थे पर से सावधानी से उंगिलयों के निशान मिटा दिए। फिर सेठ की जेब से कुछ पैसे निकाल लिए। उसके बाद वे लोग पैदल चलते-चलते चारबाग रेलवे स्टेशन पहुंच गए।

अहसान के चेहरे पर मुर्दानगी छाई हुई थी।

राजीव ने लाइन में लगकर दिल्ली का थर्ड क्लास का एक टिकट खरीद लिया।

"लेकिन भाई, तुम अकेले वहां क्या करोगे? कहाँ रहोगे?" अहसान फट पड़ा।

"भरोसा रख- कुछ न कुछ कर ही लूँगा। दिल्ली में कई दोस्त रहते हैं, कुछ न कुछ हो जायेगा।"

"और आपके माँ, पिताजी..."

"तू चिंता मत कर। सही वक्त आने पर मैं उन्हें पत्र लिखूंगा। पर खबरदार, तुझे मेरी कसम है- अपने मुंह से किसी से भी आज रात की किसी भी घटना का जिक्र नहीं करेगा। बस बाबा गिरधारीलाल को वो समझाना है, जो मैंने कहा।"

अहसान ने तेजी-से सिर हिलाया। "तुम जल्दबाजी में ये सब..."

"नहीं! मैंने सबकुछ सोच समझकर किया है। इन हालातों में यहीं ठीक होगा।"

दोनों बाते करते हुए प्लेटफॉर्म पर पहुंच गए। ट्रेन छूटने ही वाली थी।

राजीव थर्ड क्लास के एक डिब्बे में चढ गया। अंदर काफी भीड़ थी। बैठने की कहीं भी जगह नहीं थी।

राजीव डिब्बे में चढकर दरवाजे पर खड़ा हो गया। अहसान उसकी आँखों में झाँक रहा था।

इंजन ने सीटी बजा दी। ट्रेन छूटने की तैयारी कर रही थी।

"वादा करो अहसान।" राजीव ने उसका हाथ थामा। "जिंदगी में देश और समाज के लिए कुछ ज़रूर करोगे।"

अहसान ने नम आँखों से राजीव को देखा, फिर धीरे-से सिर 'हां' में हिला दिया।

अगले ही पल ट्रेन आगे बढ़ गई। दोनों के हाथ अलग हुए।

राजीव दरवाजे पर से अहसान को पीछे छूटते हुए देख रहा था। कुछ दूर निकलने पर राजीव ने मुस्कराते हुए हाथ हिलाया।

अहसान बस उसे देखता रहा। कुछ देर में ट्रेन आँखों से ओझल हो गई।

प्लेटफॉर्म खाली हो चुका था। अहसान बुत बना उसी जगह खड़ा था।

अचानक ही वो फफक-फफककर रोने लगा और घुटनों के बल बैठता चला गया।

10

वक्त हर घाव पर मरहम लगा देता है। कुछ घाव गहरे होते हैं, जो भरते तो कभी नहीं पर वक्त उनका दर्द सहन करने की ताकत दे देता है।

अहसान के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ।

ऐसा कोई दिन नहीं था, जब उसे राजीव की याद न आती हो। खासकर स्कूल से लौटते वक्त जब वो उस खेत के पास से गुजरता था, तो उसे उस मनहूस रात की याद आ जाती।

अनोखी बात तो ये थी, कि सेठ धनीराम ने किसी से भी उस रात का जिक्र नहीं किया था। पुलिस के लिए रतन सिन्ह की मौत अभी-भी एक पहेली थी। ज्यादातर लोग उसे आत्महत्या मान रहे थे।

अहसान समझ गया था कि सेठ होश में आने के बाद वहां से भाग निकला होगा। सेठ ने न ही किसी को उस रात की घटना के बारे में बताया न ही गिरधारीलाल को किसी तरह से परेशान करने की कोशिश की। गिरधारीलाल ने अपना घर सही दाम में बेचकर सेठ का उधार चुका दिया था। और सेठ ने उसके घर के नकली कागज़ात भी लौटा दिए। अहसान ने गिरधारीलाल को सबकुछ बताया, पर आखिर में कहानी इस तरह बदल दी- सेठ और दरोगा उनका पीछा कर रहे थे। फिर पता नहीं किसने एक फायर किया और फिर दरोगा मर गया। उसके बाद राजीव इस डर से भाग गया कि उसके ऊपर सेठ चोरी वगैरह का इलज़ाम लगा देगा।

"सेठ धनीराम डरा हुआ है।" अहसान ने गिरधारीलाल से कहा- "उसे पता है कि राजीव का कोई तो साथी होगा उस रात जिसे सभी घटना के बारे में मालूम होगा। दरोगा के क़त्ल का राज़ खुला तो उसकी काली करतूतों का भी खुलासा हो जायेगा, इसलिए वो आपको परेशान नहीं कर रहा।"

गिरधारीलाल को ज्यादा कुछ समझ नहीं आया, उसने बस ये पूछा- "पर राजीव बेटा कहाँ है?"

"म...मुझे नहीं मालूम बाबा। उसने जाने से पहले बस ये कहा था- कहीं भी छुप जाऊँगा। सही वक्त आने पर वापस आ जाऊँगा।"

गिरधारीलाल बेहद चिंतित था। "मेरी वजह से न जाने वो कहाँ चला गया। किस हाल में होगा?"

"अरे! आप चिंता मत करिये। राजीव बहुत होनहार है। कुछ न कुछ कर लेगा। सही वक्त पर वापस आ जायेगा।" अहसान को उम्मीद थी कि उसका आखिरी वाक्य सच निकले।

राजीव के माता-पिता उसके गायब होने से बेहद दुखी थे। अपनी तरफ से उन्होंने उसे ढूढने की पूरी कोशिश करी। अहसान ने उन्हें कुछ नहीं बताया। बताता भी कैसे? राजीव ने कसम जो दी थी। उसने गिरधारीलाल को भी किसी से इन बातों का जिक्र न करने की हिदायत दी।

अहसान को लग रहा था कि राजीव बेवजह ही शहर छोडकर चला गया। कुछ भी तो नहीं हुआ था। दरोगा के क़त्ल का राज़, राज़ ही रह गया था। फिर भी सेठ का क्या भरोसा? उसने सोचा शायद यहां के हालात राजीव को पता चल जाएँ। समाचार वगैरह तो वह बड़े चाव से पढता था। शायद यहां के हालात जानने के बाद वो लौट आये। दिन पर दिन और साल पर साल बीतते गए पर राजीव नहीं लौटा।

इस तरह समय बीतता गया। शुरू में अहसान का किसी भी चीज़ में मन नहीं लगता था, पर समय के साथ उसने राजीव के बिना जीना सीख लिया। अब उसकी उम्र बीस साल थी और वह लखनऊ के शिया कॉलेज में बीए की पढाई कर रहा था। पढ़ने में तो अहसान औसत ही था, परन्तु खेल-कूद और शेरो-शायरी में हमेशा आगे रहता था। उसका कद निकल आया था। शरीर में गज़ब की ताकत थी, पर इन चीजों का कभी उसने दुरूपयोग नहीं किया।

उसके ज़हन में राजीव से किया वादा अभी भी बरकरार था। उसे देश के लिए कुछ करना था। बहुत सोचने समझने के बाद उसने अपना मन बना लिया था। और वो फैसला था- आर्मी में भर्ती होने का।

'हां! देश की सेवा करने का इससे अच्छा और कोई तरीका नहीं होगा मेरे लिए।' उसने सोचा- 'मैं अपनी जिस्मानी

ताकत और थोड़ी बहुत समझ से देश के दुश्मनों से लड़ सकता हूँ।'

जब उसने ये फैसला अपने अम्मी-अब्बू को बताया तो उसकी अम्मी ने हाय-तौबा मचा ली। रो-रोकर बुरा हाल कर लिया।

"आप ही समझाइए इसे। पता नहीं कौन-सा फितूर बैठ गया है इसके दिमाग में।" उसकी अम्मी चिल्ला रही थी- "अच्छा-ख़ासा बच्चा है, मेरा। मैं क्यों इसे कुर्बान कर दूं?"

"अम्मीजान! हर फौजी की माँ इस तरह सोचने लगे तो देश में एक भी फौजी न बचे।"

"देखो इसे- कैसे फ़िल्मी डायलाग मार रहा है। मैं तो कहती हूँ- आप ही ने सिर चढा रखा है इसे। इसीलिए आज मुझे ये दिन देखना पड़ रहा है। या खुदा! इस कमबख्त को अक्ल दे।"

अहसान के अब्बू कुछ नहीं बोले। उन्होंने अहसान को ध्यान से देखा और समझ गए कि उसके इस फैसले को अब बदला नहीं जा सकता।

कुछ दिन तक उसके घर में कहा-सुनी का माहौल रहा फिर अंत में उसकी अम्मी को घुटने टेकने पड़े।

अहसान ने आर्मी की परीक्षा का फॉर्म भर दिया। तीन महीने बाद परीक्षा थी। अहसान तैयारी करने लगा। वह अधिकतर कॉलेज की लाइब्रेरी में पढाई किया करता था।

पढते-पढते जब कभी वह थक जाता तो वो फुटबाल खेलने के लिए मैदान में पहुंच जाया करता था। या फिर किसी दोस्त को पकडकर जबरदस्ती अपनी शायरी सुनाने लगता।

उस दिन अहसान ने रशीद नामक एक लड़के को लगातार चार शायरी सुना डाली।

जब अहसान चुप हुआ, तो रशीद ने उसे ध्यान-से देखते हुए कहा- "मिंया, अपना ये हथियार आप जंग में दुश्मनों पर आजमाना। देखना एक भी जिंदा नहीं बचेगा।"

"कौन-सा हथियार?"

"वहीं-जिसके वार अभी आप मेरे मगज पर कर रहे थे।"

"क्यों भाई? मेरी शायरी इतनी खराब है?" अहसान ने निराश स्वर में पूछा।

"अजी मैं कहाँ आपके हुनर की बुराई कर रहा हूँ। मैं तो बस ये कह रहा हूँ कि आप अपने इस हुनर का सही इस्तेमाल करिये। जंग में जब कारतूस खत्म हो जांए तो दुश्मन को अपने दो धमाकेदार शेर मार दीजियेगा, मैदान साफ़ हो जायेगा।"

"अच्छा बच्चू!" अहसान ने उसका गिरेबान पकड़ लिया। अहसान के सामने रशीद की क्या बिसात थी। शारीरिक ताकत में वो उसका डबल था। "तो सरेआम मेरा मजाक उड़ाया जा रहा है?"

"हे-हे! गुस्सा छोड़ो मिंया।" रशीद ने बत्तीसी दिखाई- "मैं तो मसखरी कर रहा था।"

"तुम्हें इसकी सजा मिलेगी, रशीद मिंया।" अहसान ने सिर मटकाते हुए कहा- "तुम्हें मेरी एक और शायरी सुननी होगी।"

"इरशाद हुज़ूर!"

"इरशाद के बच्चे, ये शायरी तेरे ऊपर ही बनाई है। ध्यान से सुन और इसे हमेशा याद रखियो-

तेज़ हवा का झोंका आया |

साथ में तेरी खुशबू लाया ||

तेज़ हवा का झोंका आया |

साथ में तेरी खुशबू लाया ||

तब मुझको ये समझ में आया |

मेरे दोस्त तू आज फिर नहीं नहाया ||

तू आज फिर नहीं नहाया ||"

"बहुत खूब-बहुत खूब।"

"चल अब फुट ले।"

तभी अहसान को पीछे-से ज़ोरदार हंसी की आवाज़ आई। वह उस तरफ पलटा।

"हा हा हा।" एक लड़की पेट पकड़ कर, मुंह छिपाते हुए खिलखिलाकर हंस रही थी। अहसान उसको देखता ही रह गया।

दूध-से रंग और तीखे नैन-नक्श वाली वह लड़की बला-की खूबसूरत थी। उसने हरे रंग की चिकन वाली सलवार-कमीज़ पहन रखी थी। हाथों में हरे रंग की ही चूड़ियाँ थीं, जो आपस में लड़-लड़कर खनक रहीं थीं। ये सारी आवाजें मधुर संगीत बनकर अहसान के कानों में रस घोलने लगी थीं।

अहसान को खुद की तरफ इस तरह देखते हुए वह लड़की सकपका गई। फिर उसने अपने हाथ में पकड़ी किताबों को संभाला और तेजी-से एक तरफ बढ़ गई।

अहसान कुछ देर तक खोया-खोया सा खड़ा रहा, फिर उसके पीछे चल दिया।

वह लड़की पानी पीने के लिए कॉलेज की बिल्डिंग में लगे नलों के पास पहुंची।

उसने पानी के छींटे मुंह पर मारे, फिर पानी पीने लगी।

खांसी की आवाज़ सुनकर वह पलटी। अहसान उसके पीछे खड़ा था।

अहसान को लगा वह फिर भाग जायेगी इसलिए जल्दी-से बोला- "क्या नाम है आपका?"

"क्यों बताएं?" उसने आँखे तरेरकर उसे देखा और रुमाल से मुंह पोछने लगी।

"अरे!" अहसान सकपकाया। "ऐसे ही पूछ लिया था।"

"ऐसे ही नहीं बताया।" उसने तुनककर कहा और वापस चल दी।

"अजी! सुनिए तो, मोहतरमा।" अहसान ने आवाज़ लगाई, तो वह रुक गई। फिर अदा-से गर्दन पीछे घुमाकर बोली- "क्या सुनाना है?"

"ये कहाँ की तमीज है?" वह कुछ गुस्से में बोला- "मैंने आपका नाम पूछा था। इसका जवाब देने में आपको क्यों एतराज़ है?"

"तो अब आप हमें बदतमीज़ बोल रहे हैं?" वह वापस पलटी। उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया था।

"कमाल है! मैंने ऐसा कब कहा?"

"मतलब तो वहीं हुआ ना। जनाब! आप अभी हमारे गुस्से को नहीं जानते। हम मुंह से कम और अपनी जूती से ज्यादा जवाब देते हैं।" कहते हुए उसने अपनी जूती उतारी और हाथ में ले ली।

"अरे बापरे!" अहसान बौखला गया। वह इधर-उधर देखने लगा। अगर किसी ने उसे इस हालात में देख लिया तो न जाने उसकी इज्जत का क्या होगा। ये डर मन में आते ही उसने अपनी आवाज़ में मिठास लाते हुए कहा-

"आप तो बेवजह नाराज़ हो रही हैं। मैं तो बस ये जानना चाहता था कि आप किस बात पर हंस रही थीं। अगर आप नहीं बताना चाहतीं, तो भी कोई दिक्कत नहीं है। बस आप गुस्सा थूक दीजिए।"

लड़की कुछ नम्र हुई। उसने जूती वापस पहन ली। अहसान को कुछ चैन पड़ा।

फिर लड़की नज़रें झुकाते हुए कुछ शरमाते हुए बोली- "हमारा नाम सलीमा है।"

"ओह! अच्छा-अच्छा!" अहसान इस तरह बोला जैसे सलीमा ने अपना नाम बताकर उस पर कोई अहसान करा हो।

"आपकी शायरी बड़ी मजेदार थी।" वह अचानक ही चहककर बोली- "इसीलिए हमें हंसी आ गई थी। माफ कीजियेगा, क्या आपको खराब लगा?"

"नहीं-नहीं! कैसी बात कर रही हैं? मैं तो शेरो-शायरी करता ही लोगों को हंसाने के लिए हूँ।"

"अच्छा?" वह मुस्कराई- "तो फिर कुछ सुनाइए...अहसान साहेब!"

अहसान उछल पड़ा- "आ...आपको मेरा नाम...?"

"आपको कॉलेज में कौन नहीं जानता?" वह बोली तो अहसान की छाती गर्व से फूल गई। "हमें तो लगता है पूरे कॉलेज में शायद ही कोई आपकी शायरी के अत्याचारों से बच सका हो।" कहकर वह हंस दी। अहसान की छाती में भरी सारी हवा निकल गई।

"सलीमा जी! आप मेरी तारीफ कर रही हैं, या तौहीन?"

"हा हा हा!" वह खिलखिलाई- "हम तो मजाक कर रहे थे। आप बुरा बहुत जल्दी मान जाते हैं।"

अहसान को लगा ये लड़की उसके टक्कर की है। बल्कि टांग खिंचाई करने में शायद उससे भी आगे है। इसमें तो कोई शक नहीं था कि वह उसकी खूबसूरती पर पूरी तरह से लट्टू हो चुका था। जितनी बार भी वो हंसती, वहीं संगीत अहसान के कानों से होते हुए उसके दिल में उतर जाता था। दूसरी तरफ बातों में तो वो उसको धोबी की तरह पटक-पटककर साफ़ कर रही थी।

'बेटे अहसान! क्या सोच रहा है?' उसके मन में ख्याल आया- 'कहाँ इस लड़की पर लट्टू हो रहा है? भूल गया- दो महीने बाद इम्तेहान है। तैयारी करनी है और आर्मी में भर्ती होकर देश की सेवा करनी है। इन सब चक्करों में मत पड़ और भाग ले यहाँ से।'

"म...मुझे कुछ ज़रूरी काम है। चलता हूँ।" कहते हुए अहसान हडबडाते हुए वहां से भाग लिया।

सलीमा आश्चर्य से उसे देखती रह गई।

अहसान को क्या पता था कि उन दोनों का मिलना तो तकदीर में लिखा हुआ था। भागने से किसी की तकदीर कहाँ बदलने वाली थी।

11

दूसरे दिन सुबह अहसान नाश्ता करने के बाद लाइब्रेरी पहुंचा। उसने अपनी एक सीट तय कर रखी थी, वह उसी पर बैठकर पढाई करता था।

उसने फटाफट किताब खोली और रटने लगा। अभी उसने चार लाइने ही पढ़ी थीं कि उसे हँसने की आवाज आई। उसे लगा उसे सलीमा की खनखनाती हंसी सुनाई दी है।

"अहसान मिंया! दिमाग का इलाज़ करो। अब तो उस बला की आवाज़ का भी वहम होने लगा है।" वह बडबडाया।

कुछ देर शांति छाई रही। अहसान पढता गया। 'अब ठीक है!' सोचते हुए वह मन ही मन मुस्कराया। ठीक तभी- फिर से उसे हंसी सुनाई दी।

आवाज़ पहले से कुछ तेज़ थी, इसलिए उसकी नज़र सामने गई। उस तरफ देखकर वह बुरी तरह से चौंका।

चार सीट छोडकर सलीमा बैठी हुई थी।

आज उसने गुलाबी रंग का चूडीदार सूट पहना था, जिसमे वह अहसान को पहले से भी ज्यादा खूबसूरत लग रही थी। वह उसे देखता रह गया।

उसके हाथों में कोई किताब थी, पर उसकी नज़रें अहसान पर थी और उसके चेहरे पर ऐसे भाव थे, जैसे बड़ी मुश्किल से हंसी रोक रही हो।

अहसान को गुस्सा आ गया। वह उठा और उसके पास पहुंचा। सलीमा पलकें झपकाते हुए उसे देखने लगी। वह धम्म से उसके सामने बैठ गया और क्रोधित स्वर में फुसफुसाया- "आप यहां क्या कर रही हैं?"

"क्यों? लाइब्रेरी सिर्फ आपके पढ़ने के लिए है?" उसने भी फुसफुसाते हुए जवाब दिया।

"मेरा...मेरा मतलब था- मेरे सामने क्यों बैठी हो? और हंस क्यों रही हो? मैं क्या कार्टून हूँ?"

सलीमा फिर हंस दी। फिर गंभीर स्वर में बोली- "अहसान साहेब! मैं तो यहां एक घंटे पहले से बैठी हूँ। आप ही मेरे सामने आकर बैठे हैं। और आपके पढ़ने का तरीका इतना अहमकाना है कि हंसी तो आएगी ही।"

"मतलब क्या है आपका?"

"पढते वक्त आप कभी मुस्कराते हैं, कभी परेशान हो जाते हैं। कभी ऐसे उछल पड़ते हैं जैसे बिच्छू ने डंस लिया हो। माजरा क्या है?"

"मा...माजरा? कोई माजरा-वाजरा नहीं है।" कहकर उसने बुरा-सा मुंह बनाया और अपनी किताबें लेकर लाइब्रेरी से बाहर निकल गया। सलीमा उसके पीछे-पीछे बाहर आ गई।

"आप तो नाराज़ हो गए।" वह बोली तो अहसान उसकी तरफ पलटा। वह गंभीर स्वर में बोला-

"मुझे माफ करिये। दो महीने बाद मेरा इम्तेहान है। आर्मी में भर्ती होने का अरमान है मेरा। पता नहीं पास हूँगा भी कि नहीं, इसीलिए परेशान रहता हूँ। माफ कीजियेगा, पता नहीं आपसे क्या-क्या उल्टा-सीधा बोल दिया।"

इससे पहले सलीमा कुछ कहती अहसान आगे बढ़ गया। सलीमा उसे जाते हुए देखती रही, फिर वापस लाइब्रेरी में चली गई।

उसके बाद अहसान पढाई में मशगूल हो गया। पर दूसरे ही दिन उसके दिमाग में सलीमा घूमने लगी। पढाई से ध्यान हटने लगा। मन में उससे मिलने की इच्छा जागने लगी। उसने उसके विचार दिमाग से निकालने की कोशिश करी, पर सफल न हो सका।

आख़िरकार झक मारकर वह उठा और कॉलेज में उसे ढूढने लगा। लाइब्रेरी गया, उसकी क्लास में ढूढा, पानी के नल के पास, कैंटीन में, पर वह नहीं मिली। शायद आज छुट्टी पर होगी- ऐसा सोचकर वो वापस पढ़ने बैठ गया।

अगले दिन भी उसने सलीमा को खोजने की कोशिश करी, पर वह आज भी नहीं दिखी।

शाम तक अहसान बुरी तरह बेचैन हो गया। उसे सलीमा की चिंता सताने लगी। फिर उसने एक छात्रा से उसका पता पूछा और शाम को उसकी गली में जा पहुंचा।

उसका घर ढूढने में उसे ज्यादा वक्त नहीं लगा। पर घर के अंदर क्या कहकर आता? उसकी हिम्मत नहीं हुई। वह बाहर ही चाय की दुकान में खड़ा होकर चाय पीने लगा और रह-रहकर उसके घर की तरफ देख लेता।

लगभग चालीस मिनट बाद उसे बालकनी पर खिड़की खुलती दिखाई दी। और फिर सलीमा कपड़े सुखाने के लिए बाहर निकलती दिखी। उसे देखते ही अहसान के चेहरे पर उत्साह आ गया। उसका जी तो चाहा उसे चिल्लाकर बुलाए, पर वैसा करना संभव नहीं था। उसने चुपके से हाथ दिखाया। पर सलीमा कपड़े फ़ैलाने में मशगूल थी।

फिर एक पल के लिए सलीमा की नज़र उधर चली ही गई। अहसान को देखकर वह चौंक गई। अहसान ने हाथ हिलाया।

सलीमा ने इशारे से पूछा – 'यहां क्या कर रहे हो?'

'तुम कॉलेज क्यों नहीं आई?'

'तबीयत खराब है।'

'कल आओगी?'

'नहीं!'

'तुम्हारी याद आ रही थी।'

सलीमा मुस्कराई फिर शर्माती हुई अंदर भाग गई।

अहसान के रोंगटे खड़े हो गए।

'ये क्या कर रहा हूँ मैं?' उसने सोचा- 'लगता है- मेरा दिमाग सटक गया है।'

दिमाग तो अहसान साहेब का वाकई सटक गया था, क्योंकि रात को बारह बजे वो वापस सलीमा की गली में पहुंचा और फिर चोरों की तरह बरसाती पाइप से उसकी बालकनी में पहुंच गया।

फिर वह दबे पाँव खिड़की पर पहुंचा। अंदर सलीमा सोती हुई दिखाई दी। कमरे में और कोई नहीं था।

"शी-शी!" उसने आवाज़ निकाली तो सलीमा हड़बडाकर उठ गई।

अहसान को खिड़की पर देखकर उसके रौंगटे खड़े हो गए। वह दौडकर वहां पहुंची।

"अहसान!" वह बदहवास-सी अवस्था में फुसफुसाई- "पागल हो गए हो क्या? य...यहाँ कैसे? इतनी रात को? चोरों की तरह?"

"मुझे तुमसे बात करनी थी।"

"आपका दिमाग खराब हो गया है? किसी ने देख लिया तो? अब्बू जिंदा जमीन में गाड़ देंगे हमें।" सलीमा बुरी तरह से परेशान हो गई, फिर खुद को सँभालते हुए बोली- "अंदर आ जाओ। बाहर किसी ने देख लिया तो गज़ब हो जायेगा।"

वह अहसान को अंदर ले आई। फिर गुस्से-से बोली- "बकिये। ऐसी क्या बात है जो आप चोरों की तरह हमारे घर में घुस आये?"

अहसान से कुछ कहते नहीं बना। नींद-से अलसाई हुई सलीमा की आँखे उसे बेहद आकर्षक लग रहीं थीं। वह हडबडाते हुए बोला-

"तु...तुम कॉलेज नहीं आई, इसलिए तुम्हारी फ़िक्र हो गई..."

"शाम को देखा तो था आपने हमें- हम ठीक-ठाक हैं।"

"ठीक हो तो कॉलेज क्यों नहीं आती?"

"अरे! हमारी मर्जी। आपको क्या परेशानी है?"

"क...कुछ नहीं!" कहकर अहसान चुप हो गया और इधर-उधर देखने लगा।

सलीमा ने अपने गुस्से को नियंत्रित किया फिर उसे बैठने का इशारा किया।

"आपको पता भी है- आधी रात को एक जवान लड़की के कमरे में घुसने वाले के बारे में लोग क्या सोचेंगे?"

"मुझे माफ कर दो। मेरा दिमाग काम ही नहीं कर रहा था।" अहसान फट पड़ा- "पढ़ने की भरपूर कोशिश कर रहा था, पर ध्यान ही नहीं लग रहा था। तुम कॉलेज नहीं आ रहीं थीं तो मन बेचैन हो गया। शाम को भी ठीक से समझ नहीं आया कि तुम कॉलेज क्यों नहीं आना चाहतीं।"

"हम्म...तो ये माजरा है।" सलीमा ने दिलकश मुस्कान बिखेरी।

"म...माजरा नहीं, बस फ़िक्र हो रही थी।"

"अच्छा, ठीक है!" वह एकदम से संजीदा हो गई- "देखिये अहसान साहेब! आपके इरादे बहुत नेक हैं। आप आर्मी में भर्ती होना चाहते हैं और हम नहीं चाहते कि हमारी वजह से आपके सपने बिगड़ जांए।"

"तुम्हारी वजह से क्यों होंगे?"

"हमारी वजह से आपकी पढाई नहीं होती।"

"ऐसी बात नहीं है।"

सलीमा कुछ देर चुप रही, फिर नम्र आवाज में बोली- "हम कॉलेज इसीलिए नहीं आ रहे थे, क्योंकि हमें देखकर आप परेशान हो जाते हैं।"

"ऐसी बात नहीं है, सलीमा। वो तो बस जबसे तुम्हारी हंसी सुनी है, दिमाग में सिर्फ वहीं घूमती रहती है। तुम्हारी चूडियों की आवाज़ कान में घंटियों की तरह बजने लगती है। इसमें..." अहसान को अचानक ही अहसास हुआ कि उसने क्या बोल दिया।

सलीमा दो पल तो उसे आश्चर्य से देखती रही, फिर लाज से सिर झुका लिया। गोरे गाल सुर्ख होते चले गए।

"ये आप क्या बोल रहे हैं?" उसने मुस्कराते हुए कहा। नज़रें अभी-भी नीचे थीं।

"अरे बाप रे!" अहसान बौखलाया- "मेरा मगज फिर गया है। पता नहीं क्या-क्या बोले चला जा रहा हूँ।"

"क्या मतलब?"

"म मैं...मजाक कर रहा था।"

सलीमा झुन्झुलाते हुए उठ खड़ी हुई। "सच-सच बोलो नहीं तो चिल्ला-चिल्लाकर सबको जगा दूंगी।"

"पागल हो गई हो क्या?"

"हां! हो गए हैं। सिर्फ आपकी वजह से हम कॉलेज नहीं आ रहे। तीन दिन से हमें सही से नींद नहीं आ रही और आपको मजाक सूझ रहा है।"

"अरे! मगर-"

"मगर-वगर कुछ नहीं! सच-सच बोलिए नहीं तो हम आपका सिर तोड़ देंगे।" कहकर सलीमा ने तकिया उठा लिया।

"बो...बोलता हूँ।" अहसान बुरी तरह से घबरा गया "मुझे आप अच्छी लगती हैं।"

"हम बहुतों को अच्छी लगती हैं। सही बात बोलिए।"

"सही...सही बात तो ये है- सलीमा कि जब से तुम्हें देखा है दिल में सिर्फ और सिर्फ तुम्हारे ही ख्याल घूमते रहते हैं। मुझे तुमसे मोहब्बत हो गई है।"

सलीमा ने तकिया एक तरफ फेंक दिया, फिर मुंह छिपाकर बैड के एक कोने में बैठ गई।

'रोने तो नहीं लगी।' अहसान ने सहमते हुए सोचा। "स...सलीमा!"

वह कुछ नहीं बोली।

अहसान धीरे-से उसके पास पहुंचा और उसकी पीठ पर हाथ रखा और अगले ही पल-

सलीमा उठी और उससे लिपट गई।

अहसान भौचक्का रह गया, पहली बार वह किसी लड़की के इतना करीब आया था। उसके गुदाज़ जिस्म और भीनी खुशबू के अहसास ने उसे रोमांचित कर दिया। उसने सलीमा को अपनी बाहों में भींच लिया।

"हमें भी तहे दिल से आपसे मुहब्बत हो गई है, अहसान साहेब!" उसने धीरे-से अहसान के कान में कहा।

अहसान ने उसकी आँखों में देखा, उनमे उसे सिर्फ और सिर्फ प्यार नज़र आया। उसने उसके गालों को अपने हाथों में लिया और फिर अपनी तरफ खींच लिया।

दोनों के होंठ स्वतः ही एक दूसरे से जा मिले। दोनों के जिस्म में एक अनोखी सी लहर बल खाने लगी। कुछ ही पल में दोनों की सांसे तेज़ हो गई। सलीमा झटके के साथ अहसान के आलिंगन से बाहर निकल आई।

"अब...आप जाइए यहां से।" उसने कहा।

"ठी...ठीक है!" अहसान उलझा-सा जाने के लिए वापस पलट गया। फिर जिस तरह से आया था उसी तरह वापस चला गया।

उसके जाने के बाद सलीमा बैड पर लेट तो गई, पर नींद उसकी आँखों से मीलों दूर थी। अहसान के स्पर्श को अपने शरीर पर वह अभी-भी महसूस कर सकती थी। उसके ख्यालों ने उसके दिमाग से न निकलने की जैसे जिद्द पकड़ ली थी।

12

राजीव दिल्ली पहुंच तो गया था, पर आगे क्या करना है उसे समझ नहीं आ रहा था। सबकुछ तो वो पीछे लखनऊ में छोड़ आया था। नए शहर में कहाँ रहेगा। किसी दोस्त के पास जायेगा भी तो कितने दिन झूठ बोलकर उसके घर पर रहेगा। उसे आगे पढाई भी करनी थी, पिताजी के बिना वो कैसे संभव होगा।

यहीं सब सोचते हुए वह दिल्ली शहर में इधर-उधर टहलता रहा। सेठ की जेब से चुराए पैसे अभी-भी उसके पास थे, जिनसे उसका गुज़ारा चल रहा था। वह घूमते हुए इण्डिया गेट पहुंचा।

वहां पर जलती अमर ज्योति को वो काफी देर तक देखता रहा। उसके दिल में देश की सेवा करने के अरमान वापस जाग रहे थे। पर इस तरह वो क्या कर पायेगा? काफी सोचने के बाद वो अपने एक दोस्त के घर पहुंच गया। उसे उसने झूठ बोल दिया कि वो ज़रूरी काम से दिल्ली आया था, जल्दबाजी में खत नहीं लिख सका। रात वहां गुजर गई।

दूसरे दिन उसने अखबार में लखनऊ की खबर पढ़ी। उसे आश्चर्य हुआ कि सेठ ने दरोगा के खून के बारे में सच क्यों नहीं कहा। खैर, जो भी हो- इसका मतलब वो सुरक्षित था और उसके माथे पर खूनी होने का कलंक नहीं लगा था।

पर फिर भी वो अपने माता-पिता को क्या बताएगा? किस मुंह से उनके पास वापस जायेगा और कितने झूठ बोलकर अपने गुनाह को छिपाएगा? अंत में उसने हिम्मत करी और अपने पिता को सबकुछ सच-सच लिख डाला।

एक हफ्ते बाद बेनिलाल का जवाब आया कि राजीव ने ये बहुत बड़ा पाप किया है, फिर भी उन्होंने उसे माफ कर दिया। उन्होंने फैसला किया वो लखनऊ से दिल्ली आ जायेंगे और वहां नई नौकरी ढूढ़ लेंगे। पर इन सब चीजों में वक्त लगेगा।

फिर भी लगभग दो महीने बाद राजीव का परिवार दिल्ली में बस गया था।

जाने से पहले अहसान के अब्बू ने कहा- "मास्टरजी! आप तो मुझे अपना शहर न छोड़ने की सलाह देते थे, अब आप खुद ही जा रहे हो?"

"क्या कहूँ? जाना तो नहीं चाहता, पर जिस शहर में अपने बेटे को खो दिया, वहां अब दिल नहीं लगता।"

"दिल छोटा मत करिये, राजीव वापस आ जायेगा। वो एक बहुत होनहार बच्चा है।"

बेनिलाल ने सिर हिलाया।

दिल्ली पहुँचते ही जब वे राजीव से मिले, तो सबसे पहले उसे ज़ोरदार थप्पड़ रसीद किया।

"क्या कर रहे हैं?" माँ ने जल्दी से अपने बच्चे को बचाया- "इसने कहा तो वो एक दुर्घटना थी।"

"इसीलिए तो इसे माफ किया है। वरना मैं एक खूनी को अपना बेटा नहीं मान सकता था।"

"मुझे अपने किये का पछतावा है, पिताजी। मैं समाज की सेवा करना चाहता था, पर मेरा तरीका गलत था। पर अब मैं ऐसी कोई गलती नहीं करूंगा। मेरा वादा है आपसे कि आपको मुझ पर हमेशा फक्र होगा।"

उसके बाद राजीव ने मुडकर पीछे नहीं देखा। पढ़ाई और खेल कूद दोनों में वो उत्तीर्ण निकला।

देखते ही देखते वो कॉलेज में पहुंचा और बी एस सी खत्म करते-करते वह भारतीय सुरक्षा बल में चुन लिया गया। कई विभागों में उसने आर्मी इंटेलिजेंस में शामिल होने का निश्चय किया। अब वह कैप्टन राजीव था। उसे यकीन था कि वह अपनी बुद्धि के बल पर देश की मरते दम तक सुरक्षा कर सकता है।

राजीव की पोस्टिंग दिल्ली में ही थी, पर आर्मी से सम्बंधित गुप्त कार्यों के लिए वह अक्सर इधर-उधर जाता रहता था। एक बार फिर भारत-पाकिस्तान युद्ध के आसार बन रहे थे। गुप्तचर विभाग के अनुसार पाकिस्तान इस बार सिर्फ

कश्मीर ही नहीं, बल्कि पंजाब और राजस्थान के बॉर्डर से भी हमला करने की साजिश कर रहा है। हालाँकि आधिकारिक तौर पर ऐसा कोई ऐलान नहीं था, पर भारतीय अधिकारियों का मानना था कि पाकिस्तान का कोई भरोसा नहीं है, पिछली हार का बदला लेने के लिए वह किसी भी तरह के छल-कपट का सहारा ले सकता है। हो सकता है वो बिना किसी घोषणा के हमला कर दे।

राजीव की इन सभी गतिविधियों में बेहद दिलचस्पी थी। वह दिन-रात फोन और वायरलेस पर इधर-उधर हो रही संदिग्ध बातों का निरिक्षण करता रहता था। वह फील्ड में भी निकलने लगा था। आर्मी के साथ उसने कश्मीर में कई पाकिस्तानी घुसपैठियों के ठिकानो का भंडाफोड किया।

वाकई अब मास्टर बेनिलाल को अपने बेटे पर फक्र हो रहा था।

13

अहसान और सलीमा मुहब्बत में गिरफ्तार हो चुके थे। पर सलीमा ने अहसान को उसकी मंजिल से भटकने नहीं दिया। उसने पूरा ख्याल रखा कि अहसान पढाई करे और उसके पीछे ज्यादा समय बर्बाद न करे। अंततः उसकी मेहनत रंग लाई। अहसान आर्मी की लिखित परीक्षा में पास हो गया। अब बारी थी, शारीरिक परीक्षा की, पर अहसान उसके लिए फिक्रमंद नहीं था।

उसने आसानी से उस आखिरी बाधा को पार किया और चार महीने बाद उसके घर भारतीय आर्मी का खत आ गया। वह चुन लिया गया था।

अम्मी-अब्बू खुश तो थे, पर अब बेटा घर से दूर चला जायेगा ये सोचकर दुखी भी थे।

उस वक्त तो जैसे अहसान ने घर में बम ही फोड दिया, जब उसने सलीमा के बारे में सबकुछ सच-सच बता दिया।

"तो अब तू इतना बड़ा हो गया है कि खुद अपनी बेगम चुनेगा?" अम्मी बिखर पड़ीं।

"वो बहुत अच्छी लड़की है, अम्मी।" अहसान शरमाते हुए बोला।

"अच्छा!" अम्मी ने उसका कान खींच लिया, फिर अब्बू पर चिल्लाई- "देखा? आपके साहेबजादे कॉलेज जाकर इश्क फरमा रहे थे।"

अब्बू हंस दिए- "मुझे तो फक्र है अपने बेटे पर। इश्क फरमाते हुए पढ़ाई भी करी और आर्मी में भर्ती भी हो गया। मै तो आज ही जाता हूँ, कादिर भाई के पास..."

"कौन कादिर भाई?"

"अरे सलीमा के अब्बू, और कौन? निकाह की बात करके तारीख निकालते हैं।" कहकर वो उठ खड़े हुए।

"ऐसे कैसे तारीख निकल आएगी?" अम्मी तुनककर बोली- "अभी तो मैंने लड़की को देखा भी नहीं है। देख अहसान- अगर सलीमा मुझे पसंद आई तभी तेरा निकाह होगा वरना..."

"मंजूर है-अम्मी!" अहसान मुस्कराया।

फिर क्या था? पूरा परिवार कादिर के घर पहुंचा। वे तो पहले से अहसान के कायल थे।

"हमें तो इस रिश्ते से बहुत खुशी होगी।" वे बोले।

"पर मैंने आपकी बेटी को देखा भी नहीं है।" अम्मी जल्दी-से बोली।

कुछ ही देर में सलीमा अपनी अम्मी के साथ वहां पहुंची। सलीमा को देखते ही अहसान की अम्मी के चेहरे पर मुस्कान आ गई।

उसके बाद बेहद धूम-धाम से दोनों का निकाह कर दिया गया।

निकाह तो हो गया, पर अब अहसान को राजस्थान जाना था, क्योंकि उसकी पहली पोस्टिंग राजस्थान के बॉर्डर पर थी।

"हम भी साथ चलेंगे।" सलीमा उसके गले में बाहें डालकर बोली।

"कहाँ?"

"बॉर्डर पर आपके साथ।" वह मुस्कराई।

"आप क्या वहां पर मक्खियाँ मारेंगी?"

"कुछ भी मारें या न मारें पर आपके साथ रहूंगी।" वह गंभीर स्वर में बोली।

"मजाक कर रही हो?"

"हमारी शक्ल से ऐसा लग रहा है?"

"आपकी शक्ल से तो एक शायरी याद आ रही है। गौर फरमाइए-

हसरत है सिर्फ तुम्हें अपना बनाने की,

और कोई ख्वाहिश नहीं इस दीवाने की,

शिकवा नहीं तुमसे पर खुदा से है,

क्या ज़रूरत थी तुम्हें इतना खूबसूरत बनाने की?"

सलीमा खिलखिलाकर हंस दी। अहसान ने उसे बाहों में भर लिया।

"आपकी बातें इतनी प्यारी है। आपको देखे बिना हम एक दिन भी नहीं रह सकते।"

इस बार अहसान ने उसे ध्यान-से देखा और समझ गया कि उसने कुछ तो फैसला कर लिया है। इसलिए वह प्यार-से समझाते हुए बोला-

"देखिये- आर्मी वाले जंग पर अपनी बीवियो को नहीं ले जाते।"

"ठीक है! हमें कही आस-पास ठहरा देना।"

"कहाँ?"

"कही भी! आस-पास कोई तो गाँव होगा।"

"ओह! तो लखनऊ की शहजादी, अब राजस्थान के गाँव में रहेगी?"

"जहाँ हमारे शहजादे वही हम।" सलीमा ने प्यार-से उसका कंधा सहलाया।

"नहीं!" अहसान गंभीर हो गया। "ये नहीं हो सकता। आप वहां अकेले कैसे रहेंगी?"

"क्यों नहीं रह सकते?" सलीमा एकदम से उखड़ गई। हमें पता है आपसे इतनी दूर हम नहीं रह सकते। आस-पास रहेंगे तो दिल में कुछ तो हौसला रहेगा। कभी-कभी आप मिलने भी आ सकते हैं।

"वहां कहाँ छुट्टी मिलेगी?"

"हमें कुछ नहीं पता। हम तो जा रहे हैं अपना सूटकेस लगाने।"

उसके बाद दोनों में बहुत बहस हुई। पर सलीमा अपनी बात पर अड गई थी।

अहसान ने अपनी और सलीमा दोनों की अम्मी से बात करी और उसे समझाने को कहा।

"मैं कोशिश करूंगी।" सलीमा की अम्मी बोली- "पर वो बहुत जिद्दी है। अपने अब्बू पर गई है, नहीं मानेगी।"

और वही हुआ। सलीमा ने पूरे घर को सिर पर उठा लिया। उसका फैसला अंतिम था- उसे अहसान के साथ जाना था।

अंततः अहसान सहित सभी को घुटने टेकने पड़े।

तय ये हुआ कि सलीमा की अम्मी भी उनके साथ जायेंगी और वे दोनों राजस्थान के एक गाँव राहतगढ़ में रहेंगी। वहां कादिर के कुछ रिश्तेदार थे, जिनसे उन्होंने मदद मांगी।

एक हफ्ते बाद वे तीनों राहतगढ़ में थे। उनके रिश्तेदारों की मदद से उन्हें रहने के लिए एक बढ़िया घर मिल गया था। साथ में हफीज़ नामक एक सेवक भी मिल गया, जो कि घर की देखभाल करता था।

हफीज़ एक अनोखा ही इंसान था। उसका कद साढ़े छः फिट था। गर्दन ऊँट की तरह लंबी थी और उसकी बातें एकदम बचकाना होती थीं। अहसान को उससे मिलकर बेहद मजा आया।

"हफीज़ भाई!" चाय पीते हुए अहसान बोला।

"बोलिए सरकार।"

"जब मैं जंग पर जाऊँगा तो अपनी भाभीजान और उनकी अम्मी का ख्याल रखियेगा।"

"ये भी कोई बोलने वाली बात हुई। आप नहीं भी बोलेंगे तो भी अपुन ख्याल-व्याल रखेंगे।"

"भाभीजान को गुस्सा बहुत आता है।" उसने सलीमा की तरफ शरारती नज़रें डालकर कहा- "हो सकता है- कुछ थप्पड़ खाने पड़ जाएँ।"

"अरे बाप रे!" हफीज़ का हाथ झट से उसके गाल पर चला गया।

"अभी से डर गए?"

"नई-नई! कौन साला थप्पड़ से डरता है? अपुन तो बम और गोले से भी नहीं डरते।"

"आपकी भाभी के थप्पड़ों के सामने बम-गोलों की क्या औकात?"

"सच्ची?" हफीज़ भयभीत हो गया।

सलीमा की अम्मी हंस दी।

"बस भी करिये।" सलीमा ने अहसान को घूरकर देखा। "आप फ़िज़ूल ही इन्हें डरा रहे हैं। हफीज़ भाई! आपको हमसे डरने की बिलकुल भी ज़रूरत नहीं है।"

"ठीक है! आप कहती हैं भाभी, तो अपुन नहीं डरेंगे।"

दो दिन बाद अहसान अपनी पोस्टिंग की तरफ रुखसत हो गया।

14

अकबर हुसैन!

राहतगढ़ में रहने वाला एक व्यापारी।

शाम को ही वो शहर से मसाले लेकर लौटा था। उसका यहीं काम था। थोक में शहर से मसाले खरीदकर दूर-दराज के गाँवों में उन्हें बेचना।

उसकी मुख्य आय राहतगढ़ से ही होती थी, क्योंकि वो एक काफी बड़ा गाँव था और वहां मसालों की खपत अच्छी-खासी थी।

अकबर घर में अकेला ही रहता था। रात को खाना खाने के बाद वो अपने कमरे में आ गया।

फिर उसने घर के सारे खिड़की-दरवाजे बंद किये और फिर बैड के नीचे से एक बड़ा-सा बक्सा बाहर निकाल लिया। बक्से के अंदर से उसने एक बड़ा-सा ट्रांसमीटर निकाल लिया। उसमे विभिन्न तार इत्यादि जोड़ने के बाद उसने सम्बन्ध स्थापित करने की कोशिश शुरू करी। कुछ देर में दूसरी तरफ से आवाज़ आई-

"हेलो...हेलो...लाहौर ट्रेडर्स हियर!"

"राजस्थान सिल्क दिस साइड।" अकबर बोला- "क्या आप मुझे सुन सकते हैं? ओवर!"

"हां! हम आपको सुन सकते हैं। ओवर!"

"आप राहतगढ़ माल लेने कब आने वाले हैं?"

"जब भी माहौल ठीक हो। आप ही बताइए- कब आंए?"

"माहौल अच्छा है। सारे व्यापारियों का ध्यान पहाड़ों के बाजार की तरफ है, किसी का भी ध्यान रेगिस्तान पर नहीं है। मेरे ख्याल से आप एक-दो हफ्ते में माल लेने इस तरफ आ सकते हैं। ओवर!"

"ठीक है! जानकारी का शुक्रिया। हम जल्दी ही तैयारी करते हैं। ओवर एंड आउट!"

उसके बाद अकबर ने ट्रांसमीटर ज्यों का त्यों बक्स में रखकर बैड के नीचे सरका दिया।

राजीव ने हैडफोन हटाये और अपने साथी कैप्टन मनोज से बोला-

"क्या ख्याल है?"

"कुछ तो भारी गडबड है।" मनोज भी हैडफोन हटाकर बोला।

"लाहौर से क्या कोई आता है- सिल्क का कपड़ा खरीदने राजस्थान में?"

"मुझे तो नहीं लगता, राजीव। और राजस्थान में कौन-सा सिल्क मिलता है? वैसे भी पिछले युद्ध के बाद से पाकिस्तान के साथ इस तरह के व्यापार आदि लगभग बंद ही हैं।"

"मै मजाक कर रहा था।" राजीव मुस्कराया।

"म...मजाक?"

"तुम्हें क्या लगता है- वो लोग वाकई कोई व्यापारी थे?"

"शक तो मुझे भी है, पर यकीन से क्या कह सकता हूँ?"

"हमारे काम में शक के सहारे ही आगे बढ़ा जाता है।" राजीव टहलते हुए खिड़की पर पहुंचा। उसके शरीर पर आर्मी की वर्दी खूब फब रही थी। छाती पर तीन सितारे भी चमक रहे थे। वह बाहर देखते हुए बोला-

"ये वार्तालाप कपड़ों के व्यापारियों के बीच नहीं था। बल्कि पाकिस्तानी जासूसों या आर्मी वालों के बीच था। उनका एक साथी राजस्थान में मौजूद है। लोकेशन शायद राहतगढ़ है। और इनकी बातों से लगता है- ये लोग भारत पर राजस्थान बॉर्डर की तरफ से हमला करने की तैयारी कर रहे हैं क्योंकि सभी भारतीयों का ध्यान पहाडों के बाजार यानि कश्मीर की तरफ होगा, ये लोग आसानी से राजस्थान की तरफ से घुस बैठेंगे।"

मनोज के चेहरे पर हैरानी के भाव थे। "ओह! अब समझ में आया। ये लोग कोड्स में बाते कर रहे थे।"

"ज़ाहिर है!"

"हमें...हमें तुरंत हाई कमांड को अलर्ट कर देना चाहिए।" मनोज विचलित हो उठा।

"उससे कोई फायदा नहीं होगा।"

"क्यों?"

"बिना पुख्ता सबूत के वो कोई निर्णय नहीं लेंगे। कश्मीर पर ही हमेशा मुख्य खतरा रहा है। वहां पर थल-बल कम करने का फैसला कोई भी इतनी आसान से नहीं लेगा, मैं खुद भी नहीं। अभी ये रिपोर्ट भेज देते हैं, फिर हमें राहतगढ़ जाकर इस पूरे षड़यंत्र के बारे में मालूम करना पड़ेगा।"

"ओके कैप्टन!" मनोज उत्साहित हो उठा- "मैं तैयार हूँ। आज ही निकलते हैं।"

राजीव ने हामी भरी।

16

अहसान आर्मी बटालियन में शामिल हो गया था। वे कुल पचास सैनिक थे। उनमे पांच कैप्टन थे और एक मेजर। मेजर का नाम था- अजीत खुराना। अधिकतर सैनिक राजस्थान और पंजाब के हिंदू और सिख थे। अहसान के आलावा वहां सिर्फ एक और मुस्लिम था जिसका नाम था अमजद अली।

मेजर खुराना सभी सैनिको से बारी-बारी अपने टैंट में मुलाकात कर रहा था।

अहसान की बारी भी आई। अंदर दाखिल होकर उसने जोरदार सैल्यूट मारा।

"नाम?" मेजर ने कडकती आवाज़ में पूछा।

"अहसान अख्तर, सर!"

"हूँ! आर्मी ज्वाइन करने की कोई खास वजह?"

"देश की सेवा करने के अरमान हैं, सर।"

"गुड! हमारा सबसे बड़ा दुश्मन कौन है?"

"हमारा पडोसी मुल्क- पकिस्तान!"

"उनकी सेना में सभी मुसलमान होते हैं। खुद एक मुसलमान होते हुए क्या तुम एक दूसरे मुसलमान पर गोली चला सकोगे?"

"मेरे लिए देश के दुश्मन का धर्म कोई महत्त्व नहीं रखता, सर। अपने देश की धरती को गलत नज़रों से देखने वाले हरेक इंसान पर गोली ही चलाना मेरा धर्म है।"

मेजर ने उसे ध्यान से देखा। अहसान का चेहरा सख्त था। नज़रें सधी हुई थीं।

मेजर ने सिर हिलाया। "तुम जा सकते हो, जवान।"

फिर दिन भर पूरी सेना की ट्रेनिंग हुई। उन्हें रेगिस्तान में युद्ध लड़ने की खास शैली के बारे में सिखाया गया।

रात होने पर वहां आराम का माहौल बन गया। सभी सैनिक व्हिस्की पीते हुए बाते करने लगे।

"तुम नहीं पियोगे, अहसान?" हंसते हुए वीर सिन्ह नामक एक सैनिक ने पूछा।

"नहीं यार! मैं तो बिना पिए ही मौज में रहता हूँ।"

"अच्छा!"

"हां! इसी बात पर एक शायरी याद आ रही हैं।"

"अच्छा हाँ! आप तो भाई नवाबों के शहर से हैं।" फिर वीर सिन्ह चारों तरफ देखते हुए चिल्लाया- "अरे! इधर आ जाओ भाई, हमारे लखनवी नवाब कुछ सुना रहे हैं।"

कई सैनिक नशे में झूमते हुए वहां पहुंचे। अहसान की तो लॉटरी निकल गई। उसे इतने सारे श्रोता कभी पहले नहीं मिले थे। वह शुरू हो गया-

"जिंदगी लंबी है दोस्त बनाते रहो,

दिल मिले ना मिले आँख लड़ाते रहो ।

ताज महल बनवाना तो बहुत महंगा है,

पर हर गली में एक मुमताज़ बनाते रहो।"

"वाह-वाह!" कई एक साथ बोले। कई पेट पकडकर हंस पड़े।

अहसान का मनोबल कुछ और बढ़ गया।

"उनकी गली से गुज़रे अजीब इत्तफाक था

उनकी गली से गुज़रे अजीब इत्तफाक था

उन्होंने फूल फेंका

पर गमला भी साथ था।"

उसने लगातार चार-पांच शायरी और सुना डाली। लोगों का हंसते-हंसते बुरा हाल हो गया। हंसी की आवाज़ सुनकर कई सैनिक वहां और जमा हो गए।

इस तरह शाम बीत गई। खाना खाकर सभी टैंट में जाकर सो गए।

पर अहसान की आँखों में नींद नहीं थी। उसे बार-बार सलीमा की याद आ रही थी। वह उठकर यूँ ही टहलने लगा।

रात के इस माहौल में उसे रेगिस्तान काफी रोमांचक और रहस्यमय लगा। उसे वहां टहलने में एक अलग ही अनुभूति हो रही थी, शायद ऐसा इसलिए भी था, क्योंकि उसने जिंदगी में पहली बार रेगिस्तान देखा था।

अभी वह इसी तरह रेत में भटक रहा था कि उसे दूर कहीं से कुछ आवाज आई। पहले तो अहसान ने ध्यान नहीं दिया, पर जब वह आवाज़ रह-रहकर आने लगी तो उसने चारों तरफ नज़र दौडाई।

फिर उसे बहुत दूर एक साया धीरे-धीरे बढ़ता हुआ दिखाई दिया। रात के इस अँधेरे में उसे कुछ समझ नहीं आया कि वाकई वो कोई जीव है या सिर्फ उसका वहम।

खतरे की परवाह किये बगैर वह उस तरफ चल दिया।

करीब पन्द्रह मिनट चलने के बाद उसे वह चीज़ कुछ साफ़ दिखाई देने लगी।

वह एक ऊँट था और उसके ऊपर एक सवारी भी थी। रात के इस समय बॉर्डर के पास उसकी उपस्थिति उसे संदिग्ध लगी।

अहसान ने अब कुछ तेज़ चलना शुरू किया। कुछ देर में वह ऊँट के पीछे पहुंच गया था।

"ठहर जाओ!" उसने तेज़ आवाज़ में कहा।

ऊंट सवार ने पलटकर देखा, पर अहसान को उसकी शक्ल नहीं दिखाई दी।

"कौन है?" अहसान ने पूछा।

ऊँट सवार ने बिना कोई जवाब दिए ऊँट को तेज़ी-से दौड़ा दिया। अहसान का माथा ठनका। यकीनन कुछ गडबड है- उसने सोचा और उसके पीछे दौड़ लगा दी। पर रेत में ऊँट से मुकाबला करना नामुमकिन था। वह दूर होता चला गया।

अहसान के पास चाकू के आलावा कोई हथियार भी नहीं था। रायफल होती तो शायद काम आ जाती।

चंद मिनटों में ऊँट रेत के टीलों को पार करते हुए उसकी आँखों से ओझल हो गया।

"ऊँट की औलाद! कहीं तो रुकेगा।" बडबडाते हुए अहसान ने भी पीछा नहीं छोड़ा।

दस मिनट दौड़ने के बाद उसे फिर से ऊँट दिखाई दिया। सामने एक खँडहर दिखाई दे रहा था। ऊँट बाहर ही खड़ा था।

अहसान हाँफते हुए ऊँट के पास पहुंचा। उसने अपना चाकू निकाल लिया था। ऊँट के आस-पास उसका सवार दिखाई नहीं दिया।

"क्यों रे ऊँट भाई?" उसने उसे थपथपाया। "तेरा मालिक कहाँ गया?"

ऊँट जुगाली कर रहा था। अहसान ने चारों तरफ देखा, फिर खँडहर पर नज़र डाली।

रात की चांदनी में वह बेहद भयानक लग रहा था। दूर-दूर तक किसी भी प्राणी के होने के आसार नज़र नहीं आ रहे थे। पर अहसान को यकीन था कि ऊँट सवार अवश्य ही इस खँडहर में जा छिपा है।

अहसान के दिल में किसी भी तरह का भय नहीं था। उसे यकीन था वह चाकू और अपनी ताकत के बल पर उसे अवश्य पकड़ लेगा।

खंडहर के विशाल दरवाजे पर झाडिया थीं। अहसान उनमे से होते हुए सतर्कता से अंदर आ गया। खँडहर में कोई छत नहीं था, सिर्फ चार दीवारे थीं और उनमे बड़े-बड़े द्वार थे। उसने पूरे खँडहर में शिनाख्त करी पर उसे वहाँ कुछ भी नहीं मिला। फिर वह खँडहर के पीछे गया और पूरा चक्कर लगाकर वापस ऊँट के पास आ पहुंचा।

तभी अचानक रेत फाड़कर एक मानव उठ खड़ा हुआ। इससे पहले कि अहसान उस पर हमला करता, उसने अहसान के सिर पर एक मोटा लट्ठ दे मारा। अहसान लहराकर रेत में जा गिरा।

वह रहस्यमय मानव कुछ पल उसे देखता रहा, फिर ऊँट पर सवार होकर तेज़ी से कूच कर गया।

17

सुबह के वक्त कैप्टन मनोज और राजीव राहतगढ़ पहुंच चुके थे। क्योंकि दोनों इंटेलिजेंस ऑफिसर थे, इसलिए वह वहां किसी पर अपनी असलियत ज़ाहिर नहीं कर सकते थे। आर्मी वालों ने गुप्त तरीके से उनके रहने के लिए एक घर दिलवा दिया।

कुछ देर आराम करने के बाद दोनों चाय पीते हुए घर की छत पर पहुंचे।

चारों तरफ कच्चे-पक्के घर दिखाई दे रहे थे। मिट्टी की गलियां थीं और उन पर बैलगाडियां आदि दिखाई दे रही थीं। गाँव के बच्चे इधर-उधर घूमते, भागते और खेलते नज़र आ रहे थे।

"मस्त जगह है ये।" अंगड़ाई लेते हुए मनोज ने कहा।

राजीव ने चाय की चुस्की लेते हुए सिर हिलाया। वाकई दिल्ली जैसे तेज़ शहर के बाद यहाँ एक अनोखी-सी शांति मिल रही थी।

"मेरा तो मन कर रहा है यहीं सैटल हो जाऊं।"

"अच्छी बात है! यहीं किसी गाँव की गोरी से शादी करके खेती-बाड़ी कर लेना।"

"सच में ऐसा हो जाए तो मजा आ जाए। चलो अभी चलकर मेरे लिए एक गोरी ढूढते हैं।"

"ज्यादा मस्ती नहीं! भूलो मत हम कितने संवेदनशील मिशन पर आये हैं।"

"यार! मैं तो मजाक कर रहा था। तो फिर प्लान क्या है?"

"फिलहाल तो कुछ नहीं। गाँव का जायजा लेते हैं।"

"उस वायरलेस को क्या हम ट्रेस नहीं कर सकते?"

"बेहद मुश्किल है।" कहकर राजीव ने चाय खत्म करी और नीचे की तरफ चल दिया।

नहा-धोकर दोनों तैयार हुए और बाहर आ गए। हालाँकि उन्होंने साधारण कपड़े पहने थे, फिर भी उनके चेहरे से पता चल रहा था कि वह शहरी हैं। गाँव के लोग उन्हें उत्सुकता के साथ देख रहे थे।

"मेरे ख्याल से हमें कपड़ों के व्यापारियों से मुलाकात करनी चाहिए।" मनोज ने सुझाव दिया।

"कोड्स में हुई बातों में सच्चाई होना मुश्किल है।" राजीव सपाट स्वर में बोला।

"ओके! एक और आइडिया है।"

"बोलो कैप्टन!"

"यहाँ के सभी मुसलमानों से पूछताछ करते हैं।"

"हम्म! टारगेट तो ठीक है, पर राहतगढ़ में करीब तीन हज़ार मुस्लिम रहते हैं। किस-किस से मिलेंगे? वैसे मैं इस बात को नकारता तो नहीं, पर फिर भी मुझे लगता है- देशद्रोही कोई भी हो सकता है। हिंदू भी!"

"आपके विचारों का तो मैं शुरू से कद्रदान हूँ, राजीव भाई। पर अब हम करें क्या?"

"तुम्हारे लिए गोरी ढूढते हैं।" राजीव ने हंसते हुए कहा।

इस तरह दोनों राहतगढ़ में इधर-उधर घूमते रहे। उन्होंने बाज़ार में यूँ ही लोगों से पूछताछ करी, पर कोई खास बात पता नहीं चली।

दोपहर में वो अपने मकान में वापस आ गए और अपने खास वायरलेस यंत्र को ऑन करके आस-पास के फोन/वायरलेस की बातें ट्रेस करने लगे। शाम तक उन्होंने वहीं काम किया पर कोई संदिग्ध बात पता नहीं चली।

"चलो अब सो लेते हैं। रात को जागना पड़ेगा।" राजीव बोला।

18

दूसरी तरफ आज ही की सुबह अहसान बड़ी मुश्किल से सोकर उठा। अमजद उसे उठा रहा था।

अहसान उठा। उसकी आँखें लाल हो रही थी। उन्हें देखकर अमजद तुरंत बोला-

"क्या बात है जनाब? रात भर सोये नहीं क्या? भाभीजान की याद आ रही होगी।"

अहसान को सुनकर अच्छा ही लगा, नहीं तो उसे ही कुछ बहाना बनाना पड़ता।

"सही कह रहे हो दोस्त। शादी के बाद बीवी के बिना सोना बड़ा मुश्किल है।"

"हे-हे!" अमजद ने अपने पीले दांत दिखाए- "अभी नया-नया निकाह हुआ है न। चार-पांच साल बाद पूछूँगा, तब बताना कि अकेले सुकून की नींद आती है या बीवी के साथ। हे-हे-हे!"

अहसान उठा और नित्य कार्यों से निपटने लगा। अभी-भी उसके सिर में पीड़ा हो रही थी। आर्मी-कट बालों में चोट को छिपाना मुश्किल था, इसलिए उसने झटपट तैयार होकर कैप लगा ली।

कुछ देर में उन लोगों की ट्रेनिंग शुरू हो गई।

दोपहर के वक़्त मेजर खुराना ने सबको बुलाया।

"जवानों! एक खास सूचना है। इंटेलिजेंस से खबर मिली है कि पाकिस्तान राहतगढ़ की ओर से भारत पर हमला कर सकता है। हालाँकि ये खबर पुख्ता नहीं है, पर हमें तैयार रहना होगा। हमें फ़िलहाल कोई और मदद नहीं मिलेगी। अगर अचानक हमला हुआ तो हमें ही उससे निपटना होगा। तो आप तैयार हैं?"

"यस सर!" सभी देशभक्तों के मुंह से बुलंद आवाज़ निकली।

बाद में अमजद अहसान से बोला- "भाई, मुझे तो लगता है- हम लोगों की कब्र इसी रेत में बनेगी।"

"फिर तो बहुत मजा आएगा।" अहसान आँखे फैलाकर बोला- "कभी गर्म कभी ठंडी, न कोई शोर न कोई परवाह। शांति से हमेशा यही पड़े रहेंगे।"

"मस्त बात बोली है, लखनवी।" अमजद ने जोश के साथ ताली मारी।

19

रात हो गई थी। खाना-वाना खाकर राजीव और मनोज वायरलेस ऑन करके बैठ गए।

करीब दस मिनट बाद ही उन्हें कुछ संदिग्ध वार्तालाप सुनाई दिया।

"आज रात कुछ माल भेज रहे हैं। ओवर!"

"मुझे उसका इंतज़ार था। आगे का धंधा उसके बाद ही चालू हो पायेगा। ओवर!"

"हूँ! माल रात एक बजे पहुंचेगा। ओवर!"

उसके बाद आवाज़ आनी बंद हो गई।

"क्या हम इस वक्त इसको लोकेट नहीं कर सकते?"

"अनुमान लगाएं तो इनमे से एक वायरलेस राहतगढ़ में ही होना चाहिए।" राजीव मशीन पर ग्राफ को देखते हुए बोला- "पांच किलोमीटर के घेरे में।"

मनोज सोच में पड़ गया।

"परेशान मत हो।" राजीव बोला- "लोकेट करने की ज़रूरत नहीं है। यकीनन पाकिस्तान की तरफ से राहतगढ़ में छिपे उनके आदमियों के लिए कुछ ज़रूरी सामान आ रहा है..."

"हथियार से ज़रूरी और क्या हो सकता है?" मनोज बीच में बोला।

"समझदार होते जा रहे हो, कैप्टन!"

"आपकी मौजूदगी का असर है। पर ये तो बताओ- उनका इरादा क्या हो सकता है?"

"अभी तो कुछ अंदाजा लगाना मुश्किल है। जो भी है- पाकिस्तान छल की नीति अपनाकर हमारे देश पर हमला करने की तैयारी कर रहा है, और हमें उसे रोकना है।"

मनोज ने गुस्से से दांत पीसे। "दुश्मन से दो हाथ करने के लिए हाथों में खुजली हो रही है।"

"खुजली दुश्मन के लिए बचाकर रखो। फ़िलहाल हमें राहतगढ़ के बाहर पाकिस्तान बॉर्डर की ओर जाकर तैनात हो जाना चाहिए। शर्तिया तौर से रात को हमें कोई गुप्त काफिला दिखाई दे जायेगा।"

"क्या हम अकेले इतने बड़े क्षेत्र को कवर कर पाएंगे?"

"चिंता मत करो। आर्मी के कुछ जवान हमारी मदद करेंगे। मैं अभी मेजर खुराना से बात करता हूँ।"

उसके बाद राजीव ने वायरलेस से मेजर से बात करी। मेजर ने मदद के लिए पन्द्रह सैनिक भिजवा दिए।

राजीव ने उन्हें आदेश दिया-

"आपको उन पर हमला नहीं करना है। सिर्फ पीछा करना है, और बाकी लोगों को बताना है। असली खतरा उनके साथियों से है, जो राहतगढ़ में छिपे हैं। हमें उन सभी को एकत्रित होने देना है, उसके बाद ही..."

फिर राजीव के नेतृत्व में वे सभी राहतगढ़ के बाहर जगह-जगह छिपकर तैनात हो गए।

राजीव और मनोज भी राहतगढ़ के बाहर कुछ टीलों के पीछे छिपकर बैठ गए। सर्दी काफी थी। दोनों ने जैकेट पहनी थी। ऊपर से उन्होंने कम्बल भी ओढ़ लिए।

मनोज ने सिगरेट जलाने की कोशिश करी तो राजीव ने रोक दिया।

"सुलगती हुई सिगरेट का लाल रंग मीलों दूर तक दिखाई देता है।"

"अरे यार, अभी एक बजने में बहुत टाइम है। एक तो पी लूँ!"

"ओके!" राजीव ने आज्ञा दी।

सभी ठिठुरती रात में घुसपैठियों का इंतज़ार करते रहे। रात बारह बजकर चालीस मिनट पर वातावरण में उल्लू की आवाज़ गूंजने लगी।

"लगता है वो आ गए।" मनोज बोला।

उल्लू की आवाज़ किसी सैनिक की तरफ से गुप्त संकेत था कि उसे कुछ संदिग्ध लोग दिखे हैं। राजीव और मनोज छिपते हुए आवाज़ की दिशा में आगे बढ़ गए।

कुछ ही देर में उन्हें भेड़ों का एक काफिला नज़र आया। उनके साथ दस-बारह इंसान भी थे। इंटेलिजेंस के दोनों अफसर व सेना के जवान उचित फासला रखकर उनका पीछा करने लगे।

काफिला राहतगढ़ की तरफ बढ़ रहा था।

कुछ ही देर बाद उन्हें वह काफिला एक दाढ़ी-मूंछ वाले अधेड़ व्यक्ति से मिलता हुआ नज़र आया। वह कोई और नहीं अकबर हुसैन था।

"लगता है- यहीं है इनका जासूस।" मनोज ने कहा।

"मेरे ख्याल से उनका कोई और साथी नहीं आने वाला। हमें हमला कर देना चाहिए।" कहकर राजीव ने मुंह से एक खास आवाज़ निकाली और अगले ही पल-

सभी जवानों ने काफिले पर फायरिंग शुरू कर दी। काफिले में एकदम से भगदड़ मच गई। कुछ चीखें भी निकलीं। उस तरफ के लोग भेड़ों की आड़ में हो गए। भेड़ें एक तरफ भागने लगी और घुसपैठिये भी उनके सहारे बचते हुए भागे। अकबर हुसैन कहीं गायब हो गया था।

जवानों ने अपनी राइफलों को रीलोड किया और दुबारा फायरिंग करी। पर अब तक काफिले के लोगों ने भी पोजिशन ले ली थी और उन्होंने भी अपनी बन्दूको से जवाब देना शुरू कर दिया।

राहतगढ़ में जंग छिड़ गई थी। गाँव के लोगों की नींद खुल चुकी थी, पर किसी ने भी बाहर निकलने की हिम्मत नहीं करी। सभी सहमे हुए अपने घरों में बैठे थे।

राजीव लगातार अकबर हुसैन को ढूंढ रहा था। उसके हिसाब से उसे पकड़ना सबसे ज़्यादा ज़रूरी था। टीलों के पीछे छिपते हुए राजीव काफिले की तरफ बढ़ने लगा। फिर उसे अकबर हुसैन दिखाई दिया। वह एक झोपड़े के पीछे छिपा था।

राजीव ने फायर रोकने का हुक्म दिया। सभी की रायफलें शांत हो गई। इधर मौका देखते ही अकबर हुसैन झोपड़े के पीछे से गली की तरफ भागा।

राजीव मनोज से बोला- "मुझे कवर करो।" और फिर वह अकबर की तरफ भागा।

मनोज ने काफिले की तरफ धुआंधार फायरिंग शुरू कर दी। कोई भी राजीव पर फायर न कर सका।

अब राजीव अकबर के पीछे गली में पहुंच चुका था।

अकबर बेहद तेज़ भाग रहा था। राजीव भी कम नहीं था। वह चाहता तो उस पर फायर कर सकता था, पर वह उसे जिंदा पकड़ना चाहता था।

'टांग पर तो फायर किया ही जा सकता है।' उसने सोचा और रुककर एक फायर कर दिया। पर अकबर भी सतर्क था। पीछे से भागने की आवाज़ बंद होते ही, वह भी एक तरफ छिप गया।

राजीव ने फिर भी फायर किया और उसकी तरफ बढ़ने लगा।

अकबर को लगा इस तरह वह पकड़ा जायेगा, इसलिए उसने भी पीछे फायर कर दिया। राजीव झट से एक बैलगाडी की आड़ में हो गया।

अब अकबर ने उसे मौका नहीं दिया और लगातार पीछे फायर करते हुए भागता चला गया।

जब फायरिंग रुकी तो राजीव ने झांककर देखा।

गली में दूर-दूर तक कोई भी दिखाई नहीं दिया।

"वो भाग निकला।" लौटकर राजीव ने हताश स्वर में कहा।

"कोई बात नहीं, कैप्टन।" मनोज बोला- "हमारे हाथ फिर भी बड़ी सफलता लगी है। देखो- सारे हथियार पकड़े गए।"

वहां हथियारों से भरे कई बक्से रखे हुए थे। आस-पास कई लाशें पड़ी थीं। सैनिक उन्हें उठाकर एक जगह डाल रहे थे।

"कोई जिंदा बचा?" राजीव चिंतित था।

"नहीं!"

"उस जासूस का पकड़ा जाना बेहद ज़रूरी था। उससे हमें काफी जानकारी मिल सकती थी।"

"उसे ढूढने की कोशिश करते हैं। होगा तो गांव में ही कहीं।" मनोज ने कहा और फिर वे लोग सेना के जवानों के साथ राहतगढ़ में उसे ढूढने लगे। पर उस जासूस को पकड़ने में वो नाकामयाब रहे।

20

अगले दिन- शाम का वक्त।

अँधेरा छा चुका था। अकबर हुसैन एक जीप में सवार था। उसे वह राहतगढ़ से बाहर की ओर ले जा रहा था। उसके चेहरे पर दृढ निश्चय के भाव थे। आँखों से मानो शोले बरस रहे थे। बेहद खूंखार दिख रहा था वो इस समय।

जीप को तूफानी रफ़्तार से वो रोड पर दौड़ाए लिए जा रहा था।

आधे घंटे के अंदर वो धारमेर पहुंच गया। धारमेर राजस्थान का एक छोटा-सा गांव था, जोकि पाकिस्तान बॉर्डर के बेहद नज़दीक था।

अकबर हुसैन ने धारमेर के जंगल में पहुंचकर जीप रोक दी। रेगिस्तान के इस जंगल में चारों तरफ कटीले पेड़-पौधे थे। वहां मौत जैसा सन्नाटा छाया हुआ था।

अकबर जीप से उतरा और फिर पीछे की तरफ रखा बड़ा-सा बक्स खोल लिया। उस बक्स में अनगिनत हथियार थे। सबसे पहले उसने चार-पांच लैंड माइंस निकाल लीं। उन्हें लेकर वो जंगल में एक तरफ बढ़ गया और फिर कुछ दूर जाने के बाद रेतीली जमीन को खोदकर उन्हें लगा दिया।

इस तरह उसने कई लैंड माइंस और निकाली और उन्हें चारों तरफ जंगल में लगा दिया। फिर वह एक पेड़ पर चढ गया, साथ में उसने दो बोरियां भी ऊपर चढा दीं। पेड़ के ऊपर उसने बोरियों से मचान बना ली और फिर उस पर एक मशीनगन सैट कर दी।

फिर उसने नीचे आकर जंगल में जगह-जगह डाइनामाईट लगाना शुरू कर दिया और उसका ट्रिगर रस्सी से जोड़कर पेड़ों के नीचे बाँध दिया।

अभी वह जीप से कुछ हथगोले निकाल ही रहा था कि पीछे से आवाज़ आई-

"कौन-सी जंग लड़ने जा रहे हो, भाई?"

अकबर चौंककर पलटा और पलटते ही उसके चेहरे पर एक जोरदार मुक्का पड़ा। वह लडखडाता हुआ नीचे गिर गया। अब उसे अपने सामने दो आदमी खड़े दिखाई दिए। उनमे से एक को वह तुरंत पहचान गया- कल रात ही तो दोनों के बीच दौड़-भाग और फायरिंग हुई थी। वह राजीव था। ज़ाहिर है- उसके साथ दूसरा व्यक्ति मनोज था।

राजीव ने उसका गिरेबान पकड़कर खड़ा किया। मनोज ने उस पर रिवाल्वर तान रखा था।

"उस दिन तो बच निकले थे, पर आख़िरकार हाथ आ ही गए।" राजीव बोला- "अब तुम अपने लब्जो में पाकिस्तानी आर्मी का पूरा प्लान हमें बताओगे।"

"आप दोनों भारतीय सेना में हो?" अकबर ने पूछा।

"सवाल सिर्फ हम करेंगे।"

"बिलकुल करना, पर मैं आप लोगों को एक नायाब नज़ारा दिखाने वाला हूँ। इस जंगल में जगह-जगह बारूद बिछा हुआ है। कोई भी अंदर प्रवेश करेगा तो मारा जायेगा। और अगर किसी तरह बच गया तो उसे मैं भून डालूँगा।"

राजीव ने उसे पैनी नज़रों से देखा। "और ये सब इन्डियन आर्मी को नेस्तनाबूत करने के लिए है?"

अकबर ने उसे मुस्कराकर देखा।

अचानक ही दूर कहीं गडगडाहट की आवाज़ आने लगी। मनोज और राजीव ने चौंककर उस दिशा में देखा। अकबर ने तुरंत इस मौके का फायदा उठाया और मनोज आर राजीव पर कूद पड़ा।

अचानक हुए इस हमले की वजह से दोनों संभल नहीं पाए और गिर गए। अकबर ने तुरंत मनोज का रिवाल्वर अपने कब्जे में किया और फिर दोनों को उठने का इशारा किया।

"उठो और तुम जीप में पड़ी हथकड़ी लो और इसके हाथ जीप से बाँध दो।" उसने राजीव से कहा।

"तुम बच नहीं पाओगे।" राजीव उसे घूरते हुए बोला।

"बकवास बंद करो, वरना भेजा उड़ा दूँगा।" अकबर गुर्राया।

राजीव ने उसके आदेश का पालन किया। फिर अकबर ने एक और हथकड़ी ली और राजीव के हाथ भी जीप से बाँध दिए। उसके बाद वो तेजी से जंगल में आगे निकल गया और कुछ दूर जाकर उस पेड़ पर चढ गया जहाँ उसने मचान बनाई थी।

पेड़ पर उसने दूरबीन से देखा- कुछ दूरी पर दो टैंक जंगल की ओर बढे चले आ रहे थे। उनकी आवाज़ धीरे-धीरे वातावरण में गूंजने लगी थी।

अकबर ने मशीनगन संभाल ली, साथ में हथगोलों से भरा थैला भी खोल लिया। कुछ ही देर में टैंकों के साथ, आदमियों के दौड़ने की आवाज़ भी आने लगी।

लगभग दस मिनट बाद करीब तीस लोगों की सेना दो टैंकों के साथ थारमेर के जंगल में दिखाई देने लगी।

पर उन्हें पता नहीं था, वहां कौन उनका इंतज़ार कर रहा है।

उस जंग की शुरुआत तब हुई जब अकबर की लगाई लैंड माइंस फटी और एक टैंक हवा में कई फिट ऊपर उछल गया। पूरी सेना में भगदड़ मच गई।

"हमला!" किसी की आवाज़ आई और पैदल सैनिक तेजी-से जंगल के अंदर दौड़ने लगे।

मनोज और राजीव आश्चर्य से सारी आवाजें सुन रहे थे। अभी तक उन्हें कुछ पता नहीं चल रहा था कि वहां किसने हमला किया है? वो भारतीय सेना है या पाकिस्तानी?

सैनिकों ने दौड़ तो लगाई, पर कईयों के पैरों तले लैंड माइन आ गई, या किसी के पैर ने पेड़ पर बंधी रस्सी से डाइनामाईट को ट्रिगर कर दिया। उनके चीथड़े उड़ गए।

एक के बाद एक जंगल में विस्फोट होते चले गए। कुछ सूखे पेड़ों में आग गई, जिससे रात का अँधेरा कुछ कम हो गया। चारों तरफ तहलका मचा हुआ था। चीख पुकार की आवाजें आ रही थीं।

फिर भी कई सैनिक सही-सलामत थे और आगे बढे चले आ रहे थे। दूसरा टैंक भी भाग्यशाली था कि उसके नीचे कोई माइंस नहीं आई।

अकबर ने उनको आगे बढ़ता देखा तो वह विचलित हो उठा। उसने हथगोलों का थैला उठाया और एक के बाद एक सैनिको की तरफ फेंकता चला गया। जंगल में धमाके होते चले गए, और सैनिको की लाशें बिछती चली गई।

टैंक में बैठे सैनिक ने अकबर को देख लिया था। उसने पेड़ का निशाना लिया और फायर कर दिया। टैंक का निशाना ठीक उस शाख पर लगा जहाँ अकबर बैठा था।

शाख टूट गई और अकबर नीचे आ गिरा।

पर उसने तुरंत खुद को संभाला और मशीनगन से फायर करने लगा।

"हरामजादों!" वह चीखा- "तुम सबकी मौत मैंने तय करी है।"

कई सैनिक मारे गए, पर टैंक पर क्या असर होना था। उसकी तोप धीरे-से अकबर की तरफ घूमी और फायर हुआ।

अकबर के सिर पर जूनून अवश्य सवार था पर वह पूरी तरह से सावधान था। उसने तुरंत एक तरफ छलांग लगा दी।

पर टैंक का वार खाली नहीं गया। उसके गोले ने अकबर की जीप को शिकार बनाया। जीप धमाके का साथ एक तरफ पलट गई। मनोज और राजीव ने किसी तरह खुद को जीप के नीचे आने से बचाया।

"ग़नीमत है, आग नहीं लगी।" राजीव हाँफते हुए बोला। उसके हाथ से खून निकलने लगा था। "वरना जीप में पड़े बारूद के साथ हमारा भी क्रियाकर्म हो जाता।"

तभी मनोज की नज़र जीप में पड़ी एक रिवाल्वर पर गई।

"हो गया काम अब..." उसने तुरंत उसे उठाया और फिर दोनों की हथकड़ी पर फायर करके आज़ाद कर लिया।

फिर वे दोनों चुपचाप अकबर के पीछे पहुंचे, जोकि पेड़ के पीछे से टैंक पर फायर कर रहा था।

"बंद करो ये खूनी खेल।" राजीव ने उसके सिर पर रिवाल्वर टिका दिया।

"पागल मत बनो।" अकबर वहशी स्वर में चीखा- "वरना हम सब मारे जायेंगे।"

"मरोगे सिर्फ तुम..."

"अच्छा! गधों, सामने टैंक को देखो- उस पर लगे झंडे को पहचानों-"

मनोज और राजीव की नज़र स्वतः ही उस तरफ गई। टैंक पर उन्हें पाकिस्तान का झंडा दिखाई दिया। दोनों की बुद्धि को तेज़ झटका लगा। अभी तक वे मान कर चल रहे थे कि अकबर जिन पर हमला कर रहा है वे भारतीय सेना है। सोचते भी कैसे नहीं अकबर एक पाकिस्तानी जासूस जो ठहरा।

"तु...तुम ऐसा क्यों कर रहे हो? तुम हो कौन?" रहस्य से उलझते हुए राजीव ने पूछा।

तभी टैंक से एक और गोला फायर हुआ। जिस पेड़ के पीछे वे छिपे थे वो तबाह होकर गिरने लगा।

तीनों एक तरफ भागे। उसी समय दूसरी तरफ से फायर होने लगा। अभी-भी कुछ सैनिक जीवित थे जो टैंक के पीछे मोर्चा संभाले हुए थे। वे तीनों फायरिंग की चपेट में आने से बच गए।

"तुम अंडरकवर हो?" दूसरे पेड़ की आड़ में होते हुए मनोज ने अकबर से पूछा- "हमें पहले बता देते तो हम तुम्हारा साथ देते।"

"हां! पर तुम दोनों को समझाने का वक्त नहीं था, मेरे पास।" कहते हुए अकबर ने उनके तरफ हथगोलों का बैग बढ़ाया। "पर देर नहीं हुई है। अभी भी साथ दे सकते हो।"

उसके बाद तीनों ने हथगोलों और रिवाल्वरों से पाकिस्तानी सेना पर हमला शुरू किया।

आखिरकार मुसीबत बना टैंक हथगोलों की चपेट में आ गया और उसमे आग लग गई। बचे-खुचे सैनिक भी मारे गए।

"वो मारा!" अकबर उत्साह के साथ चीखा।

उसके बाद तीनों ने सतर्कता के साथ आगे बढ़कर दुश्मन का जायजा लिया। वहां कोई भी जिंदा नहीं दिखाई दिया। पाकिस्तान के हमले को उन्होंने विफल कर दिया था।

"अब बताओ- तुम कौन हो?" राजीव ने अकबर से कहा।

अकबर ने तुरंत अपनी दाढ़ी-मूछ हटा दी।

"भारतीय सैनिक- अहसान अख्तर!"

"अ...अहसान!" हैरत के मारे राजीव के मुख से चीख निकल गई। फिर उसने जेब से टॉर्च निकालकर उसके चेहरे पर रौशनी डाली।

"तु...तुम अहसान हो? चौक, लखनऊ से?" राजीव की आँखे फटने को तैयार थीं।

"तुम्हें कैसे पता?" अहसान भी चौंका।

"मैं...मैं राजीव हूँ, मेरे भाई।" राजीव के चेहरे पर हँसने और रोने दोनों के भाव एक साथ आ गए।

"राजीव!" अहसान को मानो लकवा मार गया। अपनी जगह पर जड़वत हो गया वो।

अगले ही पल राजीव ने उसे गले लगा लिया।

"भाईजान!" अहसान बुदबुदा रहा था- "आप हो? ओह...खुदा...खुदा का चमत्कार है ये..."

"मेरा दोस्त...मेरा भाई!" राजीव की आँखें नम हो गई।

मनोज हैरत से दोनों को देख रहा था। खासकर राजीव को, उसने आज तक उसे भावुक होते नहीं देखा था।

"मैंने तो आपसे मिलने की आस ही छोड़ दी थी।" अहसान रो रहा था।

"देख- मिले भी तो किस तरह...कहीं गलती से मैं तुझे कुछ नुक्सान न पहुंचा देता..."

"पर खुदा को ये मंजूर नहीं था।" अहसान आंसू पोछते हुए मुस्कराया। "वो हमें मिलाना चाहता था।"

"तू ठीक कह रहा है। तो...तू-तू तो बहुत लंबा-चौड़ा हो गया है।" राजीव उसे गर्व से देखते हुए बोला- "आर्मी कब ज्वाइन करी?"

"एक महीना भी नहीं हुआ।"

"बता नहीं सकता- मैं कितना खुश हूँ ये देखकर कि तू देश की रक्षा के लिए क्या कुछ नहीं कर गुजरा।"

"आपसे ही तो ये जज्बा मिला था भाई। आपसे वादा भी किया था कि देश के लिए कुछ करना है। और सच कहता हूँ, अब पता चला है कि इंसान के लिए इससे ऊँचा कोई काम नहीं हो सकता।"

"तू तो बड़ा सीरियस हो गया है। बड़ी-बड़ी बातें करने लगा है।"

"ऐसी बात नहीं है, भाईजान! कहो तो अभी एक फडकता हुआ शेर सुना दूं?"

राजीव हंस दिया- "तो शेरो-शायरी का टॉर्चर अभी तक ज़ारी है?"

"बिलकुल! अरे! एक और ज़रूरी खबर- अपुन का निकाह भी हो गया है।"

"वाह! एक और बढ़िया खबर।"

इस तरह अहसान ने बचपन से लेकर अब तक की कहानी सुनाई। राजीव ने भी अपनी जिंदगी की दास्ताँ बयान कर दी। मनोज दिलचस्पी से उनकी बातें सुनता रहा।

"फिर तुम अकबर हुसैन कब बने?" राजीव ने पूछा।

"उस रात मैंने रेगिस्तान में एक संदिग्ध ऊँट सवार देखा। उसका पीछा किया। उसने मुझ पर लठ्ठ से प्रहार किया और बेहोश समझ लिया। पर मैं बेहोश नहीं हुआ था। उसके पीछे लग लिया और फिर राहतगढ़ पहुंच गया। वो अकबर हुसैन नामक पाकिस्तानी जासूस के घर पहुंचा। फिर मैंने दोनों पर हमला करके अपना बंधक बना लिया। उनको टॉर्चर करा तो पता चला कि पकिस्तान राहतगढ़ की ओर से हमला करने का प्लान कर रहा है। हथियार भेजने वाला है, ताकि उस तरफ से सिर्फ सैनिक राहगीर बनकर आ जाएं और हथियार उनको यहीं मिल जाएं। टॉर्चर की

वजह से दोनों की मौत हो गई। फिर मैंने फैसला किया कि हथियार आने दूँगा और उन्हें सेना के हवाले कर दूँगा। पर उस रात आप लोगों ने हमला कर दिया। अपने ही साथी सैनिकों को देखकर मैं बौखला गया। अगर वहां फंस जाता तो खुद को बेगुनाह साबित करना मुश्किल हो जाता।"

"पर हथियार तो पकड़ लिए गए थे।" मनोज बोला।

"दरअसल उस रात दो काफिले आने थे। पहला तो अपने पकड़ लिया पर दूसरा सुबह चार बजे आया था, जो मुझ तक सही-सलामत पहुंच गया।"

"रात को अकबर बनकर ये सब और दिन में सेना की ट्रेनिंग। यार! तुम सोते कब थे?"

"ट्रेनिंग के बीच-बीच में ही ऊंघ लेता था।" अहसान हंसा। "हां! तो आगे सुनो- दूसरे दिन मुझे मैसेज मिला कि क्योंकि राहतगढ़ की सीमा पर ये सारा बवाल हो गया है इसलिए- पाकिस्तानी आर्मी रात को ही थारमेर के जंगल की तरफ से हमला करेगी। मुझे उनकी मदद के लिए पहुंचना था।"

"और तुमने यहां आकर उनका बारूद उन्हीं के जिस्म में भर दिया। वो भी अकेले।" राजीव ने उसका कंधा थपथपाया। "कमाल हो तुम!"

"हां! सेना में किसी और को बताने का वक्त नहीं था। और मेरे गुप्त हमले को पाकिस्तान बिलकुल भी नहीं ताड़ पाया।"

"अहसान! शर्तिया तुमने गजब की बहादुरी का काम किया है। पर तुम्हें उसी रात मेजर खुराना को पूरी बात बतानी चाहिए थी जब तुम्हें अकबर हुसैन का राज़ पता चला था।" राजीव बोला।

"मुझे बताने में हिचकिचाहट हो रही थी। पता नहीं- शायद वो मेरे मुसलमान होने की वजह से मेरा यकीन नहीं करते।"

"ऐसी कोई बात नहीं है। खैर, तुमने जो किया देश की रक्षा के लिए किया। मैं उन्हें बताऊंगा कि तुम मेरे निर्देश पर काम कर रहे थे। ठीक है न मनोज?"

"अरे! आपका भाई- मेरा भाई! और ऐसे देशभक्त पर तो कुर्बान होने का मन कर रहा है।" कहकर मनोज अहसान के गले लग गया।

इधर वो तीनों अपनी आपबीती सुना रहे थे, और दूसरी तरफ झाडियों के पीछे से दो आँखें लगातार उनकी तरफ देख रही थीं।

21

धारमेर से राहतगढ़ लौटते-लौटते सुबह के पांच बज गए। वो तो गनीमत थी कि टैंक का गोला खाने के बाद भी जीप अभी-भी चल रही थी। उन्हें बस उसका एक टायर बदलना पड़ा था जोकि धमाके में फट गया था।

"सलीमा आपको देखकर बहुत खुश होगी।" घर के सामने ब्रेक लगाते हुए अहसान राजीव से बोला।

तीनों जीप से उतर आये। अहसान ने दरवाज़ा खटखटाया तो पाया कि वो खुला पड़ा था।

"लगता है- हफीज़ सुबह-सुबह घूमने निकल गया है।" कहते हुए अहसान अंदर दाखिल हुआ। मनोज और राजीव पीछे थे।

अहसान घर के आंगन में पहुंचा तो वह चौंक पड़ा। वहां हफीज़ ज़मीन पर बेसुध पड़ा था।

"हफीज़! क्या हुआ?" अहसान ने उसे झिंझोड़ा।

"इसके सिर पर तो चोट लगी है।" राजीव ज़मीन पर खून की छींटो को देखते हुए बोला- "कुछ गडबड है। तुम अंदर जाकर सलीमा और अम्मी को देखो।"

अहसान 'सलीमा-सलीमा' चीखता हुआ अंदर भागा। मनोज ने नल से पानी भरा और फिर हफीज़ के चेहरे पर छींटे मारी। वह हडबड़ा कर उठ बैठा।

"क...कौन हो तुम लोग?" अंजान चेहरों को देखकर वह सकपकाया।

तभी अहसान वापस आया। वह चीखा- "हफीज़! सलीमा और अम्मी कहाँ हैं?"

"अ...अहसान भाई! अपुन को माफ कर दो।" कहकर वह रो पड़ा- "अपुन भाभीजान और अम्मी की हिफाज़त नहीं कर पाए।"

"खुद को संभालो हफीज़, और जल्दी पूरी बात बताओ।"

इससे पहले कि हफीज़ कुछ बोलता, मनोज ने पास पड़ी चारपाई से कागज़ का एक टुकड़ा उठाया। सब उसी की तरफ देख रहे थे।

"क्या लिखा है?" अहसान ने पूछा।

"मैं...मैं नहीं बोल सकता।" मनोज के चेहरे पर पीड़ा के भाव थे।

अहसान ने कागज़ उसके हाथों से छीन लिया और पढ़ने लगा-

"अहसान अख्तर! अकबर हुसैन के क़त्ल और पाकिस्तानी आर्मी को धोखा देने की तुझे भारी कीमत चुकानी होगी। तेरी बीवी और उसकी माँ अब पाकिस्तान पहुंच चुकी है। जितने पाकिस्तानियों को तूने मारा है उतनी ही बार तेरी बीवी की इज्ज़त लूटी जायेगी और वो भी उसकी माँ के सामने। बचाना चाहता है तो आजा- पाकिस्तान!"

"नहीं!!!!!!!!!!" अहसान कागज़ फाड़कर चिल्लाया।

"अहसान!" राजीव भी तड़प उठा।

"ये...ये क्या हो गया भाई?" अहसान उससे लिपट गया। "देशभक्ति की ये कैसी सजा मिल रही है मुझे? मेरी...मेरी सलीमा और उसकी अम्मी का क्या कुसूर है इसमें? ये...ये पाकिस्तानी हिजड़े हैं साले! जो मर्दों की लड़ाई में औरतों को घसीट रहे हैं। मुसलमान के नाम पर कलंक हैं। मैं...मैं एक-एक का सिर कलम कर दूँगा।"

अहसान का चेहरा गुस्से से लाल हो गया था। वो पागल हो रहा था। अचानक ही वो बाहर भागा। मनोज, राजीव, हफीज़ उसके पीछे लपके।

अहसान जीप में सवार हो रहा था।

"कहाँ जा रहे हो?" राजीव ने उसका हाथ पकड़ा।

"हट जाओ! मैं बताऊंगा उन्हें कि उन्होंने किससे दुश्मनी ली है।"

"क्या करोगे तुम?"

"मैं जा रहा हूँ- पाकिस्तान!"

"पागल मत बनो। इस तरह जाना खुदखुशी होगी। बॉर्डर पर पहले इन्डियन आर्मी रोक लेगी। उनके हाथों से निकले भी तो पाकिस्तान बॉर्डर पर ही मार दिए जाओगे।"

"तो...क्या करूं? लुट जाने दूं- अपनी बीवी की इज्ज़त?" अहसान का चेहरा क्रोध से भभक रहा था।

"नहीं! ऐसा बिलकुल नहीं होगा। पर हम प्लान से वहां जायेंगे। ताकि सलीमा तक सही-सलामत पहुंच सकें। अगर उससे पहले ही मर गए तो फिर क्या फायदा? ठंडे दिमाग से सोचो-"

"ये भाईसाब ठीक के रये हैं।" हफीज़ बोला।

इस तरह उन्होंने मिलकर अहसान को काबू में किया।

उसके बाद वे लोग तुरंत मेजर खुराना के पास पहुंचे।

राजीव और अहसान ने अब तक का पूरा किस्सा उसे बताया। राजीव ने ये झूठ ज़रूर बोला कि अहसान उसके निर्देशों पर गुप्त रूप से काम कर रहा था। अहसान की बहादुरी से खुराना बेहद प्रभावित हुआ।

"यंग मैन! तुमने जिस बहादुरी से दुश्मन का सामना किया है, वो लाजवाब है।"

अहसान के चेहरे पर सिर्फ परेशानी थी। वह जल्दी-से बोला- "सर! वो मेरी बीवी को उठा ले गए हैं। हमें उसे छुड़ाने जाना होगा।"

खुराना कुछ पल चुप रहा, जैसे बोलने से पहले सोच रहा हो। फिर उसने अहसान के कंधे पर हाथ रखा।

"मुझे अफसोस है। बेशक पाकिस्तानियों ने ये एक बेहद नीच हरकत करी है, पर इसके लिए हम तुरंत कोई एक्शन नहीं ले सकते। आर्मी को उस तरफ भेजना युद्ध का ऐलान करने के बराबर होगा। और हम ये फैसला नहीं ले सकते..."

"सॉरी मेजर!" राजीव ने उसकी बात काटी- "पर पाकिस्तानियों ने पहले ही धारमेर पर हमला करके युद्ध की शुरुआत तो कर ही दी है।"

"मुझे पता है, कैप्टन! पर वो एक गोपनीय हमला था। उसे अहसान और आप लोगों ने विफल भी कर दिया। पर अब उसके जवाब में हम उनके मुल्क पर हमला नहीं कर सकते। और तुम तो जानते हो- इतना बड़ा फैसला मैं नहीं ले सकता। सॉरी!"

"अग्री!" राजीव चहलकदमी करते हुए बोला- "पर हम हमला नहीं करेंगे। हम आर्मी के सीक्रेट मिशन पर जायेंगे। क्योंकि पाकिस्तान के जासूस अकबर हुसैन ने भारत के खिलाफ काफी जानकारियां इकट्ठा कर ली थीं और वो अब बॉर्डर क्रॉस कर चुकी हैं। हमें उन जानकारियों को वापस लाना होगा।"

"पर क्या वाकई ऐसा हुआ है? मेरा मतलब- कोई पुख्ता सबूत है?"

"हमारा काम शक की बिनाह पर ही शुरू होता है, सर। सबूत तो मिशन पर काम करने पर ही मिलते हैं। खैर, इसमें कोई शक नहीं है कि अकबर के पास काफी जानकारी थी, उसकी मदद की वजह से ही वे लोग धारमेर की तरफ से हमला कर पाए थे। इसके अलावा भी और कितनी संवेदनशील जानकारी उस पार पहुंच चुकी हों, उसका हम अंदाजा

भी नहीं लगा सकते।"

"ओके! कैप्टन अगर मुझे इंटेलिजेंस के अधिकारियों से निर्देश मिलते हैं, तो मुझे आपके मिशन पर आर्मी की मदद मुहय्या कराने में कोई आपत्ति नहीं होगी।"

राजीव जोश के साथ मुस्कराया।

"थैंक्यू, सर!" अहसान ने कहा। मेजर ने उसकी पीठ थपथपाई।

उसके बाद राजीव ने वहीं से अपने ऊपरी अधिकारियों को कुछ फोन घुमाए और आख़िरकार उन्हें सीक्रेट मिशन पर पाकिस्तान जाने की अनुमति मिल गई। मेजर खुराना को भी उनकी मदद करने के आदेश मिल गए।

फिर वे लोग प्लान करने लगे।

"मैं, अहसान और मनोज!" राजीव बोला- "हम तीनों के अलावा चार सैनिक और चलेंगे। मेरे ख्याल से उससे ज्यादा भीड़ होने से दिक्कत हो सकती है।"

"सही कहा। सात लोग काफी रहेंगे।" मनोज ने कहा और मेजर की तरफ घूमा। "सर! आप चार सैनिक हमें दे दीजिए।"

मेजर ने उन्हें चार सैनिक दे दिए- अमजद अली, वीर सिन्ह, सुखविंदर सिन्ह और अजय चौहान।

फिर वे सातों मिलकर मिशन की तैयारी करने लगे। सभी वेश-भूषा बदल कर राजस्थानी गाँव वाले बन गए थे। उन्हें दो ऊँट भी दे दिए गए। उन्होंने हथियार ऊँट पर और अपने कपड़ों में छिपा लिए थे।

"सर जी!" सुखविंदर जो कि एक सरदार था, राजीव से बोला- "पूरे पाकिस्तान में हम जायेंगे कहाँ?"

"ख़ुफ़िया खबर के हिसाब से यहां से करीब दो सौ मील की दूरी पर कहीं पाकिस्तानी आर्मी ने अपना अड्डा बना रखा है, वहीं से वे लोग हमारे देश के खिलाफ सभी साजिशें गुप्त रूप से संचालित करता है। वहीं हमारी मंजिल होगी। हालाँकि अभी हमें उस जगह की सही लोकेशन नहीं पता है।"

"ढूढ़ लेंगे सर! और ढूढ़ कर बैंड न बजा दी उनकी तो सरदार का बेटा नहीं।" सुखविंदर जोश में बोला- "अहसान भाई! तू बिलकुल फ़िक्र न करना। भाभी को कुछ नहीं होगा। उन्हें छूने वालों के हाथ काट के फेंक दांगे।"

बाकी तीनों ने भी अहसान का हौसला बढ़ाया। साथ में उसके साहस की कहानी सुनकर तारीफ भी करी। उनकी बातों से उसकी बेचैनी कुछ कम तो हुई, फिर भी हर पल उसे सलीमा की चिंता सता रही थी।

वे लोग मिशन पर निकलने की लगभग पूरी तैयारी कर चुके थे। तभी मेजर खुराना उनके खेमे में पहुंचा। उसने राजीव को बाहर बुलाया।

"कैप्टन! एक ज़रूरी बात करनी थी।" बाहर आते ही मेजर ने कहा।

बाहर धूप काफी तेज़ थी। गर्म हवा भी चल रही थी।

"बोलिए।"

"आपके मिशन पर एक और अफसर जायेगा।"

"पर हमें ज़रूरत नहीं है। सात लोग काफी रहेंगे।"

"मैं समझ सकता हूँ। पर उस अफसर की काफी पहुंच है। मेरे ऊपर काफी दबाव है कि मैं उसे इस मिशन पर भेजूं।"

"कमाल है! ये एक सीक्रेट मिशन है। इस पर जाने के लिए कोई आप पर क्यों दबाव डालेगा? और उसे इसकी

खबर कैसे मिली?"

"जैसा कि मैंने कहा- पहुंच काफी बड़ी है। आ...आप खुद ही मिल लीजिए।" कहकर खुराना एक दूसरे टैंट की तरफ बढ़ गया। राजीव पीछे था।

टैंट में पहुंच कर राजीव ने जब उस अफसर को देखा तो हैरान रह गया।

"इनसे मिलिए-" खुराना उस अफसर से बोला- "ये हैं कैप्टन राजीव, मिशन के लीडर।"

"नाइस टू मीट यू, कैप्टन।" उसने गर्मजोशी के साथ अपना कोमल हाथ राजीव की तरफ बढ़ाया।

वो अफसर एक लड़की थी। बेहद खूबसूरत लड़की, जिसने आर्मी की वर्दी पहन रखी थी। उसका रंग गोरा था, आँखे किसी हिरनी की तरह नशीली थीं, नैन-नक्श बेहद आकर्षक थे। बाल बंधे हुए थे और सिर पर कैप थी।

"मेरा नाम- डॉक्टर शालिनी रावत है।" उसने कहा। राजीव ने शालिनी से हाथ तो मिलाया पर कुछ बोला नहीं। वो हैरान था। उसने खुराना की तरफ देखा- जैसे कहना चाह रहा हो- ये क्या मजाक है?

खुराना के चेहरे पर कोई भाव नहीं था। राजीव शालिनी की तरफ मुड़ा और बेबाक लहजे के साथ बोला-

"आपसे मिलकर खुशी हुई, डॉक्टर! पर आप मिशन पर नहीं जा सकतीं।"

शालिनी कुछ पल राजीव को देखती रही। अब उसके चेहरे पर सख्त भाव आ गए थे। आँखों में चुनौतीपूर्ण चमक थी। वह बोली-

"जान सकती हूँ- क्यों?"

"क्योंकि उस पर जाने के लिए सात लोग काफी हैं और उनका चयन पहले ही किया जा चुका है।"

"पर अगर मैं भी चलूँ तो उसमे क्या दिक्कत है? मैं एक डॉक्टर हूँ और आर्मी के लिए ट्रेंड हूँ। आप लोगों के काम आऊंगी।"

"आप यहां रहकर भी आर्मी की सेवा कर सकती हैं।" राजीव शुष्क स्वर में बोला।

"पर मेरी ज्यादा जरूरत आपके मिशन पर होगी, जहाँ आप दुश्मन का सामना करेंगे।"

"आप समझती क्यों नहीं? आपको साथ रखकर हम प्रेशर में आ सकते हैं। हमारा मिशन बेहद खतरनाक है। वहां हमें कितनी मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा, कितने जोखिम उठाने होंगे, आप उसका अंदाजा भी नहीं लगा सकतीं।"

"मैं एक आर्मी जनरल की बेटी हूँ। कुछ तो अंदाजा होगा ही।"

"ओह!" राजीव ने सांस छोड़ी, जैसे अब उसे सारी बात समझ में आई। "तो आप हम लोगों पर दबाव डालकर..."

"नहीं कैप्टन! ऐसी कोई जबरदस्ती नहीं है। पर आप सिर्फ इसलिए मुझे मिशन पर न ले जाए कि मैं एक लड़की हूँ, ये बात मुझे स्वीकार नहीं होगी। मैं भी एक देशभक्त हूँ और दुश्मन के खिलाफ कुछ करना चाहती हूँ। अगर वक्त आने पर मैं अपनी पढ़ाई और ट्रेनिंग का इस्तेमाल करके आप लोगों की मदद कर सकूँ तो मुझे लगेगा मेरा जीवन सफल हुआ है।"

राजीव कुछ बोला नहीं, उसे देखता रहा। वह सोच रहा था कि इस सुंदर-सी दिखने वाली लड़की के अंदर ऐसी भावनाए कैसे उत्पन्न हो गई।

"प्लीज़!" शालिनी ने गर्दन झुकाकर राजीव से प्रार्थना करते हुए कहा।

"ओके!" राजीव ने दोनों हाथ उठाकर कहा।

"ओह! कैप्टन राजीव! यू आर ग्रेट!" वह खुशी से उछल पड़ी। "मैं अभी तैयारी कर लेती हूँ। वैसे तैयारी तो सब है ही, बस मेडिकल किट रखनी है।"

"घाघरा-चोली है आपके पास?"

"क...क्या?" शालिनी ने चौंककर उसे देखा, उसे लगा राजीव मजाक कर रहा है परन्तु राजीव के चेहरे पर सिर्फ गंभीरता का वास था।

"जी! ये सीक्रेट मिशन है। हम सब गाँव वाले बनकर जा रहे हैं। आप कपड़ों का इंतजाम करके तैयार हो जाइये और दस मिनट में हमारे खेमे में पहुंचिए।"

"ओके सर!" शालिनी ने उसे घूरकर देखा। राजीव उसका जवाब सुनने से पहले ही बाहर जा चुका था।

उसके जाने के बाद वो खुराना की तरफ पलटी-

"अंकल! आपका ये कैप्टन तो बड़ा खड़ूस मालूम होता है।"

"लो- अब उसने तुम्हें मिशन में ले तो लिया है, अभी-भी शिकायत है?"

"वो तो मैं भी खुश हूँ। पर उस खड़ूस को सोचना चाहिए दस मिनट में मैं कहाँ से घाघरा चोली... दस मिनट में तो पहन भी नहीं पाउंगी।"

"हा-हा!" खुराना हंसकर बोला- "डोंट वरी, बेटा। चलो मैं तुम्हें जल्दी-से गाँव ले चलता हूँ।"

दोनों तेजी-से बाहर निकल गए।

22

दोपहर हो चुकी थी और धूप और भी तेज़ हो गई थी। गर्म हवा के साथ जगह-जगह रेत उड़ती नज़र आ रही थी।

मिशन पर जाने के लिए सभी सात लोग तैयार हो चुके थे। वे लोग ऊँट पर हथियार और ज़रूरी सामान लाद रहे थे।

तभी वीर सिन्ह की नज़र दूर आती जीप पर गई।

"अरे! वो कौन है?" उसने कहा।

"अबे, दिखाई नहीं देता?" अजय सामान को रस्सी से बांधते हुए बोला- "मेजर साब हैं।"

"वो तो मुझे भी दिख रहा है, चिडिमार। पर उनके साथ कौन है?"

अजय और बाकी लोगों ने भी ध्यान दिया। राजीव ने देखा, पर जानबूझकर कुछ नहीं कहा।

"ये तो कोई गाँव की गोरी नज़र आ रही है।" मनोज उत्साहित स्वर में बोला- "क्या राजीव? मेरे लिए बीवी का इंतजाम हो गया लगता है।"

राजीव चुपचाप सामान लगाता रहा।

कुछ देर में जीप उनके पास आकर रुकी।

गाँव की गोरी यानि शालिनी जीप से उतरी। उसने लाल-हरे रंग का घाघरा-चोली पहन रखा था। सिर पर दुपट्टा डाल लिया था। कुछ जेवर भी पहने थे। उसके दूधिया हाथ और टाँगे गर्मी के कारण लाल हो रहे थे। उसका पूरा ध्यान अपने कपड़े सँभालने में लगा था।

"ओफ्हो..." अपनी पीठ पर खुजाते हुए वह बडबडा रही थी।

राजीव को छोडकर बाकी सभी उसे हैरानी से देख रहे थे।

इतनी खूबसूरत लड़की को उन्होंने आज तक आर्मी के खेमे में नहीं देखा था।

मनोज और वीर तो पलके भी नहीं झपका रहे थे। पास से देखने पर इतना तो उन्हें समझ आ गया था कि ये लड़की गाँव की तो शर्तिया नहीं है।

खुराना को देखकर सभी अलर्ट हो गए।

"नौजवानों, ये हैं कैप्टन डॉक्टर शालिनी। आप लोगों के मिशन की आठवी साथी।"

सभी के दिमाग हिल गए। पर मेजर के सामने कुछ बोल भी नहीं सकते थे।

"हैलो एवरीवन!" शालिनी मनमोहक मुस्कान के साथ बोली।

"देर हो रही है। हमें अब निकलना चाहिए।" उस पर कोई ध्यान दिए बगैर अचानक ही राजीव बोला।

खुराना ने सबको मिशन पर सफल होने के लिए शुभकामनायें देकर विदा किया।

दो ऊँट, सात नौजवान और एक युवती रेगिस्तान की भीषण गर्मी में अपनी मंजिल की ओर अग्रसर हो गए।

कुछ देर तक काफिला यूँ ही चुपचाप चलता रहा। फिर आख़िरकार सुखविंदर ने चुप्पी तोड़ी-

"आप हैं कौन?" उसका सवाल शालिनी से था।

"मैंने अपना नाम तो बताया था, पर आप सबसे परिचय नहीं हो पाया। आपके खड़ूस लीडर ने मौका ही नहीं दिया।" उसने तिरछी नज़रों से राजीव की तरफ देखा।

"अजी, तो की हुआ? आप परेशान न हो। अब कर लेते हैं परिचय-वरिचय। साड्डा नाम है सुखविंदर सिन्ह, पंजाब दा पुत्तर!"

"तुमसे मिलकर खुशी हुई। पर...सी गाइज़! ये आप-आप वाली फोर्मलिटी नहीं चलेगी।"

"ठीक है, जी! तुम बोल लेंगे। कहो तो 'तू' भी बोल दें।" सुखविंदर फ्लर्ट करने के अंदाज़ में बोला। शालिनी मुस्करा दी।

फिर बारी-बारी सबने अपना परिचय दिया, सिवाए राजीव के।

"तुम कहाँ से हो, कैप्टन?" उसे शांत देखकर शालिनी ने पूछा।

"दिल्ली!" राजीव ने सामने देखते हुए कहा।

"लगते नहीं हो।" शालिनी मुंह बनाकर बोली।

"मतलब?" वह उसकी तरफ पलटा।

"दिल्ली के लोग तो दिलदार होते हैं।" उसने आँखे नचाकर कहा- "पर तुम तो लगता है लोहे का दिल लगाकर घूम रहे हो।"

सब मुंह दबाकर हंस पड़े। राजीव ने उन्हें घूरकर देखा तो वे शांत हो गए।

शालिनी तेज़ धूप और अपने नए कपड़ों से परेशान थी। उसे खुजली हो रही थी जिसके कारण उसकी त्वचा लाल पड़ गई थी। वह सन स्क्रीन निकालकर लगाने लगी।

"काफी टफ मालूम पड़ती हो, कैप्टन।" राजीव ताना मारते हुए बोला।

"तुम घाघरा-चोली पहनकर देखो, फिर पता चलेगा।" उसने तुनककर कहा फिर हंस दी।

"क्या हुआ?"

"कुछ नहीं!" वह खिलखिला रही थी- "सोच रही थी तुम घाघरा-चोली में कैसे लगोगे।"

एक बार फिर सभी मुंह दबाकर हंस दिए।

"क्या बकवास है?" राजीव झुंझलाया- "गाँव के लोग ये सब नहीं लगाते। अगर पाकिस्तानी आर्मी से सामना हुआ और उन्हें तुमसे इसकी गंध आ गई तो उन्हें शक हो जायेगा।"

"फिलहाल हम भारत में हैं न। बॉर्डर पार करने के बाद नहीं लगाउंगी।" शालिनी ने गुस्से से कहा फिर सुखविंदर के कान में बोली- "एकदम हिटलर है, तुम्हारा लीडर।"

सुखविंदर ने मुस्कराकर चुप रहने का इशारा किया।

तीन घंटे तक लगातार चलने के बाद वे लोग विश्राम के लिए एक पेड़ के नीचे रुक गए।

पानी के घूँट भरते हुए अमजद बोला- "दस मील बाद भारतीय बॉर्डर आ जायेगा।"

"हां!" राजीव बोला- "वहां पहले ही निर्देश पहुंच चुके होंगे, वहां के सिपाही हमें बॉर्डर पार कराने में मदद करेंगे। उसके बाद का सफर कठिन होगा।"

"डॉक्टर साहिबा!" वीर सिन्ह शालिनी के पास बैठते हुए बोला- "तुम कहाँ इस खतरनाक मिशन पर आ गई?"

"क्यों? क्या लड़कियां खतरनाक काम नहीं कर सकतीं?"

"मुश्किल है!"

"वक्त आने पर पता चल जायेगा।" शालिनी ने मुस्कराते हुए कहा। फिर उसने दूर बैठे अहसान को देखा। वह एक पत्थर पर बैठा गुमसुम-सा दूर कहीं देख रहा था।

"उसे क्या हुआ? जबसे हम चले हैं वो कुछ नहीं बोला। कहीं खोया-खोया सा मालूम पड़ता है।"

"हूँ! एक तरह से ये मिशन उसी के लिए बनाया गया है।"

"क्या मतलब?" शालिनी चौंकी।

"वो बेहद बहादुर है। उसने पाकिस्तानी हमले का अकेले सामना किया था।" फिर वीर सिन्ह ने पूरी बात बताई। सुनने के बाद शालिनी के चेहरे पर हैरानी के भाव थे।

"सही में यकीन करना मुश्किल है।" वह अहसान को देख रही थी। "किसी ने अकेले ही पूरी आर्मी से टक्कर ले ली। ओह! मुझे भी बहुत फ़िक्र हो रही है। भगवान करे उसकी बीवी सही-सलामत हो।"

"पाकिस्तानी इतनी नीचता पर उतर आयेगा, सोचा नहीं था।" वीर सिन्ह बोला।

तभी वहां मनोज पहुँचा। उसके चेहरे पर कुछ हिचकिचाहट के भाव थे। फिर वह मुस्कराते हुए शालिनी से बोला-

"आप ठीक तो हैं?"

"एकदम। पर फिर से 'आप'?"

"माफ करना।"

"ओके! पर बार-बार माफ नहीं करूंगी।" शालिनी ने कहा।

"हा-हा!" मनोज हंसते हुए उसके पास बैठ गया। "अच्छा तो आप डॉक्टर हैं। आर्मी कब ज्वाइन करी?"

"दो साल पहले।"

"ओके! शादी तो हुई नहीं होगी?" मनोज ने शातिरों की तरह सवाल छोड़ा।

"क्यों पूछ रहे हो?" शालिनी ने शरारती अंदाज़ में पूछा।

"अरे नहीं! ऐसी कोई बात नहीं।" मनोज शरमाया- "ऐसे ही पूछ रहा था। हम लोगों में से अधिकतर अनमैरिड हैं।"

"लगता है अनमैरिड ही ऊपर चले जायेंगे।" आकाश की तरफ देखते हुए वीर उठा और अहसान की तरफ चला गया। उसके पास पहुंचकर उसने जिंदादिली से उसका कंधा थपथपाया और उसके पास बैठकर उससे बातें करने लगा।

शाम तक वे लोग बॉर्डर पर पहुँच गए। वहाँ की छावनी छोटी-सी थी, पर ज़रूरत की काफी चीज़ें वहाँ मौजूद थी।

उन लोगों ने मुंह हाथ धोकर चाय-नाश्ता किया। उसके बाद वे लोग एक बड़े से टैंट में बैठ गए।

"अभी आराम कर लो।" राजीव बोला- "अँधेरा होने के बाद हम बॉर्डर पार करेंगे। आगे का सफर मुश्किल होगा क्योंकि यहाँ से असली रेतीला रेगिस्तान शुरू हो जायेगा। साथ में दुश्मन का खतरा तो बना ही रहेगा। जिस दिशा से हम लोग पाकिस्तान में प्रविष्ट हो रहे हैं- वहाँ किसी बड़े आर्मी दल के होने का अंदाजा तो नहीं है, पर ध्यान रहे..." कहते हुए उसने शालिनी की तरफ देखा। ""ये सिर्फ एक अंदाज़ा है। हमें किसी भी तरह की मुसीबत का सामना करने के लिए तैयार रहना पड़ेगा। कोई शक या सवाल?""

कोई कुछ नहीं बोला। फिर राजीव ने शालिनी से कहा- "कैप्टन शालिनी! मुझे आपसे अकेले में बात करनी है।"

राजीव टैंट से बाहर निकल गया। शालिनी भी उसके पीछे-पीछे चल दी।

"अकेले में क्यों?" वीर मनोज की तरफ आँख मारकर फुसफुसाया।

"लगता है- भाईसाहब मैडम को डोज़ देने वाले हैं।" वह पालथी मारकर बैठते हुए बोला।

"कौन-सी दवा का?" अजय ने आगे झुककर पूछा।

"दवा का नहीं, लेक्चर का। पुरानी आदत है उनकी।"

"डॉक्टर से पंगा ले रहे हैं। ऐसा न हो, मैडम ही उन्हें डोज़ दे दें।"

"किसका? प्रेम रोग का?" वीर ने कहा तो सब ठहाका लगाकर हंस दिए। अहसान सिर्फ मुस्कराया था।

टैंट से कुछ दूर जाकर राजीव रुका और फिर शालिनी की तरफ पलटा।

"देखो शालिनी- तुम एक अच्छी लड़की हो।"

"इतनी जल्दी अच्छी लगने लगी?" वह शोख अंदाज़ में बोली।

"ये मजाक नहीं है। अभी तक का सफर तो बेहद आसान था। बॉर्डर पार करने के बाद क्या-क्या हो सकता है उसका तुम्हे अंदाज़ा नहीं है। ये तुम्हारे लिए आखिरी मौका है। यहाँ से आगे निकलने के बाद वापसी की कोई गारंटी नहीं है।"

शालिनी ने भी गंभीर होकर जवाब दिया- "तुम्हे ऐसा क्यों लगता है कि मैं अभी-भी कॉलेज से निकली हूँ? मैंने कश्मीर में काम किया है। पहली बार जंग पर नहीं जा रही। मैंने सैनिको को अपनी आँखों से मरते हुए देखा है। तुमने सिर्फ जंग के मैदान पर उन्हें मरते और घायल होते देखा होगा, मैंने उसके बाद उनका इलाज़ करते हुए दर्द से तडपते-छटपटाते देखा है। अपने परिवार वालों से आखिरी बार मिलने की सिर्फ हसरत लिए ही वे मर जाते हैं।"

राजीव चुप रहा।

"तुम सब मर्दों को ऐसा क्यों लगता है कि हम औरतें सिर्फ घर बैठकर झाडू-पोछा करने के लायक हैं?"

"मैंने ऐसा तो नहीं कहा।"

"लगता तो ऐसा ही है।"

शालिनी गुस्से से उफनते हुए इधर-उधर देखने लगी। उसका चेहरा लाल हो गया था।

कुछ पल दोनों उसी तरह खड़े रहे। फिर राजीव बोला-

"सॉरी! मेरा ध्येय सिर्फ तुम्हे मिशन की कठिनाइयों से आगाह करने का था।"

"ओके! पर इसके बाद मुझे इस तरह की कोई सलाह नहीं चाहिए।"

राजीव ने सहमति में सर हिलाया।

दोनों टैंट की तरफ वापस लौटने लगे।

उन्हें आते देख वीर धीरे-से बोला- "क्या लगता है- किसने किसको डोज़ दिया है?"

"दोनों की शक्लें बता रही है कि दोनों ने एक दूसरे को बराबर डोज़ दिया है।" अजय फुसफुसाया।

23

अँधेरा होने के बाद उनका काफिला आगे बढ़ गया। छावनी से उनकी मदद के लिए दस जवान भी साथ चले थे।

कुछ ही देर में रेगिस्तान शुरू हो गया। दूर-दूर तक सिर्फ रेत के बड़े-छोटे टीले नज़र आ रहे थे। वहाँ अब हलकी ठंड हो गयी थी।

"अब आप लोग पाकिस्तान में आ चुके हैं।" छावनी से आये एक जवान ने कहा।

"पता भी नहीं चला।" अमजद बोला- "आखिर फर्क क्या है इन मुल्कों में? यहाँ भी वहीं रेत है जो हमारे यहाँ होती है।"

"फर्क रेत, ज़मीन या पानी में नहीं है, दोस्त।"" वीर बोला- ""फर्क है दोनों जगह रहने वालों में।"

"रहने वाले तो दोनों तरफ सुकून और अमन से जीना पसंद करते हैं।"" अहसान बोला- ""पर असली फर्क उनकी हुकूमत में है।"

कुछ और आगे जाने के बाद राजीव ने छावनी से आये जवानों का शुक्रिया अदा किया और उन्हें वापस जाने को कह दिया।

फिर उनका काफिला रात की कालिमा मे पाकिस्तान की ज़मीन पर आगे बढ़ गया। जैसे-जैसे रात गहरी होती जा रही थी, रेगिस्तान का माहौल डरावना होता जा रहा था। दूर-दूर तक स्याह अँधेरा था। बादलों के बीच में चाँद भी कहीं ओझल हो गया था। सभी शांति से चल रहे थे। बारी-बारी से वे ऊंटों की सवारी करके आराम कर रहे थे।

रात को एक बजकर बीस मिनट पर, जब वे चार घंटे चल चुके थे, ऊँट पर सवारी करते हुए वीर बोला-

"दूर कुछ दिखाई दे रहा है।"

"क्या?" अहसान और सुखविंदर के मुंह से एक साथ निकला।

"चार ऊँट दिख रहे हैं।"

सभी सतर्क हो गए। उन्होंने अपने हथियार तैयार करके कपडों में छिपा लिए।

"सभी सावधान रहें।" राजीव बोला- "बेहद ज़रूरी हो तभी हमला करना है। अगर वो किसी की तलाशी लें तो अपना हथियार रेत में गिरा देना, अँधेरे में किसी को दिखाई नहीं देगा। बाकी लोग हमले के लिए तैयार रहेंगे।"

शालिनी ने गाँव की औरतों की तरह चेहरे तक घूंघट डाल लिया।

शनैःशनैः वो चार ऊँट उनके नजदीक आते चले गए।

कुछ देर में वे उनके सामने थे। ऊंटों पर चार पाकिस्तानी आर्मी के जवान थे।

उन्होंने उनके काफिले को घेर लिया।

"कौन हो तुम लोग?" एक ने पूछा।

"हुज़ूर! करमपुर गाँव से हैं।" अमज़द हाथ जोड़कर बोला। उन लोगों ने पहले ही पाकिस्तानी गाँवो के नाम याद कर लिये थे।

"इतनी रात को कहाँ जा रहे हो?"

"अपनी लुगाई को उसके मायके ले जा रहे हैं- शाहगढ़।"

"हूँ!" दूसरा जवान जोकि काफी लंबा था शालिनी को घूरते हुए बोला- "हिंदू हो?"

"जी!"

फिर वह बारी-बारी सभी को देखते हुए बोला-

"सब लोग हाथ ऊपर करके खड़े हो जाओ।"

"लेकिन क्या हुआ, साहब?" राजीव घबराने का नाटक करते हुए बोला।

"सवाल नहीं! हाथ ऊपर!" उसने राजीव को खा जाने वाली नजरों से घूरते हुए कहा।

राजीव ने अजय की तरफ देखा, अहसान ने सुखविंदर को और उनका आँखों-आँखों में इशारा हुआ। उन्होंने चुपके से अपने हथियार रेत पर गिराकर हाथ ऊपर कर लिए। शालिनी ने वैसा नहीं किया, न ही राजीव और अमजद ने।

"तू भी नीचे आ जा।" ऊँट पर बैठे एक सैनिक ने वीर को आदेश दिया।

वीर कूदकर नीचे आ गया और हाथ ऊपर कर लिए। उसका रिवाल्वर उसकी पीठ के पीछे छिपा था।

लंबे सैनिक ने इत्मीनान से अजय की तालाशी ली, फिर अहसान की। उसके बाद वो सुखविंदर की तरफ बढ़ा। उसने भी सफाई से तालाशी लेने दी।

"कुछ मिला?" ऊँट पर बैठे एक सैनिक ने पूछा।

"नहीं!" कहकर वह राजीव की तरफ बढ़ा। शालिनी का हाथ रिवाल्वर पर पहुंच गया। वीर भी हमले के लिए तैयार था। राजीव ने अपना रिवाल्वर नहीं गिराया क्योंकि जवान उसके बेहद करीब था।

"छोड़ो यार!" ऊँट वाला फिर बोला- "इन गाँव वालों के पास कुछ नहीं मिलेगा।"

"हां!" लंबा जवान रुकते हुए राजीव से बोला- "तुम लोग औरत को इतनी रात में रेगिस्तान में ले जा रहे हो, कम से कम अपनी हिफाजत के लिए कुछ हथियार तो रखने चाहिए।"

"अरे हुज़ूर!" अमजद जोश के साथ बोला- "उसके लिए तो हमारे हाथ-पैर ही काफी हैं।"

वे लोग हंस दिए।

"ठीक है! खैरियत के साथ जाना।" कहकर लंबा व्यक्ति अपने ऊँट की तरफ बढ़ गया।

पाकिस्तानी जवान अपने-अपने ऊंटों पर सवार होकर चल दिए। अचानक ही उनमे से एक की नज़र रेत पर पड़ी रिवाल्वर पर चली गई। वह अजय का था।

"रुको!" उसने अपने ऊँट को रोका। अजय और वीर तुरंत इस बात को भांप गए। उन्होंने अपने-अपने हथियार संभाले और फायर कर दिया।

तब तक पाकिस्तानी ने भी फायर कर दिया था। गोली सुखविंदर को लगी।

एकदम से अफरा-तफरी मच गई। अहसान, अमजद और राजीव ने भी फायर कर दिये। दुश्मन की तरफ से भी फायरिंग होने लगी।

परन्तु भारतीय काफिले का पलड़ा भारी पड़ा और कुछ ही पल में उन चारों की लाश रेत में पड़ी थी।

"सुखविंदर! ठीक तो हो?" राजीव ने पूछा।

"चंगा हूँ जी! गोली कंधे विच लगी है।" उसने बहादुरी के साथ कहा।

"ज्यादा हीरो मत बनो।" शालिनी उसके पास पहुंची और उसके जख्म को देखने लगी। फिर उसने मेडिकल किट निकाल ली।

कुछ देर में गोली उसके कंधे से बाहर थी। शालिनी ने उसे दवा दी और ड्रेसिंग कर दी।

"बाल-बाल बच गया, हीरो।" अजय बोला।

"खुदा का शुक्र है।" अमजद ने आसमान की तरफ देखते हुए कहा।

राजीव आगे बढकर पाकिस्तानियों के शरीर चैक करने लगा।

उनमे से एक के गले पर हाथ रखकर वह बोला- "ये अभी जिन्दा है।"

"उड़ा दो साले को, सर!" वीर गरजा।

"नहीं! ये हमारे काम आ सकता है।" राजीव ने चैक करा- गोली उसके पेट में लगी थी। खून बह रहा था।

"इसका काफी खून बह चुका है।" शालिनी पास पहुंचकर बोली- "ज्यादा देर नहीं बचेगा।"

राजीव ने उसके चेहरे पर पानी छिड़का और उसे होश में लाया।

"अपना नाम बताओ-"

"ह...हमीद!"

"हमीद! तुम लोगों का बेस या हैडक्वार्टर कहाँ है?"

"मेरे मरने के बाद...म...मेरी लाश से पूछना।" उसने तिरस्कार के साथ कहा।

"तुम्हारे साथी, भारत से एक जवान की बेक़सूर बीवी को उठाकर लाये हैं। हम सिर्फ उसे छुडाना चाहते हैं। मरते-मरते तुम हमारी मदद करके एक अच्छा काम कर सकते हो।"

"मैं अपने देश का वफादार सैनिक हूँ। मार दो मुझे..."

राजीव के चेहरे पर खतरनाक भाव उभर आये। अगले ही पल उसने अपना रिवाल्वर उसके जख्म में घुसा दिया। वह तडपकर चीख उठा।

ऐसा जुल्म देखकर शालिनी के मुंह से सिसकारी निकल आई।

"क्या कर रहे हो?" उसने राजीव का हाथ पकड़ लिया। "जानवर हो क्या?"

"इनसे इसी तरह जानकारी मिलती है।" अमजद पास आकर बोला।

"पर किसी मरते हुए इंसान पर इस तरह अत्याचार करना..."

अपना हाथ एक झटके के साथ छुडाकर राजीव बोला- "मत भूलो कि उन भारतीय सैनिकों का क्या हाल होता है जिन्हें ये लोग पकड़ लेते हैं। कई-कई सालों तक ये लोग उनका टॉर्चर करते हैं।"

"पर इसका मतलब ये नहीं..."

"देखो कैप्टन! तुम अपना काम करो और हमें अपना करने दो।" राजीव आँखे फैलाकर बोला। शालिनी अनमने भावों को ज़ाहिर करते हुए पीछे हट गई।

राजीव ने एक बार फिर उसके जख्म पर हमला किया। "बता- कहाँ है तुम लोगों का अड्डा?"

वह हृदयविदारक चीख निकालता रहा। कुछ देर में उसने हाथ उठाया और कहा-

"यहाँ से पूर्व दिशा में करीब पचास मील चलने के बाद है। पर तुम लोग कुछ नहीं कर पाओगे। सबके सब मरोगे...मरोगे..." कहते हुए उसकी गर्दन एक तरफ ढुलक गई।

कुछ देर तक वे लोग उसकी लाश को देखते रहे, फिर राजीव ने उसकी आँखें बंद करके रेत में लिटा दिया।

"क्या लगता है?" अहसान ने पूछा- "इसकी बात पर विश्वास किया जाए?"

"कहते हैं- मरता हुआ आदमी झूठ नहीं बोलता।" वीर बोला।

"पर हो सकता है- हमें फंसाने के लिए इसने किसी बड़ी छावनी का पता बता दिया हो।" मनोज बोला।

"आप ही फैसला करो, सर जी!" अजय ने राजीव से कहा।

कुछ सोचते हुए राजीव बोला- "जहाँ तक हमारे विभाग का अनुमान था, वो जगह इसकी बताई हुई लोकेशन से ज्यादा अलग नहीं है। मेरे ख्याल से हमें उसी तरफ चलना चाहिए।"

"फिर क्या, भाईजान!" अहसान बोला- "उधर ही चलते हैं।" उसकी आवाज़ में उत्साह था। उसे उम्मीद थी कि अब जल्दी ही वह अपनी सलीमा को दुश्मनों के चंगुल से छुडा सकेगा।

एक ऊँट की गोली लगने से मृत्यु हो गई थी। फिर भी काफिले के पास अब पांच ऊँट थे, इसलिए उनका सफर तेजी के साथ पूरा हो रहा था। दो घंटे के अंदर ही उन्हें एक पुरानी सी ईमारत नज़र आई। उसके बाहर कुछ टैंक खड़े थे। कई ऊँट और घोड़े भी थे और जगह-जगह सैनिक घूम रहे थे।

"लगता है यहीं उनका बेस है।" अहसान उतावलेपन के साथ बोला- "हमें हमला बोल देना चाहिए।"

"अहसान!" राजीव ने डांटा- "धीरज से काम लो। पहले दुश्मन की ताकत को समझ लो। हमें अपना काम चुपचाप ही करना होगा। अभी साढ़े तीन बजे हैं। दो घंटे में उजाला होने लगेगा। हमें जो कुछ भी करना है उससे पहले करना होगा।"

"उस तरफ कई पत्थर दिखाई दे रहे हैं।" अमजद बोला- "हमें उसके पीछे मोर्चा संभाल लेना चाहिए।"

राजीव कुछ बोला नहीं। वह गहरी सोच में था। सब उसकी तरफ देख रहे थे। आख़िरकार वो बोला-

"मैं और अहसान पाकिस्तानी वर्दी पहनकर ईमारत में जायेंगे। बाकी सभी इन पत्थरो के पीछे-से ईमारत पर निशाना रखेंगे। हम दोनों सलीमा को तलाश करेंगे और वो मिले या ना मिले, किसी भी सूरत में हम इस ईमारत में बम लगाकर आयेंगे। अगर कुछ गडबड हुई और हम भागते हुए बाहर आंए तो तुम लोग हमें कवर दोगे। ऊँट बचाकर रखना, वे हम सबके भागने के काम आयेंगे।"

"ठीक है, सर!" सुखविंदर ने कहा।

उसके बाद वे लोग तैयारी करने लगे।

वीर ने अहसान का कंधा थपथपाया। "भाभीजान! सही सलामत मिल जाएँगी, दोस्त।"

राजीव ने पाकिस्तानी वर्दी पहन ली थी। अभी वह कुछ बम वर्दी में छिपा रहा था कि शालिनी उसके पास पहुंची।

राजीव ने उस पर सवालिया द्रष्टि डाली।

उसने कुछ झिझकते हुए कहा- "आई एम सॉरी!"

"किसलिए?"

"मैं उस वक्त तुम पर चिल्लाई थी, तुम्हारे काम में इंटरफियर..."

राजीव चुपचाप उसे देखता रहा।

"पर...पर मुझसे उस वक्त वो टॉर्चर देखा नहीं गया। लेकिन मुझे पता है तुमने कुछ गलत नहीं किया।"

"तुम्हें ये सब बोलने की ज़रूरत नहीं है। ये सब देखना हर किसी के बस की बात नहीं है।"

"तो तुम अब मुझ पर गुस्सा नहीं हो?"

"पहले भी नहीं था।" राजीव सपाट लहजे में बोला।

"ये तो खुशी की बात है।" शालिनी चहक उठी- "तुम ये बात मुस्कराकर भी कह सकते थे।"

"तुम चाहती क्या हो?" राजीव तनिक झुंझलाया।

"बताऊँ मैं क्या चाहती हूँ?" शालिनी एकदम से उसके पास आ गई। राजीव चौंक उठा। उसने पहली बार गौर से शालिनी की खूबसूरती पर ध्यान दिया। उसकी आँखों में नींद के लाल-लाल डोरे तैर रहे थे, जिनसे वह और भी नशीली लग रही थी। उलझे से बालों में से एक लट माथे पर बिखर आई थी। उसकी साँसों में से भीनी-सी खुशबू आ

रही थी।

"क्या?" राजीव के मुंह से किसी तरह निकला।

"बाद में फुर्सत के साथ बताउंगी।" वह शरारत के साथ बोली।

"अगर मैं वहां से लौटकर ही नहीं आया?" राजीव ने उसकी आँखों में झाँका।

"ऐसा नहीं हो सकता।" कहते हुए भावावेश में शालिनी ने उसका हाथ पकड़ लिया। राजीव ने हाथ की तरफ देखा तो शालिनी ने शरमाते हुए उसका हाथ छोड़ दिया।

"ऑल दी बैस्ट!" उसने मीठी-सी मुस्कान के साथ कहा- "तुम भारत के हीरो हो। कोई तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर पायेगा।"

वह उसकी आँखों में प्यार से देखते हुए पत्थरो की तरफ चल दी। राजीव उसे देखता रह गया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि ये अचानक उसके मन में शालिनी के लिए अलग सी भावनाएं क्यों उत्पन्न होने लगी थी।

सलीमा इस वक्त पाकिस्तानियों की कैद में थी। वह एक अँधेरे कमरे में काफी समय से बंधी हुई थी।

अचानक ही कमरे का दरवाज़ा खुला और फिर कमरे में रौशनी हुई।

पाकिस्तानी वर्दी में एक शख्श टहलते हुए उसके पास पहुंचा। वह लंबा-चौड़ा था, चेहरे पर दाढ़ी-मूंछ थी।

उसने कुटिल मुस्कान के साथ सलीमा को सिर से पांव तक देखा, फिर उसके बंधन खोलते हुए बोला- ""बहुत खूबसूरत हो तुम। कहाँ से हो?""

"भारत से।""

"वो तो हम भी जानते हैं। पर किस शहर से?"

सलीमा ने जवाब नहीं दिया और क्रोध के साथ उसे घूरती रही।

"अरे! गुस्सा क्यों होती हो? दरअसल हमारी पैदाइश भी हिन्दुस्तान की ही है। हम बताते हैं- अलीगढ। हां! वही पैदा हुए थे हम। हमारा नाम है- मेजर इरफ़ान! अब आप बताइए-"

"लखनऊ!" सलीमा ने बेमन से कहा।

"ओह-हो! तभी कहें- ये नजाकत, ये अदाए। वाह-वाह! पाकिस्तान में वो बात कहाँ। आप हमारे मुल्क आ जाएँ तो चार-चाँद लग जायेंगे हमारे मुल्क के और हमारे घर के भी..."

"मुंह संभाल के बात करो। हम शादीशुदा है। और हमारे शौहर खुद एक फौजी हैं।"

"जानते हैं! अच्छी तरह से जानते हैं। अरे! तो क्या हुआ? हम भी तो फौजी हैं। औदे में तुम्हारे शौहर से ऊँचे भी हैं। तुम हमारी बन जाओ, और भी खुश रहोगी।"

"बंद कर अपनी गन्दी बातें। तू ऊँचा नहीं एकदम गिरा हुआ इंसान है।"

"तेरे लिए तो हम किसी भी हद तक गिर सकते हैं।" कहकर इरफ़ान सलीमा पर झपट पड़ा।

सलीमा ने भागने की कोशिश करी पर उसने किसी बाज की तरह उसे दबोच लिया।

"छोड़ दे हमें कमीने।" सलीमा चीखने लगी।

अहसान और राजीव!

दोनों पूरी तैयारी के साथ पाकिस्तानी आर्मी की वर्दी पहनकर पीछे की तरफ से ईमारत की तरफ रेंगने लगे। जैसा कि उनका अंदाजा था, इस तरफ उन्हें ज्यादा सैनिक दिखाई नहीं दिए।

ईमारत के नजदीक पहुँचने में उन्हें ज्यादा परेशानी नहीं हुई। फिर वे लोग खड़े हुए और सामान्य ढंग से टहलने लगे। आसपास कुछ सैनिकों ने उन्हें देखा भी, पर किसी को शक नहीं हुआ। वैसे भी अँधेरा छाया था और दोनों ने कैप भी चेहरे पर आगे तक झुका ली थी।

टहलते हुए वे ईमारत के गेट की तरफ बढ़ गए।

वहां अँधेरा था। एक तरफ कुछ सिपाही नींद में लहरा रहे थे।

अचानक एक ने पीछे से पूछा- "कहाँ जा रहे हो?"

"मेजर ने बुलाया है।" राजीव ने कड़क आवाज में बिना मुड़े ही कहा।

"ओके!" पीछे से सिपाही बोला।

वे लोग तेजी-से ईमारत में दाखिल हो गए।

अचानक ही उन्हें एक लड़की के चीखने की आवाज़ आई।

"स...सलीमा!" अहसान क्रोध से पागल हो उठा। वह तेजी-से सीढियों की तरफ लपका। आवाज़ ऊपर से आई थी। राजीव उसके पीछे था।

"ध्यान-से अहसान!" वह फुसफुसाया।

"मैं इन कमीनों को छोड़ूंगा नहीं।" अहसान के स्वर में अजीब-सा वहशीपन था।

ऊपर पहुंचकर उन्हें एक बंद दरवाजा नज़र आया। अंदर से रोने की आवाज़ आ रही थी।

इससे पहले कि राजीव कुछ करता, अहसान ने एक जोरदार ठोकर मारी और पुरानी दीमक खाई लकड़ी का दरवाज़ा शहीद हो गया।

दरवाज़ा पार करके वे एक बड़े-से कमरे में पहुंचे जहाँ मोमबत्ती का उजाला था।

अंदर का द्रश्य देखकर तो मानो अहसान ज्वालामुखी की तरह फट पड़ा।

अंदर मौजूद एक पाकिस्तानी फौजी भी उन्हें अचानक वहां देखकर हैरान रह गया। वह पूरी तरह से नग्न था और एक लड़की पर सवार था। अहसान के हाथ में साइलेंसरयुक्त रिवाल्वर था। उसका ये रूप देखकर फौजी अपनी नग्नता को भी भूल गया और तुरंत हाथ ऊपर करके खड़ा हो गया।

"क...कौन हो......तु...?"

अहसान ने उसे सवाल पूरा करने का भी मौका नहीं दिया। उसके संयम का बाँध टूट चुका था। वह रिवाल्वर का बारूद उसके जिस्म में उतारता चला गया।

फौजी बिना कोई शोर मचाये फर्श पर ढेर हो गया। अहसान ने आगे बढ़कर उसके सीने पर दो फायर और किये, फिर उसकी लाश पर थूक दिया। अचानक ही अहसान को 'डेजा वू' (Déjà vu) का आभास हुआ, यानि उसे लगा कि वो ऐसा पहले कभी और भी कर चुका है। (ये बात और है कि उसने ऐसा अपने अगले जन्म में किया था। हिंट- राजन इक़बाल की वापसी)

"सलीमा!" राजीव ने जल्दी से लड़की से कहा- "तुम ठीक तो हो? कपड़े पहनो और भागने के लिए तैयार हो जाओ।"

उसने जल्दी-से अपने कपड़े उठाये और पहनते हुए घबराये हुए स्वर में बोली-

"म...मेरा नाम सलीमा नहीं है।"

"क्या?" राजीव के मुंह से निकला। अहसान भी चौंककर पलटा।

उसने ध्यान-से उस लड़की को देखा और फिर एकदम से पागल हो उठा। उसने लड़की के बाल पकड़ लिए।

"सलीमा कहाँ है?"

"अहसान! छोड़ो इसे।" राजीव ने उसे परे धकेला।

"म...मेरा नाम ज़ेबा है।" अपने आंसुओं को किसी तरह काबू करके वो बोली, "मुझे इन लोगों ने जबरन कैद कर रखा है। और मेरे साथ..." कहकर वो सुबकने लगी।

"खुद को संभालो।" राजीव ने कहा- "यहां कोई और लड़की भी है कैद में?"

"नहीं!"

अहसान बेचैनी के साथ टहलने लगा।

दूसरी तरफ सलीमा की इज्ज़त खतरे में थी।

मेजर इरफ़ान ने उसके कपड़े तार-तार कर दिए थे।

"जितना हाथ-पाँव मारेगी उतना ही मजा आएगा।" वासना से भरी हंसी के साथ वह बोल रहा था।

वाकई सलीमा को अहसास हुआ कि वह फिजूल ही संघर्ष कर रही है। इस राक्षस के सामने वह कुछ भी नहीं कर सकती। उसने एकदम से संघर्ष करना बंद कर दिया और सिर झुका कर खड़ी हो गई।

"बस...हो गया?" वहशी की आँखों में आश्चर्य था। "अब आराम से मुहब्बत करोगी? बहुत खूब।"

उसके बाद वह उसके होठ चूमने की कोशिश करने लगा, पर सलीमा ने उसकी वो हसरत पूरी नहीं होने दी।

"क...क्या हुआ? जानेमन अब नाराजगी क्यों?"

"तुम्हें जो करना है करो बस मेरे चेहरे के करीब मत आओ।" सलीमा ने घृणा के साथ कहा।

"ओह! ये बात है? ठीक है! मंजूर! चेहरा नहीं तो क्या हुआ बाकी बदन तो है चूमने के लिए।"

उसके बाद वह सलीमा के कपड़े उतारने लगा। सलीमा रोने लगी।

इधर अहसान बुरी तरह हांफ रहा था। उसने एक बार भी ऐसा नहीं सोचा था कि सलीमा यहां नहीं मिलेगी। पता नहीं कहाँ होगी वो और उसके साथ...उफ़!

तभी सीढियों की तरफ से शोर आया। सैनिक उठा-पटक की आवाज़ से ऊपर आ रहे थे।

राजीव ने तुरंत एक हथगोला निकाला और वहीं से सीढ़ियों की ओर उछल दिया।

सीढियों पर चढ़ते सैनिक हथगोले को सामने देख बौखला गए। जबरदस्त धमाका हुआ और कईयों के चीथड़े उड़ गए।

तब तक राजीव एक और हथगोला फेंक चुका था। इस बार सैनिक तो मरे ही, साथ में लकड़ी की बनी पूरी सीढ़ी ही ध्वस्त हो गई।

लड़की दहशत के साथ सबकुछ देख रही थी।

"सुनो!" अहसान ने उसका ध्यान खींचा। "तुम कबसे यहां कैद हो?"

"दो...दो हफ्ते से।"

"इस जगह क्या साजिश चल रही है? तुमने ज़रूर कुछ सुना होगा।"

"मैंने जितना सुना-समझा है मैं आप लोगों को सब बता दूंगी। पर हमें यहां से भागना चाहिए, वरना ये लोग हमें जिंदा नहीं छोड़ेंगे।"

"तुम उसकी चिंता मत करो।" राजीव बोला- "जो जानती हो फटाफट बताओ-"

"ठीक है! यहां पर हिंदुस्तान पर हमला करने की तरह-तरह की साजिश चलती रहती है। इन लोगों ने कुछ ही दिन पहले धारमेर की तरफ से हमला भी किया था। उसका क्या हुआ मुझे नहीं पता।"

राजीव की नज़र अहसान से मिली। लड़की सच बोल रही थी।

"बोलती रहो-"

"जिसे आपने मारा वो मेजर अकरम था। वो यहां से अक्सर वायरलैस पर किसी से बातें करता था। उनकी बातें बड़ी ऊट-पटांग होती थीं, मुझे ज्यादा समझ नहीं आया।"

"किससे बात करता था वो नाम तो सुना होगा?"

"अकबर नाम का शायद कोई जासूस है इनका हिंदुस्तान में कहीं।"

"अकबर हुसैन?"

"ज...जी...आपको पता है?"

"आखिरी बार क्या बात करी थी इसने?"

"आज ही ये उसे बोल रहा था कि लखनवी कबाब खाए क्या? मुझे तो समझ नहीं आया..."

"वो किसी और से बात कर रहा होगा।" राजीव चौंकते हुए बोला।

"नहीं! मुझे पता है- वो अकबर हुसैन से ही इस तरह की बातें करता था।"

"पर...पर..." अहसान विचलित हो उठा- "उसे तो मैंने अपने हाथों से..."

"अहसान! लगता है वो जिंदा है। और शायद लखनवी कबाब से उन हरामजादों का मतलब सलीमा से है।"

"लेकिन..." अहसान बुरी तरह से हैरान था- "इसका मतलब सलीमा अभी-भी भारत में है?"

"हो सकता है। पर तुमने अकबर हुसैन को कैसे मारा था? वो जिंदा कैसे है?"

अहसान सोच में पड़ गया। फिर अतीत के बारे में सोचते हुए बोला- "उस रात मैंने अकबर और उसके साथी को कुर्सी से बांधकर चाकू से पूरे शरीर पर चीरे लगाये, उन पर नमक-मिर्च लगाया। प्लास से उनकी एक-दो उँगलियाँ भी उखाड़ दी थीं। उसके बाद दोनों ने मुझे जानकारी दी और दम तोड़ दिया।"

"तुमने दोनों की नब्ज चैक करी थी।"

अहसान सोच में पड़ गया, बोला- "नब्ज तो नहीं चैक करी, पर अकबर बोल रहा था कि उसने जो कुछ किया अपने देश के लिए किया, वगैरह-वगैरह...फिर उसकी गर्दन एक तरफ ढुलक गई थी।"

"पर तुमने चैक नहीं किया कि वो वाकई मर गया?"

"आं...शायद मैंने सांस चैक करी थी।"

"वो तो उसने रोक ली होगी। अहसान! शर्तिया- अकबर मरा नहीं होगा। फिर तुमने उनकी लाशों का क्या किया?"

"उन्हें मैंने धारमेर जाते वक्त रास्ते में रेत में फैंक दिया था।"

"हूँ! और वहां से अकबर या फिर दोनों वापस आ गए होंगे। हो सकता है उन्होंने ही सलीमा और उसकी अम्मी का अपहरण किया और वो नोट डाल दिया ताकि तुम पाकिस्तान में घुसपैठ की कोशिश करो और उसपर से तुम्हारा ध्यान हट जाए। असल में वो राहतगढ़ में ही कहीं छिपा होगा।"

अहसान के चेहरे पर अविश्वास के भाव थे। "मुझे समझ नहीं आ रहा मुझसे इतनी बड़ी चूक कैसे हो गई।"

"होता है, मेरे भाई! अकबर हुसैन एक काइंया जासूस है।" राजीव ने कहा। नीचे से चीख पुकार की आवाजें आ रही थीं। ऐसा लग रहा था बाहर भगदड़ मची हुई है।

"अहसान!" राजीव के कान खड़े हो गए थे। "ये लोग हम पर किसी भी वक्त हमला कर सकते हैं। इनके पास टैंक भी है। हो सकता है ये पूरी ईमारत को उड़ा दें। हमें जो भी करना है, जल्दी करना होगा।"

"हमें इसका प्रयोग करना चाहिए।" कमरे के कोने में रखे हुए वायरलैस की तरफ बढते हुए अहसान ने कहा।

"तुम अकबर से बात करना चाहते हो?"

"हां! उसको मेजर अकरम बनकर सलीमा और अम्मी को छोड़ने का आदेश देते हैं।"

राजीव जल्दी से वहां पहुंचा। "आइडिया तो अच्छा है। मुझे पता है कि वो किस तरह से कोड्स में बातें करते हैं। पर इस मेजर अकरम की आवाज़ कैसे निकालें?"

"कोशिश करते हैं। वैसे भी वायरलैस पर इतनी साफ़ आवाज़ नहीं जाती।"

राजीव ने हामी भारी, फिर वायरलैस ऑन कर लिया। उसमे पहले से कोई फ्रीक्वेंसी सेट थी, राजीव ने सोचा कि वह फ्रीक्वेंसी अकबर की ही होगी।

कुछ ही देर में दूसरी तरफ से आवाज़ आई-

"हेल्लो-हेल्लो! राजस्थान सिल्क हियर!"

अहसान की आँखे चमक उठीं।

"वही है!" उसने राजीव के कान में कहा।

"हेल्लो! लाहौर ट्रेडर्स दिस साइड।" राजीव ने सतर्कता के साथ कहा।

दूसरी तरफ दो पल सन्नाटा छा गया। राजीव और अहसान विचलित हो गए। लेकिन फिर अकबर हुसैन की आवाज आई-

"बोलिए, जनाब! नया माल कब ला रहे हैं? ओवर।"

"बहुत जल्द!" राजीव अकड़ते हुए बोला- "फ़िलहाल! ज़रूरी बात ये है कि आप लखनवी कबाब को तुरंत वापस कर दें। ओवर।"

"जी?" वह हैरानी के साथ बोला- "पर क्यों?"

"आपके दोस्त अहसान की मौत हो चुकी है। इस माहौल में आप कबाब खा पाएंगे?"

"क्या?" दूसरी तरफ से खुशी की चीख सुनाई दी- "ये तो बहुत बुरी खबर है।" पर बोलने का अंदाज़ ऐसा था जैसे इससे अच्छी खबर उसने सुनी न हो।

"जी हां! इसलिए अब बेहतरी इसी में है कि कबाब अभी और इसी वक्त ठीक-ठाक हालात में वापस करे जांए। ताकि माहौल कुछ ज्यादा ही न बिगड़ जाए। वरना उस तरफ का बाज़ार गर्म हो जायेगा और हमारी मुसीबत हो जायेगी। ओवर!"

"आपका कहना ठीक है! फ़ौरन हुक्म की तालीम होगी। ओवर!"

"ओके! ओवर एंड आउट!" राजीव ने कनेक्शन काट दिया। उसने मुस्कराकर अहसान की तरफ देखा। अहसान खुश तो था पर पूरी तरह से संतुष्ट नहीं था।

"चिंता मत कर। अब वे सलीमा को छोड़ देंगे।"

"खुदा करे यहीं सच हो। यहां टेलीफोन भी है। हमें हफीज़ को बता देना चाहिए।"

फिर अहसान ने राहतगढ़ का एक नंबर घुमाया। कुछ देर में उसकी बात हफीज़ से हो रही थी।

"अहसान भाई! कैसे हैं आप?"

"मैं एकदम ठीक हूँ, हफीज़। अब ध्यान से मेरी बात सुनो। तुम्हारी भाभी और उनकी अम्मी बहुत जल्द घर वापस आने वाली हैं।"

"अल्लाह का लाख शुक्र है। आपको वो मिल गई?"

"वो वहीं राहतगढ़ में हैं।"

"क्या?" हफीज़ चौंका।

"समझाने का वक्त नहीं है। बस तुम ध्यान रखना। राहतगढ़ में उन्हें ढूढते भी रहना। पता नहीं वो कहाँ मिलें और किस हालात में। जब भी मिल जांए उन्हें कैसे भी वापस लखनऊ भेज देना।"

"जी! आप फ़िक्र न करें। अपुन यहां सब संभाल लेंगे। ले...लेकिन आप कब वापस आ रहे हैं?"

"आऊंगा! जल्दी ही। अब विदा मेरे भाई।" कहकर अहसान ने फोन रख दिया।

राजीव कुछ सोचते हुए बोला, "राहतगढ़ में मेजर खुराना को कॉल कर देना चाहिए। वो वहां अपनी तरफ से अकबर को पकड़ने की कोशिश करेंगे।"

अभी वो फोन मिलाने ही वाला था कि जोरदार धमाका हुआ और पूरी ईमारत बुरी तरह से काँप उठी। इससे पहले कि वे कुछ समझ पाते कि एक और धमाका हुआ। इस बार कमरे के दरवाजे की तरफ आग लग गई थी।

"जिसका डर था वहीं हुआ।" राजीव बोला- "अब ये लोग टैंक से पूरी ईमारत उड़ा देंगे।"

अहसान ने चारों तरफ देखा। फिर पीछे की तरफ की एक खिड़की खोल दी।

अमजद, वीर, सुखविंदर, अजय, शालिनी और मनोज बेचैनी से पत्थरो के पीछे इंतज़ार कर रहे थे।

बार-बार शालिनी के मन में बुरे ख्याल आ जाते। मन ही मन वो राजीव की सलामती के लिए प्रार्थना कर रही थी।

वे लोग राजीव और अहसान को ईमारत में प्रविष्ट होते हुए देख रहे थे। कुछ देर में हथगोले के ब्लास्ट की आवाज़ आई। फिर एक और ब्लास्ट हुआ।

"ये ज़रूर हमारे जांबाजों का काम है।" अमजद बोला।

"भगवान करे ऐसा ही हो।" शालिनी बुदबुदाई।

फिर वहां भगदड़ का माहौल छा गया था। बाहर सो रहे सैनिक जाग गए और अपने-अपने हथियार सँभालते हुए ईमारत की तरफ पहुंच गए। कुछ लोग टैंक को तैयार करने लगे।

वे लोग सारी गतिविधियाँ देख रहे थे।

"लगता है- राजीव और अहसान को मारने के लिए ये पूरी ईमारत उड़ा देंगे।" वीर बोला।

"ऐसा क्यों लगा?" अजय बोला।

"जिस तरह से वो टैंक तैयार कर रहे हैं, ऐसा ही लग रहा है।"

"हमें कुछ करना चाहिए।" सुखविंदर बोला।

"पर हम फायरिंग कैसे करें?" अजय ने कहा- "इतनी दूर से हम राजीव और अहसान को कैसे पहचान पाएंगे? अब तो वहां चारों तरफ सैनिक छाये हुए हैं। गलती से उन्हें हमारी गोलियाँ लग गई तो?"

"कम से कम इस टैंक को तो उड़ा दो यारों।" सुखविंदर बोला।

"इतनी दूर से?" अमजद ने उसे घूरा।

"तुम सब बैठे रहो यहां हाथ पर हाथ रखकर।" सुखविंदर उठ खड़ा हुआ- "मैं वहां जाता हूँ।"

"पागल मत बन।" अमजद गुस्से से बोला- "झुक के बैठो! अब अँधेरा भी नहीं रहा। हमें सही वक्त का इंतज़ार करना होगा।"

तभी टैंक ने ईमारत पर फायर कर दिया। पूरी ईमारत गूँज उठी।

"अब नहीं रुक सकता।" सुखविंदर अमजद को घूरते हुए बोला।

अमजद ने सहमति में सिर हिलाया। "फायर!"

सभी ने अपने हथियारों का मुंह खोल दिया। सैकड़ों गोलियाँ ईमारत की तरफ लपकीं।

इस नए हमले से पाकिस्तानी सैनिक हक्के-बक्के रह गए। किसी को सँभलने का मौका नहीं मिला और कई गोलियों की चपेट में आ गए।

बाकियों ने तुरंत पोजीशन ले ली और पत्थरों की तरफ फायर करने लगे।

तब तक टैंक ने दूसरा फायर किया और ईमारत में आग लग गई। फायर करने के बाद वह पीछे की तरफ घूम गया। फिर उसने पत्थरों की तरफ फायर कर दिया। भारतीय काफिला सतर्क था, हालाँकि टैंक का गोला उन तक नहीं पहुंच सका क्योंकि वो रेंज से बाहर थे।

"ये तो लगता है हमारी तरफ ही आ रहा है।" टैंक को उनकी तरफ बढ़ते हुए देखकर वीर बोला।

"टैंक पर फायर करो।" अजय चीखा।

सभी ने टैंक को निशाना बना लिया। हालाँकि उस पर कुछ फर्क नहीं पड़ा और वो धीरे-धीरे उनके नजदीक आता गया।

"अब ये आया है मेरी रेंज में।" सुखविंदर दांत पीसते हुए बोला और फिर उसने जेब से हथगोला निकाला और पूरी ताकत से फेंक दिया। गोला टैंक से कुछ पहले ही गिरा। ब्लास्ट हुआ पर टैंक को कुछ फर्क नही पड़ा।

टैंक की गन सुखविंदर की तरफ घूमी और फायर हुआ। सुखविंदर एक तरफ कूद गया। गोला उसके पीछे रेत में गिरा और ज़ोरदार धमाके के साथ फट गया। चारों तरफ रेत का गुबार छा गया।

अब वे लोग टैंक की रेंज में थे- ये खतरा समझते ही वीर ने जल्दी से एक हथगोला उस पर फेंक दिया। इस बार टैंक पर धमाके का असर हुआ और वह डगमगा उठा।

सुखविंदर ने अचानक ही टैंक की तरफ दौड़ लगा दी।

"नहीं!" शालिनी चीख उठी। बाकी लोग भी उसका पागलपन देखकर सहम गए।

टैंक की नाल सुखविंदर की तरफ घूमी।

पर तब तक वो टैंक पर चढ गया और उसके ऊपर खुलने वाले दरवाजे पर फायर करने लगा। पांच मिनट बाद वो चिल्लाया-

"आ जाओ दोस्तों! अब ये हमारा है।"

"साला पूरा कमीना है!" अजय हंसते हुए बोला।

सभी लोग सतर्कता के साथ टैंक की तरफ बढ़ गए। अभी-भी ईमारत की तरफ से पाकिस्तानी सैनिक उन पर रह-रह कर फायरिंग कर रहे थे। वे जवाबी फायरिंग करते हुए टैंक में दाखिल हो गए।

सुखविंदर ने टैंक के अंदर बैठे एकमात्र पाकिस्तानी सैनिक की लाश उठाकर बाहर फेंक दी थी।

इधर ईमारत के पीछे राजीव और अहसान जेबा के साथ पाइप के सहारे नीचे उतर आये थे। इस तरफ फ़िलहाल कोई सैनिक नहीं था।

जैसे ही एक सैनिक उस तरफ आया राजीव ने उसका काम-तमाम कर दिया।

अब पूरी ईमारत आग की लपटों में घिर गई थी।

वे तीनों सतर्कता के साथ आगे की तरफ चल दिए। वहां अब चारों तरफ पाकिस्तानी सैनिकों की लाशें दिख रही थी।

फिर उन्हें पत्थरों की तरफ से टैंक वापस आता दिखाई दिया।

"उधर कोई दिखाई नहीं दे रहा।" अहसान चिंतित स्वर में बोला- "कहीं टैंक ने हमारे साथियों को..."

तभी टैंक के ऊपर उन्हें वीर दिखाई दिया। वह खड़ा होकर उनकी तरफ हाथ हिला रहा था।

"ये तो हमारे लोग ही हैं।" राजीव मुस्कराया- "इन्होने तो गजब कर दिया।"

कुछ देर में वे सभी टैंक से बाहर निकल आये।

शालिनी दौडकर राजीव के पास पहुंची।

"तुम ठीक तो हो?"

"मुझे क्या हो सकता है?" राजीव मुस्कराया।

"ये कौन है?" वीर ने ज़ेबा को देखकर पूछा।

"इन लोगों के ज़ालिम मेजर ने इस भोली-भाली लड़की को पकड़ रखा था।" कहकर अहसान ने ईमारत में हुई पूरी घटना संक्षेप में बता दी।

"ओह! ये तो बहुत खुशी की बात है। अब भाभी जी उनकी कैद से छूट जाएँगी।" वीर बोला।

"खुदा करे ऐसा ही हो।" अहसान भावुक होते हुए बोला। उसका जी चाह रहा था कि दौडकर राहतगढ़ पहुंच जाए और सलीमा को ढूढे।

"तो देखा जाए तो एक तरह से हमारा मिशन सफल हो गया है।" अमजद बोला।

"अभी अकबर हुसैन और उसके साथी राहतगढ़ में मौजूद हैं।" राजीव शून्य में देखते हुए बोला।

"अगर किसी तरह मेजर खुराना से बात हो जाती..." अमजद सोचते हुए बोला।

"ईमारत के साथ सबकुछ ख़ाक हो चुका है।" राजीव ने कहा- "अब हमें जल्द-से जल्द राहतगढ़ वापस लौटना चाहिए। यहां रुकना ठीक नहीं है। ये एक महत्वपूर्ण छावनी थी इसलिए यहां दूसरे आर्मी दल अक्सर आते-जाते रहते होंगे।"

"टैंक में ठाट से चलते हैं।" अजय जोश में बोला।

"नहीं! टैंक में घूमना ठीक नहीं होगा। पाकिस्तानी दल अकेले टैंक को रेगिस्तान में घूमते देख ज़रूर शक करेंगे। फिर इसके साथ हम भारत बॉर्डर भी क्रॉस नहीं कर सकते।"

"हां!" शालिनी बोली- "भारतीय सेना हम लोगों पर हमला कर देगी।"

तो इस तरह फैसला हुआ कि वे पहले की ही तरह गाँव वाले बनकर ऊंटों पर ही वापसी का सफर तय करेंगे। ज़ेबा को उन्होंने वापसी में उसके गाँव छोड़ने का वादा किया।

छावनी से उन्होंने कई गोलियों के पैकेट और मशीनगन की मैगजीनें अपने साथ ले ली।

कुछ देर बाद उनका सफर शुरू हो गया था। दोपहर का वक्त था। सूरज अपने चरम पर था। पर पांच ऊँट होने की वजह से अब रेगिस्तान में सफर करना पहले से आसान था।

अमजद जो कि काफी भारी-भरकम था, ऊँट पर अकेला था। बाकी चारों ऊंटों पर दो-दो लोग बैठे गए। शालिनी राजीव के पीछे आ बैठी। राजीव ने पलटकर उसे देखा और मुस्करा दिया। शालिनी भी प्यार का रस घोलते हुए मुस्करा दी। उसकी आँखों में शरारत थी।

जैसे ही राजीव ने ऊँट को खड़ा किया, शालिनी ने उसे अपनी बाँहों में जकड़ लिया।

फिर उनका काफिला आगे बढ़ गया।

शालिनी ने अभी-भी राजीव को भींच रखा था।

"अब तो छोड़ दो।" राजीव धीरे-से बोला।

"नहीं! गिर गई तो?"

राजीव कुछ नहीं बोला। शालिनी ने उसकी पीठ पर सिर रख दिया और आँखें बंद कर लीं। थकान की अति के

कारण उसे तुरंत नींद आ गई।

वीर और अहसान एक ही ऊँट पर थे। वीर अपना ऊँट राजीव के पास लाया फिर मुस्कराकर बोला-

"क्या बात है, सर!"

राजीव ने कुछ जवाब नहीं दिया।

"भाईजान!" अहसान भी बहुत दिनों बाद अपने चिर-परिचित मूड में बोला- "मेरे ख्याल से अब वापस पहुँचकर आप भी हाथ पीले कर ही लो।"

"क्या बकवास है!"

"बकवास नहीं है। डॉक्टर साहिबा पूरी तरह से आपकी पेशेंट बन चुकी हैं।"

"अहसान एकदम सही ख रहा है!" अजय भी दूसरी तरफ से बोला- "अब आप इन्हें हमारी भाभी बना दीजिए।"

सब हँसने लगे।

"तुम लोग सुधरोगे नहीं।" राजीव झेंप भरी मुस्कान के साथ बोला।

सलीमा की आँखों से आंसू बह रहे थे।

मेजर इरफ़ान के सामने वह सिर्फ अपने अंदरूनी कपड़ों में डरी-सिमटी-सी खड़ी थी।

अपने जिस्म को उसकी भूखी नजरों से छिपाने का निरंतर प्रयास कर रही थी वो।

"ओह! मेरी जान!" इरफ़ान ने उसके पेट पर हाथ फिराते हुए कहा- "कमायत ढा रही हो। भरपूर प्यार देंगे हम तुम्हें।" कहकर उसने अपनी शर्ट उतार दी।

अभी वह सलीमा की तरफ बढ़ा ही था कि-

कमरे के बंद दरवाजे को बुरी तरह से खटखटाया जाने लगा।

इरफ़ान चौंककर पलटा।

और बस-

अगले ही पल उसके मुंह से ऐसी चीख निकली जैसे उसे हलाल कर दिया गया हो।

हुआ ये था कि मौके का फायदा उठाते हुए सलीमा ने पूरी ताकत के साथ पीछे से उसकी टांगो के बीच घुटना दे मारा था।

दर्द से दुहरा होकर वह ज़मीन पर लोट रहा था।

सलीमा जल्दी से अपने कपड़े पहनने लगी।

दरवाज़ा अभी-भी लगातार खटखटाया जा रहा था।

कपड़े पहनकर सलीमा ने मेज पर रखा इरफ़ान का रिवाल्वर उठाया और सीधा उसके ऊपर तान दिया।

"न...नहीं! नहीं!" वह अपनी जांघों के दर्द को एकदम से भूलकर हलक फाड़कर चीख उठा।

"हरामजादे!" सलीमा किसी सिहनी की भांति गुर्राई थी- "अब मैं तुझे अपना प्यार दूंगी।"

अगले ही पल रिवाल्वर की छः की छः गोलियाँ सलीमा ने उसके जननांगों पर उतार दी।

मेजर दो पल तड़पा फिर उसने दम तोड़ दिया। सलीमा क्रोध से काँपते हुए उसकी विभत्स लाश को देख रही थी।

"मेजर! मेजर!" दरवाजे से आवाज आई- "क्या हो रहा है- अंदर?"

सलीमा ने खुद को संभाला और चारों तरफ नज़रें दौडाई। इरफ़ान की बैल्ट पर उसे गोलियाँ बंधी दिखाई दी। उसने जल्दी-से रिवाल्वर लोड कर लिया। फिर वह हौले-हौले दरवाजे के पास पहुंच गई।

उसने बगैर कोई ध्वनि निकाले दरवाजे की चिटकनी गिरा दी।

दूसरी तरफ से फिर से भडभडाने पर दरवाजा खुल गया और सलीमा को सामने अकबर हुसैन दिखाई दिया। हालाँकि सलीमा उसे पहचानती नहीं थी।

"हाथ ऊपर कर।" सलीमा ने दांत पीसते हुए आदेश दिया।

अकबर ने सतर्कता के साथ हाथ उठा लिए। नज़रें उसके हाथ में मौजूद रिवाल्वर पर थीं।

"मैं तुम्हें आज़ाद करने ही आया था।" उसने कहा।

"चालाकी नहीं! मेरी अम्मी कहाँ हैं?"

"मैं सच कह रहा हूँ। इसीलिए मैं दरवाज़ा खटखटा रहा था। हमें तुम दोनों को छोड़ने का आदेश है।"

"अब मेरा आदेश सुन- मुझे मेरी अम्मी के पास ले चल।" सलीमा खतरनाक लहजे में बोल रही थी। उसके तेवर देखकर अकबर आगे कुछ नहीं बोल सका और हाथ उठाकर पलट गया।

दरवाज़े के बाहर बंद राहदारी थी। कुछ कदम चलने के बाद वे एक दूसरे कमरे में पहुंचकर बांये मुड़ गए। फिर उसके बाद एक और कमरा आया जहाँ एक कोने में सलीमा की अम्मी मौजूद थी। उसके हाथ बंधे थे, चेहरा खौफज़दा था। सलीमा को आज़ाद देखकर वो खुश तो हुई, पर चौंकी भी।

"सलीमा...तू...तू...ठीक तो है?"

"मैं ठीक हूँ, अम्मी। इनके हाथ खोल।" उसने अकबर को इशारा किया।

अकबर आगे बढकर उसकी अम्मी के हाथ खोलने लगा।

तभी अम्मी के चेहरे पर भय की लहर दौड़ गई।

"नहीं!" वह चीखी।

पर देर हो चुकी थी। अकबर के एक साथी ने पीछे से सलीमा के सिर पर प्रहार किया था। वह लहराकर ज़मीन पर गिर गई।

"बहुत खूब!" अकबर बोला- "बांधकर डाल दो इसे। बहुत खतरनाक औरत है ये। हरामखोर ने मेजर इरफ़ान का क़त्ल कर दिया।"

29

राजीव और उसके साथी ज़ेबा के गाँव पहुंच गए। उसे वहां छोड़कर उन लोगों ने खाना खाया और फिर कुछ देर आराम किया। शाम होते ही वे लोग फिर भारत के बॉर्डर की तरफ चल दिए।

"रात होने के बाद ही हम लोग बॉर्डर तक पहुंच सकेंगे।" राजीव बोला- "अँधेरे में बॉर्डर पार करना थोड़ा आसान रहेगा।"

पांच ऊँट और उन पर सवार ये आठ जांबाज़ अपनी मंजिल की ओर बढ़ रहे थे।

"राजी!" शालिनी धीरे-से राजीव के कान में बुदबुदाई।

राजीव ने पलटकर उसे देखा।

"हां! मैंने प्यार-से तुम्हारा नाम राजी रख दिया है।" वह इठलाकर बोली- "आज से मैं तुम्हें राजी ही पुकारूंगी।"

"ओके!" राजीव मुस्करा दिया।

"मैं कह रही थी कि जब तुम अहसान के साथ उस ईमारत में गए थे, तब मेरी तो जान ही निकली जा रही थी।"

"क्यों? मेरी बहादुरी पर शक है?"

"नहीं! वो बात नहीं है। पर जब तुम इस तरह खतरा मोल लेते हो तो मुझे बहुत डर लगता है।"

"खतरा तो अहसान ने भी लिया था। उसके लिए फ़िक्र नहीं हुई?"

"हाँ! पर उस तरह नहीं, जैसे तुम्हारे लिए।"

"ऐसा क्यों? मुझमे क्या खास है?"

शालिनी के गालों पर शर्म की लाली छा गई। "तुम न... बड़े वो हो। मैं इससे ज्यादा और क्या बोलूं?"

राजीव शांत ही रहा और सामने देखते हुए ऊँट को हांकता रहा।

"तुम बताओ राजी।"

"क्या?"

"मैं तुम्हें कैसी लगती हूँ?"

"तुम एक बहुत बहादुर और काबिल डॉक्टर हो।" राजीव गंभीरता के साथ बोला।

"ओके! और...?"

"और...क्या?"

"बस? और कुछ अच्छा नहीं है मुझमे?"

"और क्या सुनना चाहती हो?"

"हुंह!" शालिनी ने मुंह बनाते हुए कहा- "तुम एकदम बुद्धू हो।"

"अरे!"

इधर वीर अमजद से बोल रहा था- "हम लोग खुशकिस्मत हैं कि सही-सलामत वापस जा रहे हैं।"

"हूँ! मैं तो सिर पर कफ़न बांधकर ही मिशन पर चला था। पर अल्लाह की इनायत है हम लोगों पर।"

"अभी सबसे बड़ा खतरा बॉर्डर पर होगा।"

अमजद ने सहमति में सिर हिलाया।

तीन घंटे लगातार चलने के बाद उन्होंने एक जगह पड़ाव डाला और नाश्ता आदि करने लगे।

उसके बाद वे लोग थोड़ा सुस्ताने लगे। राजीव और शालिनी रेत में टहलते चले गए।

कुछ दूर जाने के बाद राजीव ने शालिनी की तरफ पलटकर कहा- "तुम बहुत सुंदर और प्यारी हो।"

शालिनी खुश होकर मुस्करा दी। "हूँ! अच्छा? ऐसा ही कुछ सुनना चाहती थी मैं।" कहते हुए वह भावुक हो गई। उसने राजीव का हाथ थाम लिया और उसके कंधे पर सिर रख दिया। "राजी! तुमसे मिलने के बाद लगता है- मेरा जीवन बदल गया है। ऐसा क्यों लगता है मुझे?"

राजीव ने क्षितिज में देखते हुए कहा, "तुमसे मिलने से पहले मैंने आज तक किसी लड़की के बारे में सोचा तक नहीं था। पर न जाने तुम्हारे अंदर क्या कशिश है कि मैं...मैं तुम्हारी ओर खिचा चला जा रहा हूँ।"

"ओह राजी!" शालिनी ने उसका दूसरा हाथ भी थाम लिया। "बोलते रहो...प्लीज़!"

"मुझे लगता है मैं सच्चे मन से तुम्हें प्यार करने लगा हूँ।" राजीव ने उसकी आँखों में झांकते हुए कहा था और शालिनी भाव विहोर होते हुए उससे लिपट गई।

"मैं भी तुमसे प्यार करती हूँ। आई लव यू सो मच।"

दोनों आँखे मूंदे उसी तरह लिपटे रहे। उनके लिए वक़्त थम गया था। अजय और अहसान उन्हें दूर से देख रहे थे। दोनों के चेहरे पर मुस्कान थी।

"शालिनी!" राजीव बोला।

"हूँ!" उसने आँखे मूंदे ही जवाब दिया।

"तुमसे दिल की बात कह तो दी है, पर अब डर लगता है कि कहीं तुम मुझसे जुदा हो गई तो..."

शालिनी ने उसके होठों पर अपना हाथ रख दिया और बेहद कोमल स्वर में बोली, "ऐसा कभी नहीं होगा।"

कुछ मिनट बाद वे दोनों वापस लौट आये।

"अब यहां से बॉर्डर सिर्फ आठ-दस मील और दूर होगा।" अहसान ने कहा।

"हां! यहां से हम सभी को बेहद सतर्कता के साथ सफर करना है। अपने-अपने हथियार तैयार रखना।" राजीव ने कहा, फिर उनका काफिला चल दिया।

रात की कालिमा चारों तरफ छाई हुई थी। आकाश में असंख्य तारे टिमटिमा रहे थे।

कुछ ही दूर जाने के बाद उन्हें कुछ आवाजे सुनाई देने लगीं।

"कुछ सुनाई दिया?" मनोज ने आवाजों पर ध्यान देते हुए पूछा।

सब ध्यान देने लगे।

"कहीं पाकिस्तानी आर्मी आसपास ही तो नहीं है?" वीर ने कहा।

वे लोग फिर चुपचाप चलते रहे। कुछ देर और चलने के बाद-

"ये तो गोलाबारी की आवाज लगती है।" सुखविंदर बोला।

ध्यान से सुनने पर उन्होंने पाया कि वो सही कह रहा था।

लगातार फायरिंग और धमाकों की आवाजें आ रही थीं।

"लगता है युद्ध छिड़ गया है।" राजीव ने कहा।

"अब हम क्या करें?" शालिनी विचलित हो गई।

"हमें अपनी मंजिल की तरफ बढते रहना होगा।" राजीव ने दृढ-निश्चय के साथ कहा।

"ठीक कह रहे हो।" अमजद बोला- "जंग में इस तरफ रहना और भी ज्यादा खतरनाक होगा। पाकिस्तानी फ़ौज किसी भी वक्त यहां आ सकती है।"

"लगता है- जंग राहतगढ़ की सीमा पर हो रही है। हम धारमेर की तरफ से घुसने की कोशिश करते हैं।" राजीव बोल रहा था- "उस तरफ पाकिस्तानी पहले ही मात खा चुके हैं, इसलिए वहां से हमला नहीं करेंगे।"

सभी सहमत हुए, पर सुखविंदर बोला- "अगर जंग चल रही है, सर- तो हमें भी इसमें यहीं शामिल हो जाना चाहिए। छक्के छुड़ा देने चाहिए इनके।"

"तू तो हर वक्त बकवास करता रहता है।" अजय गुस्से से बोला।

"मैं की बकवास करदा हूँ?" सुखविंदर भी भड़क गया।

"सुनो!" राजीव कड़क स्वर में बोला- "इस वक्त हमें इस तरह का कोई कदम नहीं उठाना है। हम लोग मिलकर पूरी सेना का मुकाबला नही कर सकते। जो करना है, अपनी धरती पर पहुंचकर अपनी सेना के साथ करेंगे।" कहकर उसने सुखविंदर का कंधा थपथपाया। "तुम्हें पूरा मौका मिलेगा इनके छक्के छुड़ाने का। इसलिए चलो अब हम जल्द से जल्द वापस अपने वतन की ज़मीन पर पहुँचने की कोशिश करते हैं।"

सुखविंदर को कुछ सब्र हुआ।

फिर उन लोगों ने अपने ऊंटों को तेजी से धारमेर बॉर्डर की तरफ दौड़ा दिया।

धारमेर का जंगल उनके सामने दिखाई दे रहा था।

"कुछ ही देर में हम लोग जंगल से होते हुए भारत में होंगे।" अहसान बोला।

वे लोग आगे बढे ही थे कि पीछे से शोर-शराबे की आवाज़ आने लगी।

वे लोग पलटे और पीछे का नज़ारा देखकर उनके रौंगटे खड़े हो गए।

वक्त जैसे थम-सा गया। सभी अचरज के साथ साक्षात मौत को खुद की तरफ बढते हुए देख रहे थे।

सैकड़ों पाकिस्तानी सैनिक उसी तरफ दौड़े चले आ रहे थे। कुछ टैंक भी दिखाई दे रहे थे।

निशचित्तही राजीव का अंदाज़ा गलत निकला था। पाकिस्तानी भारत पर हर तरफ से हमला कर रहे थे।

"भागो!" राजीव चीखा।

सभी ने अपने ऊँट जंगल की तरफ दौड़ा दिए।

ठीक तभी- पाकिस्तानियों ने फायरिंग शुरू कर दी।

उन लोगों ने झुककककर खद को तो बचा लिया पर ऊँट के विशालकाय शरीर का क्या करते? तीन ऊँट लड़खड़ाते हुए गिरे और उन पर सवार राजीव, शालिनी, अमजद और अजय भी। उन्होंने जल्दी-से खुद को संभाला और जंगल की तरफ दौड़ लगा दी। बाकी दोनों ऊंटों पर सवार अहसान, वीर, सुखविंदर और मनोज जंगल में पहुंच गए थे और उन्होंने पेड़ों की आड़ में होकर अपने साथियों को फायरिंग से कवर देना शुरू कर दिया। कई पाकिस्तानी उनकी गोलियों का शिकार हो गए। अब सभी लोग जंगल में पहुंच चुके थे। उन्होंने भी फायरिंग शुरू कर दी। पर पाकिस्तानी बहुतायत में थे। उनकी तरफ से सैकड़ों गोलियाँ बरस रही थीं। वे लोग पेड़ों के पीछे छिपे थे। गोलियाँ सांय-सांय करती हुई उनके अगल-बगल से निकल रही थीं।

अहसान ने फायर किया फिर मुस्कराकर राजीव की तरफ देखा।

"भाईजान! आज नहीं बचेंगे।"

राजीव ने मशीनगन से फायरिंग शुरू कर दी और कहा- "बकवास मत कर। सुनो- तुम लोग जंगल में मौका देखकर पीछे हटते रहो। मैं तुम लोगों को कवर दूँगा।"

अहसान और शालिनी को छोड़कर सभी सावधानी से पीछे बढ़ने लगे।

राजीव शालिनी की तरफ पलटा। "तुम भी।"

"म...मै तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जाने वाली।"

पाकिस्तानी आर्मी पास आती जा रही थी।

तभी उनकी तरफ से टैंक ने एक गोला फायर किया। उन लोगों से कुछ ही दूर एक पेड़ उड़ गया।

अहसान ने भी जेब से हथगोले निकाले और एक के बाद एक फेंकता चला गया।

"पागल मत बनो शालिनी। मेरी बात मानो..." राजीव फायरिंग करते हुए चीखा।

"नहीं राजी! मौत के मुंह में मै तुम्हें अकेला नहीं छोड़ सकती।"

"भाभीजान!" अहसान चीखा- "आपके राजी के साथ उसका भाई मौजूद है। आप निकलो, हम इनकी चटनी

बनाकर आते हैं।"

पर शालिनी वहां से नहीं हिली। उसने भी उनका साथ देते हुए फायरिंग शुरू कर दी। बाकी लोग भी पीछे बढते हुए पाकिस्तानी आर्मी पर फायरिंग कर रहे थे।

राजीव, अहसान और शालिनी ने भी धीरे-धीरे पीछे हटना शुरू कर दिया।

पाकिस्तानी आर्मी के सैनिक मर तो रहे थे, पर अभी-भी सैकड़ों सावधानी से रेत में लेटकर फायरिंग करते हुए जंगल की तरफ बढ़ रहे थे।

उनके टैंक बेधड़क आगे बढते चले आ रहे थे।

फिर टैंक से लगातार तीन-चार फायर हुए।

एक गोला ठीक उस पेड़ के पास फटा जहाँ राजीव और शालिनी मौजूद थे। दोनों धमाके की चपेट में आ गए। अहसान भी ज्यादा दूर नहीं था, वह भी एक तरफ उछलकर गिरा।

चारों तरफ धुँआ ही धुंआ छा गया था।

"आप लोग ठीक तो हो?" बुरी तरह खांसते हुए अहसान ने पूछा। खुद उसकी बांह में बम के छर्रे घुस गए थे और उसके पूरे हाथ में भयंकर जलन हो रही थी।

राजीव धीरे-से उठा। उसका सिर चकरा रहा था और शरीर धमाके से बुरी तरह झुलस गया था। उसने चारों तरफ नज़र घुमाकर शालिनी को ढूढा।

कुछ फिट दूर उसे शालिनी बेसुध ज़मीन पर लेटी दिखाई दी।

राजीव रेंगते हुए उसके पास पंहुचा।

इधर अहसान ने मशीनगन से टैंक पर फायरिंग शुरू कर दी क्योंकि वह अब जंगल में प्रविष्ट हो रहा था।

"श...शालिनी?" राजीव ने शालिनी को हिलाया पर उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई। राजीव बेचैन हो उठा। उसने उसके गाल थपथपाए।

"शालिनी...शालिनी!"

शालिनी ने धीरे-से आँखे खोलीं।

"तुम...ठीक तो हो?"

शालिनी धीरे-से मुस्कराई।

"रा...जी...?" वह बुदबुदा रही थी।

"मैं...यहीं हूँ। तुम्हारे पास। तुम्हें कुछ नहीं होगा।" राजीव की आँखों से आँसू छलक आये।

"मैं...हमेशा तुमसे...प्यार..."

"नहीं!" राजीव चीखने लगा- "शालिनी नहीं! तुम हमेशा मेरे साथ रहोगी।"

"सा...सॉरी! राजी!...आई लव यू...म...मैं तुम्हारा...हर जन्म में...इंतज़ार..." फिर अचानक ही उसका शरीर शिथिल पड़ गया। आँखें खुली रह गई।

"नहीं!" राजीव हलक फाड़कर चीख उठा। पूरा जंगल उसकी आवाज़ से गूँज उठा था।

यहां तक की पाकिस्तानी आर्मी ने भी उसकी आवाज़ सुनी।

राजीव शालिनी की छाती पर सिर रखकर फूट-फूटकर रो रहा था।

इधर अहसान का भी हाल बुरा था। एक तरफ वो फायरिंग कर रहा था, दूसरी तरफ उसका मन रोने को कर रहा था।

बाकी लोग भी स्तब्ध से वो नज़ारा देख रहे थे।

शालिनी की मौत से सबका खून खौल उठा।

इधर राजीव क्रोध से कांपते हुए उठा। उसने शालिनी को लेटाया और अपनी मशीनगन उठाकर कंधे पर टांग ली। फिर वह गोलियाँ बरसाते हुए टैंक की तरफ दौड़ने लगा। उसके निशाने पर टैंक का केबिन था, जिसके अंदर उसका चालक बैठा था। देखते ही देखते टैंक के केबिन का शीशा गोलियों से चकनाचूर हो गया और अंदर बैठा चालक मारा गया।

बाकी लोग भी फायरिंग करते हुए आगे आ गए।

अहसान ने दूसरे टैंक पर हथगोला फेंककर उसका भी काम-तमाम कर दिया।

पर पीछे से पाकिस्तानी सैनिक लगातार फायरिंग कर रहे थे और राजीव उनकी गोलियों से नहीं बच सका।

उसका शरीर गोलियों से छलनी होता चला गया।

"नहीं!" अहसान की आँखें अविश्वास से फ़ैल गई। उसने कूदकर राजीव को संभाला और गिरने से पहले ही थाम लिया। वह उसे पेड़ की ओट में ले आया। बाकी लोग उन्हें कवर करते हुए फायरिंग करने लगे।

"भाईजान!" अहसान रो पड़ा। उसने राजीव का सिर अपनी गोद में रख लिया था। "ये क्या किया आपने?"

"अहसान!...मेरे भाई..." राजीव बुदबुदाया।

"कितने साल बाद तो हम मिले थे। अभी तो आप सलीमा से भी नहीं मिल पाए थे। हम लोग साथ बैठकर पुरानी बातें भी नहीं याद कर पाए। ये...ये नहीं हो सकता। मैं इन हरामजादों को नहीं छोड़ूंगा।" कहते हुए उसने दांत पीसते हुए उठाना चाहा पर राजीव ने उसका हाथ पकड़ लिया।

"अहसान!...तू भी मेरी तरह पागलपन मत कर...स...सलीमा...तेरा इंतज़ार कर रही है। तू आज यहां से ठीक-ठाक...वापस राहतगढ़ पहुंचेगा...तेरे ऊपर बहुत-सी जिम्मेदारियां हैं...वादा कर...वादा कर..."

"नहीं! नहीं! राजीव भाई। तुम मुझे छोडकर मत जाओ।"

"वादा...वादा..."

अहसान को बचपन के वो लम्हे याद आ गए जब राजीव ने लखनऊ छोड़ते वक्त उससे वादा लिया था। आज एक बार फिर वो उसके सब्र का इम्तेहान ले रहा था।

अहसान ने उसका हाथ थामा और रोते हुए 'हाँ' में सिर हिलाया। अगले ही पल राजीव की गर्दन एक तरफ लुढक गई।

अहसान का चेहरा आंसुओं से भीग गया था। वह अब क्रोध से बुरी तरह काँप रहा था।

उसके बाद अहसान और बाकि लोगों ने भीषण तरह से पाकिस्तानियों पर फायरिंग करी। टैंकों के खत्म हो जाने से वे थोड़ा कमजोर ज़रूर महसूस कर रहे थे, पर उनकी तादाद बेहद ज्यादा थी।

"हमें इन्हें लेकर अब अंदर बढ़ना चाहिए।" अमजद ने कहा।

फिर उन्होंने शालिनी और राजीव की लाशों को उठाया और तेजी-से जंगल में दौड़ते चले गए।

31

अहसान, अमजद, वीर, अजय, सुखविंदर और मनोज धारमेर की भारतीय चौकी पर पहुंच गए थे। उस वक्त वहां से भारतीय सेना का दल पाकिस्तानियों का मुकाबला करने निकल ही रहा था।

उस रात भारतीय सेना ने पाकिस्तान द्वारा राहतगढ़ और धारमेर की ओर से हुए दोनों हमलों को विफल कर दिया। पाकिस्तानी सेना हार का सामना करते हुए वापस भाग ली थी।

मिशन के सभी नायक वापस राहतगढ़ पोस्ट पर पहुंच गए थे। राजीव और शालिनी की मौत ने सभी को झकझोर दिया था। कोई एक शब्द भी नहीं बोल रहा था। जंग के बाद वहां के कामों में वे लोग व्यस्त हो गए। कई भारतीय जवान मारे गए थे, कई घायल थे। हफीज़ अहसान से मिलने पहुंचा। उसने बताया कि सलीमा और उसकी अम्मी अभी तक नहीं मिले। अहसान फिर से परेशान हो उठा।

शाम को वे लोग मेजर खुराना के साथ बैठे और उन्हें पूरे मिशन का ब्यौरा दिया। राजीव और शालिनी की प्रेम कथा और मौत के बारे में सुनकर उनकी आँखें डबडबा गई।

"कितनी प्यारी बच्ची थी वो।" भाव विहोर होते हुए वे बोले- "और राजीव...देश को हमेशा उस पर नाज़ रहेगा। इन दोनों को खोना हमारे लिए बहुत बदकिस्मती की बात है। मैंने शालिनी के पिता को इस घटना के बारे में इत्तला कर दी है। वे रात तक पहुंच जायेंगे।"

अहसान अचानक उठ खड़ा हुआ। उसकी आँखों में आंसू थे। चेहरा क्रोध से लाल हो रहा था।

"सर! इस सबकी वजह सिर्फ अकबर हुसैन है। और वो अभी-भी राहतगढ़ में कहीं छिपा बैठा है।"

"लगता है- अभी भी तुम्हारी बीवी उनकी कैद में है। तुम लोग अभी से उन्हें ढूढना शुरू कर दो। उस नीच जासूस का पकड़ा जाना बेहद ज़रूरी है।"

उसके बाद अहसान, अजय, वीर, मनोज, अमजद व अन्य पांच जवानों ने अकबर की खोज शुरू कर दी।

32

वह एक पुरानी ईमारत थी। राहतगढ़ के बाहरी सुनसान हिस्से में स्थित।

ईमारत तीन मंजिला थी। चारो तरफ बड़ी-बड़ी घास उगी हुई थी और एक झलक में ही पता चल रहा था कि वहाँ वर्षो से किसी ने कदम नहीं रखा।

सेना के जवान पूछताछ करते हुए उस तक पहुंचे थे। वहां पास के एक मंदिर के पुजारी से उन्हें पता चला था कि ये ईमारत पचास सालों से बंद पड़ी है। पर कुछ दिनों से उसमे से अजीब-अजीब सी आवाजें सुनाई देती हैं।

शक करने के लिए इतनी जानकारी पर्याप्त थी। वे ईमारत के विशालकाय गेट पर पहुंचे। वहां पुराना जंग लगा ताला पड़ा था।

जवानों के लिए उसे पार करने में कोई दिक्कत नहीं आई। वे लोग दबे पाँव चारों तरफ फ़ैल गए और फिर अलग-अलग दिशा से ईमारत में प्रविष्ट होने लगे।

ईमारत की कई खिड़कियाँ टूटी हुई थीं। वे लोग उन्ही से अंदर पहुंच गए।

अंदर धुप्प अँधेरा था। चमगादड़ों की आवाजें आ रही थीं। बड़े-बड़े मकड़ी के जाले लगे हुए थे।

नीचे उन्हें कोई नहीं दिखाई दिया। वे लोग सीढियों से ऊपर चढ़ने लगे।

ठीक तभी ऊपर से फायरिंग होने लगी। वे लोग सतर्क थे, तुरंत पोजीशन ले ली।

ऊपर से दो गन लटकती दिखाई दे रही थीं और उनसे बार-बार गोलियाँ चलाई जा रही थीं। जवानों ने भी नीचे से फायरिंग शुरू कर दी, फिर अंत में उनकी गोली शायद ऊपर से हमला कर रही गनों पर लगी और वो नीचे आ गिरी।

उसके बाद सन्नाटा छा गया।

कुछ पल इंतज़ार के बाद वे लोग बेहद चुपचाप किसी बिल्ली की भांति सीढियां चढ़ने लगे।

ऊपर पहुँचते ही उन पर चार-पांच लोगों ने हमला कर दिया। उस अँधेरे से हॉल में हाथापाई शुरू हो गई। हमलावर काफी खतरनाक मालूम पड़ रहे थे। अहसान ने टॉर्च की रौशनी से सभी के चेहरे देखे, उनमे से कोई भी अकबर नहीं था। उनको वही लड़ता छोड़ अहसान दूसरे कमरों में तलाशी लेने लगा, पर वहां कोई भी नज़र नहीं आया।

फिर अहसान सीढियों से और ऊपर चढ़ता चला गया। दूसरी मंजिल भी खाली थी, पर वहां किसी के रहने के निशान अवश्य मौजूद थे।

अंततः अहसान छत पर पहुंच गया।

वहां का नज़ारा देखकर वह स्तब्ध रह गया।

सामने सलीमा थी और उसकी अम्मी भी।

दोनों के मुंह कपड़े से बंधे थे, हाथ रस्सियों से और उनके पीछे अकबर हुसैन खड़ा था। उसके हाथ में रिवाल्वर था जिसका मुंह सलीमा की कनपटी पर था।

अहसान को देखकर सलीमा की आँखें खुशी से चमक उठीं। वह बुरी तरह से मचलने लगी। पर अकबर की पकड़ से निकल न सकी।

उन दोनों को सही-सलामत देखकर अहसान को काफी तसल्ली हुई थी।

"अहसान! अपनी गन नीचे फेंक दो।" अकबर बोला, "वरना दोनों को उड़ा दूँगा।"

"तेरा खेल खत्म हो गया है, अकबर।" अहसान भभकते हुए बोला।

"हा-हा-हा!" अकबर हंसा, "तुम आर्मी वाले बहुत जोशीले होते हो। दिमाग से काम ही नहीं लेते। पर मैं एक जासूस हूँ। मुझे मरा समझकर तुम मुझे रस्ते में फेंक आये थे। तुम्हारी उसी भूल की वजह से आज मैं जिंदा हूँ और तुम्हारे पूरे परिवार की जिंदगी मेरी मुट्ठी में है। मुझे वायरलेस पर ही मालूम पड़ गया था कि वो मेजर अकरम नहीं है। बाद में जब पता चला कि कुछ भारतीय सैनिकों ने हमारे हैडक्वार्टर पर हमला किया है, तब समझ में आ गया कि वो तुम्ही लोग हो सकते हो। हूँ...तो पाकिस्तान जाकर भी तुम जिंदा वापस आ गए। खुशकिस्मत हो... और तुम्हारा दोस्त राजीव कहाँ है?"

राजीव का नाम सुनते ही अहसान क्रोध से पागल हो गया। वह दहाड़ा- "तेरी ही नीच चाल की वजह से मैंने अपने बचपन के दोस्त, अपने भाई राजीव को खोया है। मै तेरे टुकड़े-टुकड़े करके पाकिस्तान भेज दूँगा।"

"तुम फिर जोश में होश खो रहे हो। जो गया वो तो गया, अब वो वापस नहीं आएगा। फिलहाल अपनी बीवी की फ़िक्र करो, इसकी अम्मी को देखो। इन्हें भी खोना चाहते हो क्या? अक्ल से काम लो और मुझे सही-सलामत यहां से निकलने दो।"

"अब तो तेरी लाश ही यहां से निकलेगी।"

"ठीक है! पहले मै इस बुड्ढी को उड़ाता हूँ।" कहकर उसने अम्मी के सिर पर गन टिका दी।

"नहीं!" अहसान चीखा।

"अब होश आया?"

अहसान ने तुरंत अपनी गन जमीन पर फेंक दी।

"ये हुई न बात। चलो अब सीढियों की तरफ बढ़ो। अपने साथियों को भी यहीं आदेश दो। हम लोग पीछे-पीछे आ रहे हैं।"

अहसान सतर्कता के साथ घूमा और सीढियों की तरफ बढ़ने लगा।

अकबर के चेहरे पर कमीनेपन से भरी मुस्कान आ गई। उसने रिवाल्वर अहसान की पीठ पर ताना और फायर कर दिया।

पर अहसान इसके लिए पूरी तरह तैयार था। वह तुरंत फर्श पर लेट गया।

इससे पहले कि अकबर दूसरा फायर करता, सलीमा ने उसे धकेल दिया।

अहसान ने तुरंत अकबर की तरफ छलांग लगा दी। दोनों गुत्थम-गुत्था होते हुए फर्श पर लुढकते चले गए।

फिर दोनों के बीच हाथापाई शुरू हो गई। दोनों की ताकत बराबरी की थी। दोनों के मुक्के और लातें चल रही थीं। दोनों लड़ते-लड़ते निढाल होते चले गए।

इतनी देर में सलीमा और उसकी अम्मी ने एक दूसरे की मदद से अपने हाथ और मुंह खोल लिए।

अचानक अहसान ने अकबर के चेहरे पर एक जोरदार किक मारी और वह निढाल होकर एक तरफ जा गिरा। अहसान धीरे-से उठा। उसके होठों से खून निकल रहा था।

सलीमा दौडकर अहसान के पास पहुंची और उससे लिपट गई।

"हमें यकीन था...अहसान साहेब कि आप ज़रूर आयेंगे।" सुबकते हुए उसने कहा।

अहसान कुछ बोल नहीं सका। उसने उसके सिर पर हाथ फेरा। कितने दिनों से वह सलीमा की फ़िक्र में हर पल तडपता रहा था। आखिरकार वो उसकी बाहों में थी।

"तुम्हारे बिना हर पल मरता रहा हूँ मैं।"

"अब हम आपको कहीं नहीं जाने देंगे। अपने पल्लू से बांधकर रखेंगे।"

अहसान हंस दिया।

"अहसान!" अचानक अम्मी चीखी- "सलीमा!"

दोनों ने चौंककर उनकी तरफ देखा। वो उनके पीछे इशारा कर रही थीं। उनकी आँखों में खौफ था।

अहसान और सलीमा ने पलटकर देखा- अकबर फर्श पर लेटा हंस रहा था। उसके हाथ में रिवाल्वर था जिसे उसने उन पर तान रखा था।

अगले ही पल उसने ट्रिगर दबा दिया।

"नहीं!" अम्मी की चीत्कार गूँज गई।

इधर फायर होते ही सलीमा अहसान के आगे आ गई। गोली उसकी छाती में प्रविष्ट कर गई।

अहसान ने हैरत के सागर में डूबते हुए उसे संभाला।

"खु...खुदा हाफिज़ मेरे सरताज..." सलीमा ने आखिरी बार अहसान की आँखों में देखते हुए कहा।

"नहीं!!!!!!!!!" अहसान पागलों की तरह चिल्लाया- "हरामजादे!" वह अकबर पर झपटा।

अकबर ने ट्रिगर दबाया। एक और गोली चली और अहसान के पेट में घुस गई। पर जुनून में होश खोये हुए अहसान को रोकने के लिए वह काफी नहीं थी।

अहसान ने उसके हाथ पर किक मारी। रिवाल्वर एक तरफ जा गिरा। फिर उसने अकबर को गिरेबान पकडकर खड़ा किया।

अकबर ने उसका चेहरा देखा तो सहम गया।

अहसान की आँखें सुर्ख थीं। चेहरा क्रोध से उफन रहा था। ऐसा लग रहा था वो अकबर को चीरकर फेंक देगा।

"तूने मेरा सबकुछ खत्म कर दिया, कमीने। आखिर मेरी सलीमा ने तेरा क्या बिगाड़ा था? तू मर्द नहीं हो सकता। तू हिजड़ा है। बल्कि तुझे हिजड़ा कहना भी हिजड़ों के लिए गाली है। अगर तू मर्द होता तो सीधे मुझे ललकारता।" कहते हुए उसने अकबर के बाल पकड़े और खींचते हुए छत की रेलिंग के पास ले आया और उसका सिर रेलिंग पर दे मारा। अकबर के सिर से खून निकलने लगा।

अहसान उसको देखता रहा। इधर अम्मी सलीमा के निर्जीव शरीर पर बिलख-बिलखकर रो रही थी।

अहसान के मन में अपने अम्मी-अब्बू के चेहरे घूमने लगे। फिर सलीमा के साथ गुजारा सारा वक्त याद आता चला गया। फिर बचपन की यादें आईं। राजीव के साथ बिताया वक्त। फिर राजीव और शालिनी की मौत और अब सलीमा... उसने सलीमा की तरफ देखा। वह शांत थी, वह भी उसे छोड़कर जा चुकी थी।

"मैं आ रहा हूँ, सलीमा।" वह मन ही मन बुदबुदाया, फिर उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई।

अकबर को लगा वो पागल हो गया है।

"चल कमीने! उठ!" उसने अकबर को गिरेबान पकडकर उठाया और फिर उसे खींचते हुए रेलिंग की तरफ दौड़ पड़ा।

उसका उद्देश्य समझते ही अकबर के रौंगटे खड़े हो गए।

"न...नहीं..." वह चीखा।

पर अहसान कहाँ रुकने वाला था। उसे साथ लिए वह रेलिंग से नीचे कूद गया।

अम्मी उसे स्तब्ध-सी देखती रह गई।

अहसान और अकबर दोनों के जिस्म सख्त ज़मीन से टकराये। अहसान बिलकुल भी नहीं तड़पा और उसकी मौत तुरंत ही हो गई। पर अकबर मरा नहीं था। उसके दोनों पैर टूट गए थे। वह दर्द से छटपटाते हुए कराह रहा था।

इधर भारतीय जवान छत पर पहुंचे। वहां का नज़ारा देखकर वे आश्चर्यचकित रह गए।

सलीमा की लाश देखकर अजय, वीर, मनोज और अमजद ग़मगीन हो गए। फिर उनकी नज़र ईमारत के नीचे गई और उन्होंने अहसान को देखा। उन्हें यकीन नहीं आ रहा था कि उन्होंने राजीव और शालिनी के बाद अपने प्रिय दोस्त अहसान को भी खो दिया।

उनकी नज़र छटपटाते हुए अकबर पर गई। चारों का खून खौल उठा।

अकबर ने उन्हें देखते हुए हाथ उठाया और चीखा- "म...मुझे गिरफ्तार कर लो...मैं सरेंडर कर रहा हूँ..."

चारों ने निशाना लिया और उस पर फायर करने लगे।

अकबर ज़मीन पर गिर गया।

वे तब तक फायर करते रहे जब तक उसका शरीर पूरी तरह से शांत नहीं पड़ गया।

इसी जन्म में

"र...राजी!" शोभा ने राजन को आँखें खोलते हुए देखा तो मुस्करा दी। फिर उसकी आँखों से आंसू बहने लगे।

"श...शालिनी!" राजन ने कमजोर स्वर में कहा- "तु...तुम आ गई..."

"शालिनी?" शोभा चौंकी- "राजी, ये मैं हूँ- तुम्हारी शब्बो।"

डॉक्टर शर्मा ने शोभा को शांत रहने का इशारा किया- "अभी कोमा से बाहर आया है। थोड़ा डिसओरियंटेड है। धीरे-धीरे इसे सब समझ में आएगा।"

दूसरी तरफ इक़बाल भी कोमा से बाहर आ गया था और सलमा का हाथ चूमकर उसे बार-बार सलीमा कह रहा था।

"लगता है इक्को, तुम मेरा नाम भूल गए।" सलमा मुस्कराकर बोली।

इक़बाल के चेहरे पर खुशी से भरी मुस्कान थी। वह सलमा को बेहद प्यार भरी नजरों से देख रहा था।

एक रोड एक्सीडेंट में राजन-इक़बाल की कार ट्रक से भिड़ गई थी। दोनों के सर पर गहरी चोट लगी थी और वे कोमा में चले गए थे। शोभा और सलमा पूरे वक्त हॉस्पिटल में उनके पास मौजूद थीं। दो दिन बाद उन्हें होश आया था।

जब राजन-इक़बाल की हालात कुछ सुधरी, तब उन्होंने अपने-अपने कोमा के दौरान दिमाग में चल रही घटनाओं के बारे में बताया। राजन ने जब कुछ बातें याद करीं तो इक़बाल चौंकते हुए बोला-

"अरे! ये तो मैंने भी सपने में देखा था।"

पूरी कहानी सुनने के बाद शोभा-सलमा ने एक-दूसरे को देखा। राजन-इक़बाल हैरान थे कि उन्होंने एकदम एक जैसी घटनाएं कोमा में कैसे देखीं।

"कहानी तो दिल को छू लेने वाली है।" शोभा बोली।

"हां! पर ऐसा कैसे हो सकता है कि दोनों ने एक ही कहानी सपने में देखी।" सलमा ने कहा।

"मुझे यकीन है, वो हमारे पिछले जन्म की सच्ची दास्तान है।" राजन ने इक़बाल को देखते हुए कहा।

"अपुन को भी ऐसा ही लगता है।" इकबाल बोला, "मुझे पहले ही यकीन था- पिछले जन्म में मैं आर्मी में ही रहा हूँगा, तभी मैं इतना बहादुर हूँ।"

"मुझे यकीन नहीं...तुम हर जन्म में सिर्फ पेटूराम हो सकते हो।" कहकर सलमा ने इक़बाल के सिर पर चपत लगा दी।

"अच्छा! और तुम हर जन्म में बिगड़ैल बिल्ली रही होगी।"

"क्या कहा?" सलमा ने अपनी कमर पर हाथ रखा।

"कुछ नहीं माता जी!" इक़बाल ने हाथ जोड़े।

"इक्को, तुम्हारा एक्सीडेंट नहीं हुआ होता तो मैं तुम्हारा सिर तोड़ देती।" सलमा गुर्राई।

"अब तुम लोग लड़ो मत।" शोभा बोली।

"हमें राजीव, शालिनी, सलीमा और अहसान के बारे में पता करना चाहिए। फिर इस बात की पुष्टि हो जायेगी।" राजन बोला।

"गुड आइडिया!" शोभा ने चुटकी बजाई, फिर लैपटॉप उठाकर गूगल पर उनके नाम और 'इंडो-पाक वार' इत्यादि कीवर्ड डालकर सर्च करने लगी।

कुछ देर में वो बडबडाई- "राजीव कुमार, कैप्टन आर्मी इंटेलिजेंस, अवार्ड फॉर ब्रेवरी..."

बाकी तीनों चौंके।

उसके बाद उन्हें अहसान अख्तर नाम से भी उसी तरह की इन्फोर्मेशन मिली।

चारों एक-दूसरे को देखते रह गए।

"मुझे तो अभी तक पूरी घटना फिल्म की तरह याद हैं।" इकबाल बोला- "मतलब सब सच था?"

सभी हैरान थे।

"राजीव भाई...आई मीन राजन!" इक़बाल बोला- "पिछले जन्म में हम एक दूसरे से जो बिछड़े, भगवान ने इस जन्म में हमें हमेशा के लिए साथ कर दिया।"

"हूँ!" राजन मुस्कराया- "और झख सुना-सुनाकर अब तुम पिछले जन्म की भरपाई कर रहे हो।"

"ये तो है एक कला, जिससे होता है सबका भला |

भाई न सुने यहाँ, तो भाभी से काम चला ||" इक़बाल ने आँख मारी, फिर बोला- "मैं तो इस बार लखनऊ में चौक और शिया कॉलेज जाकर पूछताछ करूगा।"

"मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी।" सलीमा बोली- "हम उसी कॉलेज में मिले थे न?"

"हाँ!" इक़बाल उसे देखकर मुस्कराया। "सल्लो जी! पिछले जन्म में तुम और भी खूबसूरत थीं।"

"चलो हटो..." सलमा लजा गई, फिर बोली, "तो हम शादीशुदा थे?"

"हां!" कहकर इक़बाल ने उदास-सा चेहरा बना लिया।

"क्या हुआ? शादी के नाम पर नानी क्यों याद आ गई?"

"शादी तो हुई पर बच्चे नहीं हो पाए थे।" इक़बाल बेहद उदास स्वर में बोला।

"कोई बात नहीं।" शोभा बोली- "इस जन्म में हो जायेंगे।"

सलमा शर्मा गई।

शोभा राजन के पास पहुंची और उसका हाथ थाम लिया।

"राजी!"

"हूँ!" राजन उसकी आँखों में देख रहा था।

"क्या इसीलिए तुम प्यार से कतराते हो? क्योंकि पिछले जन्म में अपने प्यार का इज़हार करने के बाद तुमने मुझे खो दिया था?"

"प...पता नहीं! शायद...शायद। मुझे अभी-भी याद आ रहा है- तुम्हें जब आखिरी बार देखा था...यहीं सोच रहा था कि काश तुमसे प्यार न किया होता..."

शोभा उसे देखती रह गई। वह कुछ बोली नहीं। उसने धीरे-से राजन के सीने पर सिर रख दिया।

"फ़िक्र मत करो, राजी! इस जन्म में हमें कोई नहीं जुदा कर पायेगा।"

राजन प्यार से शोभा के बालों में हाथ फेरने लगा।

इधर सलमा और इक़बाल भी भावनाओं में बहते हुए एक दूसरे से लिपट गए थे।

"अब कभी मुझे छोड़कर मत जाना, इक्को।"

"हरगिज़ नहीं!" इक़बाल ने धीरे से उसके कान में कहा, "मैं तुम्हे फेविकोल से चिपका कर रखूँगा।"

सलमा खिलखिलाकर हंस दी।

समाप्त